देस हरियाणा

ISSN 2454-6879

मूल्य - 50 /-

अंक: 29-30, मई-अगस्त, 2020

हरियाणा सृजन यात्रा

ISSN 2454-6879

देसहरियाणा

साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का मंच

सम्पादक

सुभाष चंद्र

सह-संपादक

अरुण कैहरबा

सम्पादन सहयोग

जयपाल, कृष्ण कुमार, अविनाश सैनी, राजकुमार जांगड़ा

सलाहकार

प्रो. टी.आर. कुंडू, सुरेन्द्रपाल सिंह, परमानंद शास्त्री, अशोक भाटिया, सत्यवीर नाहड़िया, जगदीश आर्य

प्रबंधन

विपुला, विकास साल्याण, योगेश शर्मा

प्रसार

सुनील, इकबाल, राजेश कुमार, ब्रजपाल

पता :

देस हरियाणा, 912, सैक्टर-13, कुरुक्षेत्र, (हरियाणा)-136118

संपर्क : संपादकीय - 94164-82156. व्यवस्था - 90501-82156, 9896957994

Website: desharyana.in

ई-मेल : haryanades@gmail.com

facebook.com//desharyana, youtube.com//desharyana

सहयोग राशि

व्यक्तिगत: 1 वर्ष 300/- (पंजीकृत डाक खर्च समेत)

संस्था: 1 वर्ष 500/- (पंजीकृत डाक खर्च समेत)

आजीवन: 5000/-

संरक्षक : 10000/-

देस हरियाणा के ऑनलाईन भुगतान के लिए

Account Name - Satyashodhak Foundation

Bank Name - Allahabad Bank, Kurukshetra

Account No. - 50490177180

IFSC: ALLA0211940

प्रकाशित रचनाओं में प्रस्तुत विचार एवं दृष्टिकोण से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
सम्पादक एवं संचालन अव्यवसायिक एवं अवैतनिक, समस्त कानूनी विवादों का न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र न्यायालय होगा।
स्वामी-प्रकाशक - मुद्रक सत्यशोधक फाउंडेशन, 912, सैक्टर-13, कुरुक्षेत्र हरियाणा

अनुक्रम

संपादकीय	मानवीय संवेदना व जिजीविषा हमेशा ज़िंदा रहती है	03
परिसंवाद		
कनक तिवारी	हम भारत के लोग और भारत का संविधान	05
प्रो. जगमोहन सिंह	गाँधी, अम्बेडकर और भगत सिंह के चिंतन की सांझी जमीन	12
प्रसून लतांत	गरीब लोगों के हक के लिए लड़े गांधी, अंबेडकर ...	19
सुभाष गाताड़े	त्रिमूर्ति राह दिखाएगी	22
गौहर रज़ा	धर्म में लिपटी वतनपरस्ती क्या-क्या स्वांग रचाएगी..	25
कमलानंद झा	नयी शिक्षा नीति : दायित्व से मुक्ति	29
अरविन्द इन्द्रजीत	उच्च शिक्षा के हालात और विश्वविद्यालय परिदृश्य	33
प्रो. जोगा सिंह	हम भारत के लोग और आगे का रास्ता	45
प्रो. टी. आर. कुंडू	हरियाणवी समाजः सृजन और बौद्धिक उदासीनता	46
अमित ओहलान	हरियाणा में बौद्धिक उदासीनता नहीं, अज्ञानता है	48
कृष्ण बैनीवाल	सृजनात्मकता और शिक्षा-पद्धति	49
हरियाणा सृजन यात्रा		
राजकुमार जांगड़ा	हाली पानीपती की मज़ार पहुँची सृजन यात्रा	50
सुमेल सिंह सिद्धू	बाबा फरीद और हमारा समाज	55
सिद्धार्थ शंकर राय	हिन्दी जातीय चेतना के लेखक थे बालमुकुन्द गुप्त	67
अमित मनोज	आलोचकों की उपेक्षा सहते बालमुकुन्द गुप्त	69
योगेश शर्मा	गरीबदास के छुड़ानी धाम पहुँची हरियाणा सृजन यात्रा	72

कविताएँ

अमित मनोज - 36, दयाल जास्ट - 37, जयपाल - 38

अरुण कैहरबा - 38, योगेश शर्मा - 38, सुरजीत सिरड़ी - 43

ग़ज़लें मनजीत भोला - 40, मंगत राम शास्त्री - 41, कर्मचंद केसर - 42

रागनी विक्रम राही - 44

रपट	सत्यवीर नाहड़िया	बालमुकुंद गुप्त की हवेली पहुँची सृजन यात्रा	64
	अरुण कुमार कैहरबा	चरणदास चोर और ईदगाह नाटकों ने जमाया रंग	73
आवरण	कीर्ति सैनी		

संपादकीय

मानवीय संवेदना व जिजीविषा हमेशा ज़िंदा रहती है

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥

(**पुरानी होने से ही न तो सभी वस्तुएँ अच्छी होती हैं और न नयी होने से बुरी तथा हेय। विवेकशील व्यक्ति अपनी बुद्धि से परीक्षा करके श्रेष्ठकर वस्तु को अंगीकार कर लेते हैं और मूर्ख लोग दूसरों द्वारा बताने पर ग्राह्य अथवा अग्राह्य का निर्णय करते हैं।**)

यह सार्वभौम सत्य की तरह स्वीकार है कि अपनी साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत से कन्नी काटकर नहीं, बल्कि उससे गहराई से जुड़कर ही मनुष्य अपने भविष्य की दिशा तय कर सकता है। अपनी विरासत से संबंध के बारे में महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् नाटक के प्रारंभ में ही उपरोक्त सूत्र दिया है। संकट के समय में मानव की संघर्षशील चेतना को जगाकर साहित्य ने मानव को हमेशा ही ताक़त दी है और दुनिया में बड़े-बड़े परिवर्तनों की पृष्ठभूमि बना है।

वर्तमान शासन सत्ताएँ अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत को विकृत करने का संकट पैदा कर रही हैं। मानवता के समक्ष वास्तविक चुनौतियों के बरक्स मिथ्या व आभासी चुनौतियाँ पेश कर रही हैं और लोग इस जाल में फँस भी रहे हैं।बाज़ार व्यक्ति को टिक-टॉकी रचनात्मकता व अभिव्यक्ति के मंच तो दे रहा है, लेकिन हर दुख-पीड़ा, विडम्बना को प्रहसन के आनंद-कुण्ड में तबदील कर रहा है। सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन के अभाव में अपनी रचनात्मक प्रतिभा व ऊर्जा की अभिव्यक्ति के लिए आभासी मंच ही उसकी पहुँच में हैं, जिसके आनंद लोक में वह खूब गोते लगा रहा है। इस प्रक्रिया में मनुष्य ऐतिहासिक से क्षणजीवी प्राणी में तबदील हो रहा है।

सांस्कृतिक-साहित्यिक जगत में हरियाणा को देश में तो कुछ कमतर आंका ही जाता है, बल्कि प्रदेश में भी अपनी साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत के प्रति एक अजीब सा रिश्ता है। सभ्यता की वस्तुओं, उपकरणों, यंत्रों, परिधानों को लेकर महिमांडन व गर्वोक्तियां तो हैं, लेकिन जीवन के सांस्कृतिक मूल्यों पर चर्चा का अभाव और साहित्यिक विरासत के प्रति घोर विस्मृति है।

शेख़ फ़रीद, संत गरीबदास, अल्ताफ़ हुसैन हाली, बालमुकुंद गुप्त जैसे महान साहित्यकार इस धरती पर हुए। ग्रामीण व कम शिक्षित समाज श्रद्धावश पीरों-फकीरों-संतों की छतरियों-मढ़ियों-मज़ारों पर जाता है, लेकिन शिक्षित वर्ग ने तो विरासत के प्रति पीठ ही कर ली है। सूफ़ियों के चिश्तिया सिलसिले के मुखिया अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित महान रचनाकार शेख फरीद 12 साल हाँसी में रहे, लेकिन यदि बिल्कुल उसी शहर के प्रबुद्ध निवासियों की भी चेतना का हिस्सा नहीं है तो कहने के लिए बचता ही क्या है।

अपनी विरासत के प्रति संवेदनशीलता व आलोचनात्मक विवेक ही भविष्य के मार्ग सूचक-बोधक है। अपनी विरासत की ओर हरियाणा के लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए सत्यशोधक फाउंडेशन व देस हरियाणा द्वारा 29 फरवरी से 1 मार्च तक हरियाणा सृजन

यात्रा का आयोजन किया। देस हरियाणा से जुड़े प्रदेश भर के 18 साहित्यकार व संस्कृतिकर्मी इसमें शामिल हुए। कुरुक्षेत्र स्थित पत्रिका के कार्यालय में एकत्रित हुए और शहीद ऊधम सिंह चौंक पर शहीद को नमन करके यात्रा की शुरुआत की।

सृजन यात्रा का पहला पड़ाव पानीपत रहा। यहाँ प्रख्यात शायर एवं शिक्षाविद् मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली की मजार पर संगोष्ठी हुई, जिसमें पानीपत व आसपास के रचनाकार शामिल हुए। हाली के जीवन मूल्यों, संघर्षों, साहित्यिक सरोकारों व समाज सुधार के कार्यों पर चर्चा हुई। दूसरा पड़ाव, देश के जाने-माने पत्रकार, संपादक व साहित्यकार बाबू बालमुकुंद गुप्त के गांव गुड़ियानी (जिला रेवाड़ी) में झमाझम बरसात में सृजन यात्रियों का काफिला पहुंचा। रेवाड़ी व झज्जर के रचनाकारों ने गुप्त जी की हवेली में जोरदार स्वागत किया। संगोष्ठी में देस हरियाणा के बाबू बालमुकुंद गुप्त विशेषांक सहित कई पुस्तकों का विमोचन हुआ। साहित्यकारों, पत्रकारों व शिक्षाविदों ने गुप्त जी की रचनाएं पढ़ीं और उनके साहित्यिक योगदान पर व्याख्यान दिए। गांव में 1857 की क्रांति के दौरान फांसी पर चढ़ाए गए सौ से अधिक अज्ञात शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

सृजन यात्रा का तीसरा पड़ाव झज्जर जिला के गांव छुड़ानी स्थित कबीर की परंपरा के संत कवि व सुधारक गरीबदास का धाम रहा। संत गरीबदास ने सामाजिक रूढ़ियों, पाखंडों, अंधविश्वासों, जात-पात व साम्प्रदायिक विभाजन का विरोध किया था और लोगों को संकीर्णताओं से निकाल कर मानवता की राह दिखाई थी। संत गरीबदास के जीवन व साहित्य पर महंत श्री दयासागर जी के साथ बातचीत की गई।

इसके बाद सृजन यात्रा चौथे पड़ाव बाबा फरीद की साधना स्थली हांसी पहुंची। चार कुतुब (जहां चार सूफी शेख कुतुब जमालुद्दीन हांसवी, बुरहानुद्दीन, मुनव्वरुद्दीन और नुरुद्दीन की दरगाहें हैं) में संगोष्ठी हुई।। बठिंडा से पधारे इतिहासकार व संस्कृति चिंतक सुमेल सिंह सिद्धू ने वक्तव्य दिया जिसमें बाबा फरीद की विरासत को उद्घाटित किया।

हरियाणा सृजन यात्रा ने हरियाणा की विरासत की ओर प्रबुद्ध जनों का ध्यान आकर्षित किया। साहित्यिक-सांस्कृतिक दायरों में इसकी चर्चा हुई और इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। सृजन यात्रा से शुरु हुई इस विचार प्रक्रिया का विस्तार हुआ हरियाणा सृजन उत्सव में (14-15 मार्च, सैनी धर्मशाला, कुरुक्षेत्र)। भारतीय संविधान की प्रस्तावना के पाठ से हरियाणा सृजन उत्सव की शुरुआत हुई। देश के जाने-माने कानूनविद कनक तिवारी ने 'हम भारत के लोग और भारत का संविधान' विषय पर उद्घाटन भाषण दिया। इस दौरान 'गांधी-अंबेडकर-भगत सिंह के चिंतन की सांझी जमीन', 'शैक्षिक परिदृश्य और विश्वविद्यालय परिसरों का माहौल', 'हरियाणवी समाज की सृजन और बौद्धिक उदासीनता' जैसे ज्वलंत विषयों पर परिसंवाद हुए। खचाखच भरे हाल में दो दिन तक कवि सम्मेलन, नाटक, पुस्तक प्रदर्शनी व साहित्यिक चर्चाओं का सिलसिला चलता रहा। इस अंक में हरियाणा सृजन यात्रा व चौथे हरियाणा सृजन उत्सव के दौरान हुई चर्चाओं को प्रस्तुत किया गया है।

कोरोना महामारी ने निश्चित तौर पर मानव-जीवन को अपनी जकड़ में लिया, लेकिन इससे निपटने के शासन सत्ताओं के तुगलकी तरीक़ों ने इसे महात्रासदी में तब्दील किया है। बग़ल में पोटली दबाए, कंधे पर थैले लटकाए, सिर पर गठरी उठाए, लाठी के सहारे घिसटते बुजुर्गों, पीठ-गोद-गर्भ में बच्चे संभालती महिलाएँ, पुलिस की लाठी खाते लाचार मानव-सैलाब। उफ, हृदयविदारक दृश्य।

सत्ता का संवेदनहीन व जनविरोधी चरित्र फिर उद्घाटित हुआ। जो वर्ग जितना कमजोर है, उतना अधिक पिसा है। करोड़ों लोगों के रोजगार छिने मगर चंद पूंजीशाहों के लिए यह आपदा एक अवसर बन गई। श्रम व पर्यावरण संबंधी क़ानूनों में बदलाव भी इन्हीं दिनों में हो गया जिसके दूरगामी असर पडेंगे। सरकारों के कानफोडू आश्वासन चाहे खोखले साबित हुए हों, लेकिन इस दौरान जिस तरह लोग पीड़ितों की मदद के लिए आगे आए उससे एक बार फिर यही स्थापित हुआ है कि संकट प्राकृतिक हो या व्यवस्थाजनित मानवीय संवेदना व जिजीविषा हमेशा ज़िंदा रहती है। साहित्यकार व कलाकार अपने-अपने कला माध्यमों के जरिये महामारी व व्यवस्थाजनित महात्रासदी की अभिव्यक्ति करेंगे ही।

अंक आपके सामने है, आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

सुभाष चंद्र

हम भारत के लोग और भारत का संविधान

✦ कनक तिवारी

सत्यशोधक फाउंडेशन और देस हरियाणा पत्रिका द्वारा हर वर्ष आयोजित होने वाले चौथे हरियाणा सृजन उत्सव का शुभारंभ सामूहिक रूप से संविधान की प्रस्तावना पढ़ने के साथ हुआ। देस हरियाणा के संपादक डॉ. सुभाष चन्द्र ने अतिथियों का स्वागत करते हुए मौजूदा दौर की चुनौतियों के संदर्भ में साहित्यकारों व संस्कृतिकर्मियों की भूमिका पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता देस हरियाणा के सलाहकार प्रो. टी.आर. कुंडू ने की और संचालन डॉ. अमित मनोज ने किया। छत्तीसगढ़ से आए जाने-माने कानूनविद् श्री कनक तिवारी ने 'हम भारत के लोग और भारत का संविधान' विषय पर उद्घाटन भाषण दिया। उस भाषण को यहां दिया जा रहा है। जिसकी प्रस्तुति देस हरियाणा के प्रबंधन टीम के सदस्य विकास साल्याण ने की है।- सं.

पहली बार भारतीय लोगों ने तथाकथित सरकारी अत्याचार से बचने के लिए और उसका प्रतिकार करने के लिए संविधान की तरफ चलने की कोशिश की है। संविधान केवल वकीलों और जजों की जागीर बनकर रह गया था। संविधान इस देश का राजपथ बन गया है इसको हमें जनपथ बनाने की कोशिश करनी चाहिए है।

जिन मुफ़लिसों के लिए संविधान निर्माताओं ने इसे बनाया था उन्हें हम भूल गए है। आज़ादी की लड़ाई में लड़े तो गरीब और मुफ़लिस थे और जो बहुत-बहुत बड़े लोग थे उनका परिचय जयप्रकाश नारायण के शब्दों में देता हूँ वो बताते हैं ये तमाम बड़े-बड़े लोग उस समय अंग्रेजों के जूते झाड़ रहे थे, उनके तलवे सहला रहे थे। राज गरीब का होना चाहिए था लेकिन राज गरीब का नहीं हुआ। यह बहुत गलत हुआ और अब तक यही चलता आ रहा है और यह एक दुःखद स्थिति है ।

जो लोग देश की आज़ादी की लड़ाई में शामिल थे, राज उनका होना चाहिए था लेकिन राज उनका नहीं हो पाया। पिछले में 70 सालों में 104 संविधान संशोधन हो चुके हैं।

आज़ादी की लड़ाई में जो लोग शामिल थे वे तो संविधान बनाने में शामिल थे ही उसके साथ जितनी हमारी रियासतें थी उनके प्रतिनिधि भी उसके अंदर थे। उसमें बहुत से पढ़े लिखे लोग जिसमें जज थे, वकील थे, बैरिस्टर थे, अफसर लोग और रिटायर्ड लोग भी शामिल थे।

जिन लोगों ने संविधान को बनाया उनमें अंग्रेज़ियत का पुट ज्यादा था। संविधान को बनाया 1935 के गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट के आधार पर संविधान का मूल जो ड्राफ्ट था, वह सर बी.एन. राव ने बनाया था और उसको संविधान के अन्य सदस्यों की मदद से ठीक करने की कोशिश की।

हमारा संविधान सबसे ज्यादा बोलने वाला संविधान है। भारत के संविधान में 90000 शब्द है अमेरिका जैसे ताकतवर देश के संविधान में केवल 7000 शब्द है। जब राजेंद्र प्रसाद से पूछा जो संविधान सभा के अध्यक्ष थे तो उन्होंने कहा कि देखो सदियों बाद आजाद हुए पहली बार मौका मिला है तो जिनको-जिनको मौका मिला है उनको सबको बोल लेने दो और बोल लेने का मौका जिसको मिलता है उसको हिंदुस्तानी अपनी फतेह मानता है और इस तरह हमारा संविधान बहुत बोलकर बना।

दूसरी खासियत हमारे संविधान की एक और है जो दुनिया में शायद किसी और संविधान की ना हो। हमने अपना संविधान बनाना शुरू किया 9 दिसंबर 1946 को हम आजाद हुए 15 अगस्त 1947 को। हमने आज़ादी के पहले संविधान बनाना शुरू किया और खत्म किया हमने 26 नवंबर 1949 को। आधा हमारा संविधान आज़ादी के पहले बना और आधा आज़ादी के बाद बना।

जब हमारे संविधान में परेशानियां आती हैं जब कभी कोई कठिन सवाल आएगा जहां वैक्युम है, जहां कहीं कुछ लिखा नहीं है, वहां इंग्लैंड की जो परंपराएं हैं, हमें तमीज सिखाती है। हम उनसे पूछने जाते हैं कि यहां पर हमें कोई चीज समझ नहीं आ रही है तो आप हमें समझाइए। आज भी ब्रिटिश हुकूमत के वहां की संस्कृति की, वहां की सभ्यता की इतिहास की जो बातें हैं उनको पढ़कर हमारा सुप्रीम कोर्ट बड़ी-बड़ी बातें करता है कि देखो हमने फैसला किया सन् 1680 में ऐसा हुआ था सन् 1750 में ऐसा हुआ था इंग्लैंड में ऐसा हुआ था। हम इस तरीके की मानसिक गुलामी के संविधान के साथ जीवित हैं, ऐसा कहने में हमें गुरेज तो नहीं होना चाहिए।

हमारा संविधान उन लोगों के लिए जो जिरह के लिए, पैसे के लिए, जनता की सेवा के लिए इसको पढ़ना चाहते हैं। यह दार्शनिक बोझिल शब्दावली में है 19वीं सदी की अंग्रेजी में है। 19वीं सदी की अंग्रेजी बड़ी कठिन अंग्रेजी थी हालांकि आलंकारिक थी, शास्त्रीय थी, बहुत बोझिल थी और समझ नहीं आती थी। उस तरह की एक बोझिल दार्शनिक शब्दावली में बना। उसको पढ़ने के लिए हिंदुस्तान के लोगों को हिंदी जानने वालों को तो शब्दकोश लगता है लेकिन दुख और हैरत इस बात की है कि उस अंग्रेजी में लिखे संविधान का अनुवाद जो हिंदी में किया वह अंग्रेजी से भी ज्यादा कठिन है। हमारे शहर दुर्ग से संविधान सभा के एक सदस्य थे घनश्याम जी गुप्त। हिंदी में तर्जुमा करने वाली कमेटी के अध्यक्ष थे। अब उसके बाद आचार्य रघुवीर आए आचार्य रघुवीर की हिंदी और भी आलंकारिक थी।

हमारा संविधान कितनी कठिन हिन्दी में है। मैं आपको संक्षेप में एक बार बता रहा हूँ हमारे संविधान में अनुच्छेद 49 में अंग्रेजी में लिखा है यह जो हमारी इतिहास की पुरातत्व की इमारतें हैं इनको हम कैसे बचाएं (protection of monuments and places and objects of national importance. it shall be obligation of state to protect the every monument aur place object of artistic and historic entrance by to be of nation importance from exploitation and

spoliation) और हिंदी में लिखा है कि हम इस तरह की इमारतों को लूंठन से बचाएंगे। कोई हमें बताएं कि यह लूंठन शब्द कहां से आया।

एक पद्म पुरस्कार होता है इसमें लिखा हुआ है अनुच्छेद 18 में (No Title Not Being a Military or academic distinction Shall be Confird by the state) हिंदी में कहते हैं अगर आप हमें विद्या संबंधी, एक्सीलेंस का हिंदी अनुवाद संबंधी होता है क्या? एक्सीलेंस का हिंदी अनुवाद होता है प्रवीणता ।

हिंदुस्तान के संविधान की कल्पना जवाहरलाल नेहरु ने की और उस परिकल्पना को साकार रुप किया है डॉक्टर अंबेडकर ने।

पूरे पश्चिम का जो आडंबर है नैतिक बौद्धिक और आध्यात्मिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक सब का सब बनाया है तीन बड़े लोगों ने सुकरात और उसके बाद उनके चेले प्लेटो, अरस्तू। सुकरात सत्य का आग्रही था इसलिए उसको जहर पीना पड़ा उसके बाद प्लेटो आया जिसने रिपब्लिक लिखा उसने बताया कि कैसे दुनिया को चलाया जाए, संविधान बनाया जाए। उसके बाद अरस्तू और आगे बढ़ कर आए उन्होंने ज्ञान विज्ञान समस्त क्षेत्र में दखल किया।

गांधी भारत के सुकरात थे। सत्य का जितना आग्रह सुकरात में था उतना ही गांधी में था। सुकरात को जहर पीना पड़ा, गांधी को गोली खानी पड़ी। गांधी का चेला जवाहर लाल प्लेटो का भक्त था। प्लेटो ने 'रिपब्लिक' लिखा। रिपब्लिक शब्द नेहरु को बहुत प्यारा था। कभी-कभी विधानसभा में चुहल भी होती थी। संविधान सभा की 12 जिल्दों में इतनी मोटी किताब है, जिसको पढ़ने के बाद पता चलता है कि नेहरु और अंबेडकर में चुहल भी होती थी। नेहरु ने डेमोक्रेटिक शब्द नहीं लिखा हमारे संविधान की शुरुआत में डेमोक्रेटिक शब्द प्रजातंत्र नहीं था। रिपब्लिक लिखा तो अंबेडकर ने आपत्ति की। बोले, पंडित जी यह रिपब्लिक क्या है? तो पंडित जी बोले कि नहीं, यह रहेगा। उसके बाद अंबेडकर अरस्तू की शक्ल में आए और अंबेडकर ने संविधान बनाया।

अंबेड़कर अगर संविधान सभा में नहीं होते तो, मैं संविधान के एक विद्यार्थी की हैसियत से अपने पूरे ईमान के साथ आपसे कहना चाहता हूँ कि हिंदुस्तान का संविधान बन नहीं सकता था, केवल बाबा साहब अंबेडकर की प्रतिभा थी, जो उसकी एक-एक परत को एक-एक स्तर को छीलकर साफ कर एक साफ सुथरा संविधान भारत के लोगों को हमारे भविष्य के लिए दिया।

अंबेड़कर अगर संविधान सभा में नहीं होते तो, मैं संविधान के एक विद्यार्थी की हैसियत से अपने पूरे ईमान के साथ आपसे कहना चाहता हूँ कि हिंदुस्तान का संविधान बन नहीं सकता था, केवल बाबा साहब अंबेडकर की प्रतिभा थी, जो उसकी एक-एक परत को एक-एक स्तर को छीलकर एक साफ सुथरा संविधान भारत के लोगों को हमारे भविष्य के लिए दिया।

समाजवाद शब्द हमारे संविधान में शुरु में नहीं था। संविधान में समाजवाद के बारे में दो मिनट मैं आपसे समझना चाहता हूँ भारत के राजनैतिक इतिहास में समाजवाद नाम का पहला शब्द विवेकानंद ने कहा था कालक्रम में क्योंकि वह पहले पैदा हुए थे हालांकि उनका समाजवाद वेदांतिक समाजवाद था। गांधी ने भी कहा कि मैं केवल समाजवाद चाहता हूँ हालांकि उनका समाजवाद सर्वोदय समाजवाद था। उसके कालक्रम में नेहरु का समाजवाद वह फेबियन समाजवाद था। लास्की का, बर्टेंड रसेल और बर्नाड शॉ का और तमाम लोगों का फेबियन समाजवाद क्या है? अगला समाजवाद लोहिया का समाजवाद था। जो जर्मनी का समाजवाद था। इसके बाद समाजवाद शब्द का असली उच्चारण भगत सिंह ने किया। जिसने रुस के तमाम लोगों को पढ़ रखा था, पूरे वामपंथ को पढ़ रखा था। हमारे अलग-अलग तरह के समाजवाद के चेहरे लेकिन जब हमारे देश में समाजवाद आया, हमारे देश का संविधान बना, उसमें समाजवाद नाम का कोई शब्द नहीं था। यह तो इंदिरा गांधी ने अपने राजनीतिक वजूद को बचाने के लिए 42 वें संविधान संशोधन में समाजवाद और पंथ निरपेक्षता को जोड़ा तब यह शब्द आए।

हिंदुस्तान के समाजवाद, हिंदुस्तान के संविधान के मर्म को समझने में हमने कुछ गलतियां की हैं। इतिहास

केवल नायकों का होता है। कार्लाइल ने कहा है केवल नायक जो होते हैं उनकी कहानी ही इतिहास है। संविधान के बनाने में भी नायक थे कुछ नाम है उनको नहीं भूलना चाहिए। प्रोफेसर के.टी. शाह, दामोदर स्वरूप सेठ, काजी नजीरुद्दीन, मौलाना हसरत मोहानी, विशंम्भर दयाल त्रिपाठी, एस. नागप्पा और इस तरह के कई नाम हमारे यहां ऐसे गुमनाम सदस्य हुए हैं। हमने इनको महत्व नहीं दिया इनके सारे संशोधनों को खारिज कर दिया।

महात्मा गांधी ने एक किताब लिखी। 70-80 पेज की किताब है हिंद स्वराज। आप इस किताब को जरूर पढ़िए। वह 1909 में बैरिस्टर गांधी ने लिखी थी, महात्मा ने नहीं। एक वाक्य उसमें लिखा है कि ब्रिटेन के संसद हिंदुस्तान में मत लाओ ,यह संसद वेश्या है। एनी बेसेंट ने कहा कि बापू यह क्या कर रहे हैं आप शरीफ़ आदमी इतना सभ्य, सुसंस्कृत, संस्कारिक, शास्त्रीय उच्च कोटि का विद्वान, इतना अहिंसक आप वेश्या लिखते हैं संसद को। गांधी ने कहा कि मुझसे गलती हो गई मैं वेश्या नहीं कहूँगा। संसद वेश्या नहीं है संसद नर्तकी है, वह प्रधानमंत्री के इशारे पर नाचती है।

हमारा संविधान जब बना तब बाबा साहब अंबेडकर ने डंके की चोट पर दो बार आखिरी दिन कहा कि संविधान है क्या? यह हमारी नीयत का, हमारे नियति का कागज का पुर्जा, किताब है। आगे आने वाली सरकार संसद कैसे चलाएगी यह हमारे हाथ में नहीं है। आगे चलकर बाबा साहब ने कहा जब उन्होंने कांग्रेस छोड़ी कि मेरे बस में हो तो मैं संविधान को जला दूँ। यह कागज का टुकड़ा अब किसी काम का नहीं है। बाद की पीढ़ियों ने संविधान के साथ जिस तरह का सुलूक किया आप उसको याद रखने की कोशिश करो इस तरह संविधान का लालन पालन नहीं होता है।

हिंदुस्तान में किस की हुकूमत चलनी चाहिए किसका देश है यह, हिंदुस्तान का संविधान क्या कहता है। हमारा देश सभी मजहबों का, सभी विश्वासों का, सभी जातियों का, सभी धर्म के लोगों, सबका एक साथ मिलकर चलने वाला देश है। एक वाक्य आपको याद दिलाता हूँ, पंथनिरपेक्षता को सबसे ज्यादा समझा था स्वामी विवेकानंद ने 11 सितंबर 1893 को जब शिकागो धर्म सम्मेलन में भाषण दे रहे थे इतिहास इस बात का गवाह है एक वाक्य उन्होंने कहा था जिस पर सबसे पहले तालियां बजी। वह रामकृष्ण मिशन को भी सन् 1950 तक नहीं मालूम था यह मैं जिम्मेदारी से कह रहा हूँ। 1950 के आसपास मेरी लुई वर्क नाम की एक महिला ने छह खंडों में अमेरिका में और यूरोप में विवेकानंद नाम की अंग्रेजी में किताब लिखी उसमें एक वाक्य लिखा जो विवेकानंद ने उस सभा में कहा था कि मैं उस पवित्र देश और उसकी भाषा संस्कृत का गौरव करता हूँ जिस भाषा में बहिष्कार नामक शब्द का अनुवाद भी नहीं होता है। यह संविधान का मर्म है यह हमारा संविधान है हम किसी का बहिष्कार नहीं करते हम आत्म स्वीकार करते हैं। मित्रों, जितने मजहब और बोलियां हिंदुस्तान में है उतनी दुनिया में कहीं नहीं है। जिस तरह के लोग यहां पर हैं दुनिया में कहीं नहीं है। यह विश्वास का हलफ़नामा है, हमारा मुल्क यह देश नहीं, यह दुनिया है। यह स्वर्ग की तरह है।

सुप्रीम कोर्ट ने एक बार नहीं बार-बार कहा है कि इस भारत में सार्वभौम कोई नहीं है, कोई विशेष नहीं है, न तो सुप्रीम कोर्ट है, न तो हाईकोर्ट है, न तो प्रधानमंत्री है, न तो राष्ट्रपति है और न ही संविधान खुद है। इस हिंदुस्तान में सार्वभौम अगर कोई है तो हम भारत के लोग सार्वभौम हैं, हम मालिक हैं।

रामकृष्ण मिशन विवेकानंद आश्रम में एक स्वामी वैरागी जी महाराज रहते थे। वह बिल्कुल पढ़े-लिखे नहीं थे। हम लोगों को बुलाया गया कि सेक्युलेरिज्म पर भाषण दीजिए। अलग-अलग धर्म के लोग हम लोग बोल रहे थे। स्वामी जी आकर बैठ गए आखिर में कहा कि 'मैं एक वाक्य बोल दूं क्या। मुझे समझ नहीं आया कि आप लोग क्या बोलते हैं' तो लोगों ने कहा कि आप बोलिए तो वैरागी जी आए उन्होंने कहा कि देखो भैया हम धर्मनिरपेक्षता को तो नहीं जानते लेकिन एक बात जानते हैं कि चौका हो हिंदू का, बनाए मुसलमान और खाए इसाई यही धर्मनिरपेक्षता है। धर्मनिरपेक्षता की इससे बेहतर और क्या परिभाषा है।

कितना अच्छा लगता है कहने में हम भारत के लोग हमने अपना संविधान बनाकर उसको आत्मार्पित किया है। कौन हैं भारत के लोग? हिंदुस्तान की जनता ने वोट दिया था। अपने नुमाइंदे चुने थे। उन नुमाइंदों ने हमारा संविधान बनाया। गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1935 के छठवीं अनुसूची के हिसाब से कुछ खास लोग वोट दे सकते थे। जो पढ़े लिखे होने चाहिए, कुछ कमाई होनी चाहिए, चरित्र ठीक-ठाक होना चाहिए।

28.5% ने उस वक्त वोट देकर संविधान सभा बनाई, वह हम भारत के लोग हो गए और डॉक्टर अंबेडकर का जहन था, डॉ. आंबेडकर की अहमियत थी, उनका कहना था कि हम हिंदुस्तान के लोग ही अपना संविधान बना रहे हैं। यह आपको उसकी प्रस्तावना में लिखना पड़ेगा और यह मुखड़े में लिख करके उसकी तासीर बनाई गई कि हाँ हम हिंदुस्तान के लोगों ने अपना संविधान बनाया है। लेकिन कहां है हम भारत के लोग? हम भारत के लोग गुम हो गई इकाइयां हैं। हम भारत के लोगों को समझना चाहिए कि हम कौन हैं?

सुप्रीम कोर्ट ने एक बार नहीं बार-बार कहा है कि इस भारत में सार्वभौम कोई नहीं है, कोई विशेष नहीं है, न तो सुप्रीम कोर्ट है, न तो हाईकोर्ट है, न तो प्रधानमंत्री है, न तो राष्ट्रपति है और न ही संविधान खुद है। इस हिंदुस्तान में सार्वभौम अगर कोई है तो हम भारत के लोग सार्वभौम हैं, हम मालिक हैं, हम डरे हुए क्यों हैं? हम पस्त हिम्मत क्यों हैं? हम घबराए हुए क्यों हैं? हम गुलाम मनोवृति के क्यों हैं? किस तरह के हम भारत के लोग हैं? भारत के लोगों को संविधान ने सिखाया है कि हम किसी तरह अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करें। कुछ मूल अधिकार भी हम को दिए गए हमको अधिकार दिया गया है, कि हम बोल सकते हैं, हमको अधिकार दिया गया है कि हम एक अहिंसक सम्मेलन कर सकते हैं, हमें अधिकार दिया गया है कि हम कहीं देश में कहीं भी जाकर बस सकते हैं, रोजगार कर सकते हैं। इन अधिकारों को हम कैसे अमल में लाएं, कैसे सरकार से तामील करें?

सर बी.एन.राव थे जिन्होंने संविधान बनाया था उन्हें अमेरिका भेजा गया। हमने जो मूल अधिकार बनाए हैं यह अमेरिका के मूल अधिकारों से हमने नकल की है। सेंट मेरी, सेंट पीट्सबर्ग के बहुत बड़े भाषण में अब्राहम लिंकन ने जो कहा था और उसको फिलाडेल्फिया में जब संविधान बना उसमें जो कसम खाई गई थी उसमें बहुत सी बातें कही। अमेरिका के संविधान में लिखा है कि जो मूल अधिकार हैं (They Shall be given to the people unless apporgater by the due process of law) अगर कानून की नैतिकता की संवैधानिकता की किसी वजह से इसको ना हटाया जाए तो जनता को संविधान के अधिकार मिलेंगे।

फिरिक्स फ्रैंकफर्ट ने कहा कि आप हिंदुस्तान में नहीं कर सकते आप की जनता को आप के अधिकारों का मालूमात नहीं है। आपकी जनता सदियों से गुलाम है। अगर आप उसमें लिख देंगे कि ड्यू प्रोसेस ऑफ लॉ। यदि आपको सरकार प्रताड़ित कर सकती है, सरकार प्रतिबंधित कर सकती है तो सरकारें डूब जाएंगी। आपकी चल नहीं

पाएगी तो लिहाजा उसको बदलिए और उसमें लिख दीजिए, बाय प्रोसीजर इस्टैबलिश्ड बाय लॉ अगर कानून से प्रक्रिया बना दी जाए तो उस प्रक्रिया के तहत। सत्तर साल से सरकार हम को लूट रही है।

70 साल से इतने कानून बन रहे हैं।हम सरकारों का कुछ बिगाड़ नहीं पा रहे हैं। जितने चाहे उतने उल्टे सीधे कानून बना दिए जाते हैं। एक फिल्म बनी थी आर्टिकल-15 अनुभव सिन्हा की उसको आपने देखा होगा बहुत बेहतरीन फिल्म थी। आर्टिकल-15 कहता है कि हिंदुस्तान के नागरिक केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान, या इनमें से किसी के आधार पर दुकानों, सार्वजनिक, भोजनालय, होटलों और सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों में प्रवेश या जनता के प्रयोग के लिए कोई तालाब या कब्रिस्तान वगैरह में भेदभाव का शिकार नहीं बनेंगे।

जब देश और दुनिया में खत्म हो रही है। तब ऐसी स्थिति में हिंदुस्तान के बुद्धिजीवी क्या कर रहे हैं? केवल कविता, कहानी, लिखना अच्छी बात है लेकिन सामाजिक विज्ञान के जिरह को आगे बढ़ाना हिंदी भाषा में हम सब का मिला-जुला कर्तव्य है हमें उसे पूरे जोर से करना चाहिए।

संविधान सभा की बहस में यह भी हुआ। एक ताहिर हुसैन थे बिहार के। उन्होंने बोला कि हमारे बिहार में अनुसूचित जाति का कोई आदमी किसी सड़क पर चलता है तो उसको मार देते हैं। ताहिर हुसैन ने कहा कि 'एक बात और है कि अगर किसी को कब्रिस्तान में दफनाया जाए या श्मशान में जलाया जाए तो इस बात का फैसला कैसे होगा? अगर हम ले जाएं तो कोई रोक देगा तो क्या होगा?' दूसरे सदस्य थे मद्रास के एस. नागप्पा अनुसूचित जाति के थे उन्होंने सवाल किया कि 'आप एक बात बताइए नाई और धोबी की दुकान में कोई जाए अपनी जाति न बताए और फिर नाई और धोबी उससे पूछे की जाति बताओ और वह जाति बता दे तो क्या नाई और धोबी उसको सेवा करने से इंकार कर सकता है?' और एक तीसरा सवाल आया सिबलाल सक्सेना का उन्होंने पूछा कि 'राम भरोसे हिंदू होटल में मौलाना शौकत अली अगर खाना खाने चले गए तब क्या होगा?' बाबा साहब ने जवाब दिया कि देखो भाई नाई या धोबी जो होगा वह तो सेवक है, उसके आप पैसे देते हैं सेवा के, तो वह इंकार नहीं कर सकते कि हम आपकी सेवा नहीं करेंगे। शमशान और कब्रिस्तान के बात जहां तक है, वह तो अलग-अलग धर्म का मामला है और वह अलग-अलग मज़हब के लोग बनाते हैं तो उसमें सरकार क्या कर सकती है। राम भरोसे हिंदू होटल पर मौलाना शौकत अली जाएंगे भोजन करने इसका जवाब अंबेडकर ने नहीं दिया। वह जवाब आज भी हम मांग रहे हैं वह जवाब पूरे हिंदुस्तान में मांगा जा रहा है।

एक और दिक्कत हमारे यहां हुई संविधान में तीन तरह के उल्लेख हैं। जब बना तो उसमें लिखा गया हमारे यहां अध्याय 4 है उसको कहते हैं नीति निर्देशक तत्त्व। हमारे सपने जो भविष्य में पूरे करेंगे उसमें पूरा गांधी भरा हुआ है गांधी भारत का सपना है और सपना वह जो पूरा न किया जाए। जो भविष्य की पीढ़ी के लिए छोड़ दिया जाए। उसमें एक जगह लिखा है कि राज्य पूरी कोशिश करेगा 6 वर्ष से ज्यादा और 14 वर्ष से कम सभी बच्चों को शिक्षा दी जाए फिर राज्य ने संशोधन किया अनुच्छेद 21 (क) कि राज्य 6 वर्ष से ज्यादा और 14 वर्ष से कम इसके बच्चे को अधिकार होगा कि सरकार उसको पढ़ाए। अब 14 वर्ष के बाद क्या होगा एक गरीब के बच्चे को किसी अच्छे स्कूल में दाख़िला नहीं मिलता यह हम जानते हैं लेकिन सरकार अगर पीछे पड़ जाए संविधानिक अधिकार है तो प्राइवेट स्कूलों में आरक्षण दिया हुआ है वहां पढ़ाते हैं तो मान ले कि पढ़ाते हैं। 14 वर्ष तक बच्चा आठवीं कक्षा पास करता है एक गरीब का बच्चा आठवीं दर्जा पास करने के बाद कहां जाएगा? 18 वर्ष में बालिग होता है। राजीव गांधी की सरकार ने 18 वर्ष में वोटिंग का अधिकार दिया है। 14 से 18 वर्ष के बीच की आयु में उसमें हिंदुस्तान के किसी गरीब के बच्चे को पढ़ने का अधिकार नहीं है। 14 से 18 वर्ष की उम्र के दरमियान बच्चों में शारीरिक बदलाव होते हैं यही वह उम्र है जब बच्चे विज्ञान के लिहाज से बदलते हैं इस देश के संविधान ने सरकारों ने 14 से 18 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा नहीं रखा। इससे हिंदुस्तान में 14 से 18 वर्ष के बच्चों के अंदर अपराध का ग्राफ बढ़ गया है यह संविधान की अवहेलना करके सरकारों ने किया है।

हिंदी के बहुत बड़े लेखक थे शरद जोशी वह कहते थे स्कूल किसको कहते हैं? जहां शाला भवन, विद्यार्थी और शिक्षक इन तीन में से दो होता है उसको स्कूल कहते हैं। इस तरह के स्कूल सारे देश के अंदर चल रहे हैं।

इस देश में इंकलाब हो रहा है मैं खुलकर विनम्रता से इस बात को कहना चाहता हूँ। 1942 के आंदोलन में अंग्रेजों भारत छोड़ो जब हम कह रहे थे। 1942 का आंदोलन गांधी का आंदोलन नहीं था। यह आंदोलन नौजवानों का आंदोलन था। 1942 में जितने लोग शहीद हुए जितने नौजवान शहीद हुए वह बहुत बड़ी बात थी, लेकिन हमारे साथ बहुत से नेता थे।

आज जो दिल्ली में हो रहा है, आज उसके कारण पूरे हिंदुस्तान में हो रहा है। उसमें कोई बड़ा नेता नहीं है। मैं हिंदुस्तान के नौजवानों को, हिंदुस्तान को, पढ़े-लिखे नौजवानों को जिनमें शोध छात्र हैं पढ़े-लिखे लड़के हैं, लड़कियां हैं बुर्कापरस्त औरतें हैं, बच्चे हैं, बूढ़े हैं तमाम लोग हैं। आज जो हम इंकलाब कर रहे हैं यह बड़ा इंकलाब है 1942 के इंकलाब से एक कदम आगे है। यह इंकलाब संविधान के बल पर किया जा रहा है। वह किसी राजनीतिक पार्टी के साथ नहीं है। राजनीतिक पार्टियों को किसी आंदोलन में घुसने का मौका नहीं मिल रहा है यह ऐसा आंदोलन है इसलिए यह संविधान का आंदोलन है, बाबा साहब का आंदोलन है, गांधी का आंदोलन है, इन चीजों को लेकर आज हिंदुस्तान के नौजवान लड़के चल रहे हैं। मैं उनको बधाई देना चाहता हूँ।

जो लोग हिंदुस्तान के नौजवानों से परहेज करते हैं उनमें मेरी गिनती मत करना। एक आदमी हुआ है जिसका नाम था के. टी. शाह। हमारे संविधान में एक चेहरा है अनुच्छेद 39 का उसमें लिखा है कि जितने हमारे कुदरती साधन है देश के वह पूरे देश के काम आएंगे। लिखा है पढ़िए पूरे प्राकृतिक संसाधन जनता के काम आएंगे। के.टी. शाह ने कहा था डॉक्टर अंबेडकर, नेहरू जी जनता से क्या मतलब है। जनता में वह भी शामिल होंगे जो कॉर्पोरेट हैं, जो बड़े आदमी हैं। इसलिए उसे साफ साफ करिए कि सरकार के काम आएंगे, सरकार के मार्फत जनता के काम आएंगे। लेकिन वह बात मानी नहीं गई। ऐलानिया कहा था के.टी. शाह ने, उनका समर्थन और लोगों ने किया उन्होंने कहा कि इस संविधान सभा में जो बैठे हैं। यह खून चूसने वाले बैठे हैं। कुछ नाम लेकर कहा कि यह खून

चूसने वाले संविधान सभा के सदस्य हैं जो आपको गुमराह करके गलत संविधान बनवा रहे हैं और देखना जब हिंदुस्तान आजाद होगा तो हमारी जितनी कुदरती दौलत है लोहा, इस्पात, एल्यूमीनियम, बॉक्साइट और तमाम इस पर इनका एकाधिकार हो जाएगा। आज देश की दौलत 5% से कम लोगों के पास है। संविधान के उस अनुच्छेद को नकारने के कारण हुई है। हम शर्मसार हैं कि संविधान की बहुत सी बातों को हम ठीक से लागू नहीं करा सकते।

एक छोटी-सी घटना बता दूं मैक्सिको पर अमेरिका ने हमला किया तो मैक्सिको पर हमला करने के कारण एक जजिया कर जैसा टैक्स लगाया गया। एक विद्वान हेनरी डेविड थोरो हुआ करते थे। उन्होंने कहा कि यह टैक्स मैं नहीं दूंगा, यह जुल्म का टैक्स है तो टैक्स उन्होंने नहीं दिया। अमेरिका की सरकार ने टैक्स नहीं देने के कारण थोरो को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया हालांकि वह 24 घंटे जेल में रहे किसी ने टैक्स भर दिया तो उन्हें छोड़ दिया गया। उनके दोस्त इमर्सन उतने ही बड़े विद्वान थे। थोरो गांधी के गुरु थे। इमर्सन से विवेकानंद प्रभावित थे वह गए, इमर्सन ने थोरो से सवाल किया कि भाई थोरो तुम यहां क्यों हो? वह जेल के अंदर थे। इमर्सन से थोरो ने पूछा तुम यहां क्यों नहीं हो?

जब देश और दुनिया में खत्म हो रही है तब ऐसी स्थिति में हिंदुस्तान के बुद्धिजीवी क्या कर रहे हैं? केवल कविता, कहानी, लिखना अच्छी बात है लेकिन सामाजिक विज्ञान के जिरह को आगे बढ़ाना हिंदी भाषा में हम सब का मिला-जुला कर्तव्य है हमें उसे पूरे जोर से करना चाहिए।

श्याम बेनेगल ने 20 किस्तों का संविधान पर एक सीरियल बनाया है मेरी गुजारिश है कि यह सीरियल आप नौजवानों को और जनता को दिखा दीजिए। संविधान आपका बहुत अहसान मानेगा जिससे मैं इनका अहसान मानूंगा।

गाँधी, अम्बेडकर और भगत सिंह के चिंतन की सांझी जमीन

✦ प्रो. जगमोहन सिंह

हरियाणा सृजन उत्सव में 'गांधी, अंबेडकर और भगत सिंह के चिंतन की सांझी जमीन' विषय पर आयोजित परिसंवाद में शहीद भगत सिंह के भांजे व प्रख्यात चिंतक प्रो. जगमोहन सिंह और गांधी जी के विचारों के संदर्भ में गांधीवादी चिंतक प्रसून लतांत ने अपने विचार व्यक्त किए। सत्र का संचालन हरविन्दर सिंह सिरसा ने किया। प्रस्तुति देस हरियाणा टीम के युवा कवि योगेश शर्मा ने की है।-सं.

मुझे याद आ रहा है कि एक नॉवल है 'कन्थापुरम' मिस्टर राव ने लिखा है, इंग्लिश में एक ही नोवल है उसकी पृष्ठभूमि कर्नाटक का एक कन्थापुरम गाँव है। उसमें आमतौर पर वहाँ के लोग एक हेरिटेज करते हैं, वो एक स्लोगन लगाते हैं कि "With the sacrifice of Jatin Das, with the fire and courage of Bhagat Singh and under the leadership of Mahatma Gandhi, we will bring freedom।" तो आम आदमी उसको किस तरह साँझा कर रहा था।

मन्मथनाथ गुप्त (काकोरी केस में उम्र कैद हुई थी, रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक के साथ) ने वहाँ बड़े स्वाभाविक रूप से कहा कि 'हम सब इंकलाबी बनारस में महात्मा गाँधी जी के आह्वान पे आये थे' तो मेरे मन में बड़ी उत्सुकता हुई कि वो कौन सा आह्वान था जिसपे सारे इंकलाबी कौमी लहर के उस आंदोलन में आये? मैंने वो खोजी। वो गांधी जी का एक भाषण है। वो कहते हैं कि 'मेरे साथ मालवीय जी बैठे हैं, मैं जब हिंदुस्तान आया था तो मुझे लगता था कि मैं इनके क़दमों में बैठ के सेवा करूँ तो मेरा काम पूरा हो जाए लेकिन, आज दो अलहदा विचारों में टकराव है हमारा। ये कहते हैं कि कोई हिन्दू विश्वविद्यालय बनाया था, ये कहते हैं कि नौजवान पढ़ें, नौकरी करें, अपने परिवारों को मदद करें लेकिन मैं कहता हूँ कि बहुत बड़ा परिवार भारत है और नौजवानों को थोड़ी देर के लिए अपने परिवारों के लिए जो काम है वो बंद करके देश के परिवार के लिए आना चाहिए।'

उस आवाज में कितनी ताकत थी कि चंद्रशेखर आज़ाद 14 साल के थे वो भी निकले, उसी सत्याग्रह में उन्होंने हिस्सा लिया, और जब उन्हें पकड़ा गया तो उन्हें 14 बेंत की सजा हुई। बेंत खाना बहुत भयानक था। साधारणतः जो अपने आप को बड़ा बहादुर समझता है, वो भी गिर जाता था। लेकिन हमारे चंद्रशेखर आज़ाद, (जंगल में भीलों के साथ पलने वाले) ने 14 बेंत खाए। उसमें बड़ी मजेदार बात ये थी कि बाद में जेलर 4 आने देता था कि 'जाओ जाकर दूध पी लेना'। वो 4 आने जेलर के मुंह पर फेंककर अपने पाँव पर आ गये और शाम को बनारस में जो सभा हुई उसमें पहली फोटो हमें चंद्रशेखर आजाद जी की मिलती है। 14 साल का लड़का खड़ा है और उसके खड़ा होने के साथ पूरा बनारस खड़ा हो गया है।

मैं अपना बचपन, क्योंकि कई सारे लोगों ने बचपन में मुझे प्रभावित किया, मेरी माँ का तो एक बहुत सूक्ष्म तौर पर मेरे मन में डाला हुआ प्रश्न कि 'लोग मुझे पूछते हैं घर में भगत सिंह को जानने वाला कोई है?' तो बड़ी सूक्ष्मता से उन्होंने मुझे बताया कि रिश्तेदारी जो है वो जानने से बनती है। तो मैंने वो हर व्यक्ति जानना चाहा भगत सिंह जिसके साथ रहे।

उसमें हमारे कुछ बुजुर्ग ऐसे भी थे, एक हमारे सज्जन सिंह मिरगनपुरी सोशलिस्ट थे लेकिन उनके बारे में ये था कि उनकी सच्चाई पे अंग्रेज न्यायधीश भी इतना एतबार करते हैं कि अगर सज्जन सिंह कह रहा है तो फिर हमें उसकी जांच की जरूरत नहीं है। वो बाद में पार्टी में आए। उनसे क्या सीखा कि मेरा बचपन इस तरह का था कि 'गांधीवादी जैसे होते हैं, कि खद्दर पहनना है कि खुद उसे धो सकें क्योंकि माता जी तो बाहर ड्यूटी पर काम में रहते थे तो मुझे अपनी भाभी पर भी डिपेंडेंट ना होना पड़े

और सादगी में रहना है लेकिन पढ़ना है। वो एक प्रभाव का युग था। जब गांधी जी ट्रांसलेट होते थे।

उसके बाद एक युग जिसकी बात हम कर रहे हैं, कि एक भ्रम पैदा किया जाता है क्योंकि हम इस धरती पे हैं, तो मुझे लग रहा था कि मैं महाभारत की दो चीजें आपसे जरुर सांझा करुं जो मैंने सीखी हैं कि द्रोणाचार्य को कैसे मारा गया? आधा सच बोल के (सबसे बड़ा जो गुरु है उसको आधे सच से मारो)। नौजवान अभिमन्यु कैसे मरा? क्योंकि उसे आधा-आधा ज्ञान था। तो आज जिस चीज से हम टकरा रहे हैं वो आधे सच और आधे ज्ञान से टकरा रहे हैं।

देखो गांधी जी के आह्वान का असर कि भगत सिंह भी स्कूल छोड़ देते हैं। अभी दसवीं नहीं की थी उन्होंने। उसके बाद नौजवानों को कहते कि देखो ये काम तो हो नहीं पाया क्योंकि मैंने कहा था कि स्वराज नौ महीने में आ जाएगा लेकिन कुछ समस्याएँ हैं हमारे समाज की अगर वो ठीक नहीं होती तो हमारे स्वराज का कोई मतलब नहीं होगा और वो क्या हैं? यहाँ पर धर्मों के नाम पे हमारे समाज में टकराव पैदा हो गया है। यहाँ पर हम एक तिहाई लोगों को इन्सानी हक नहीं देते। उन्हें अछूत कहकर दूर रखते हैं। तीसरा, नौजवान लड़के-लड़कियां कहाँ हैं?

ये उस सारे आंदोलन का विश्लेषण था। बाद में भगत सिंह ने 'नौजवान भारत सभा' जब बनायी। ये बड़ा मजेदार है कि गांधी जी से मिलाने के लिए उनके पिताजी बेलगाँव कांग्रेस लेकर गये थे। जब सन् 1923-24 की कांग्रेस हुई बेलगांव में। भगत सिंह घर से दौड़ चुके थे। उनके पिताजी को लगा ये 16 साल का लड़का घर से भाग रहा है इसको ये तो समझाएं कि लीडर कैसे बना जाता है तो उनको सुभाष चंद्र बोस से मिलाया कि देखो ये नौजवान है, ये भी कॉलेज से निकाल दिया गया था, लेकिन इनके पिता ने इनकी एक परीक्षा ली, कि तुम जाओ। मैं इंग्लैंड तुम्हें भेज देता हूँ तुम ICS बनके दिखाओ तो मुझे एतबार आएगा कि तुममें कुछ क्षमता है। नहीं तो घर पर पढ़ने से तो नहीं बनेंगे। वो ICS बनें और बाद में ICS की सेवा में शामिल नहीं हुए, क्यों? उन्होंने अपने पिता को लिखा अपने बड़े भाई के जरिये कि मेरे पिता जी ने मुझे एक परीक्षा दी थी जो मैंने पास कर ली है, मेरा चौथे नम्बर पे ICS की सूची में नाम है लेकिन पिता जी ने ये भी कहा था कि गुलामी पर हस्ताक्षर नहीं करने। इसीलिए मैं नौकरी नहीं कर रहा क्योंकि वो गुलामी होगी।

ये असर और उसके बाद फिर कौमी महाविद्यालयों का बनना। क्योंकि उन्होंने कहा कि आप वापिस कॉलेज जाइए भगत सिंह कहते कि वो तो छोड़ आए। अब कोई नया तरीका बताइए पढ़ने का। उस वक्त लाला लाजपत राय जी ने नेशनल कॉलेज बनाया और भगत सिंह का स्पेशल टैस्ट हुआ उसमें पढ़ने के लिए।

भगत सिंह जब नेशनल कॉलेज में आए तो उनका पढ़ने का दौर शुरू होता है और इन दिनों मुझे एक बड़ी मजेदार रिपोर्ट मिली शायद आप सबके लिए भी ये नई जानकारी हो कि लाहौर ने 4 नोबल प्राइज विजेता पैदा किए हैं कलकत्ते ने 6 किए हैं।

लाहौर और कलकत्ते में साँझ क्या थी कि कलकत्ते में जनता के लिए विज्ञान बंगला भाषा में पढाई जाती थी। सत्यन बोस बहुत बड़े वैज्ञानिक हैं, उनका सारा

लेखन बंगला में हैं। जगदीश चन्द्र बोस ने कहा कि मेरे यहाँ जो शोध होगी उसका कोई पेटंट नहीं होगा और वो आप लोगों को बंगाली में समझाएंगे कि उनके लिए क्या बना उसमें से। लोगों के साथ उसका जुड़ना और यही लाहौर में है।

भगत सिंह को जो धरातल मिला वैज्ञानिक सोच का, वो वहाँ के रुचिराम साहनी के पांच सौ पंजाबी के भाषण हैं। आम आदमी की जिन्दगी के विज्ञान की पढ़ाई होती थी। एक सोचने का तरीका मिला। साइंस का मतलब एक सोचने का तरीका है कि आप एक सवाल करते हैं सवाल का भी फिर एक जवाब खोजते हैं। यहीं पर जो साझा जमीन है। अगर संक्षेप में उसे कहूँ, जो मेरा विचार समग्र मंथन करने के बाद बना कि भगत सिंह गांधी के पूरक हैं।कैसे? वहाँ पर एक मजेदार बात ये है कि गांधी जी की क्रांतिकारियों के साथ बेलगांव कांग्रेस के बाद एक बहस है। उस बहस का निचोड़ क्या है? मैंने पहले कहा कि पहले ये तीन समस्याओं का हल निकालो फिर मेरे से स्वराज की बात करना। उस विचार को लेकर भगत सिंह नौजवान भारत सभा बनाते हैं।

नौजवान भारत सभा के यही तीन बिंदू थे कि नौजवानों के दिमाग में जात-पात और धर्म का प्रश्न है इसको हटाया जाए, तब हम आगे बढ़ सकते हैं। वो जो बात गाँधी जी ने परिभाषित की उसको भगत सिंह ने आगे बढ़ाया। इस तरह यह पूरकता है। गांधी जी से जब पूछा गया कि आप जब सत्याग्रही थे, आपने कुछ सिद्धांत दिए थे। वो कहते कि मैं अब 1925 में राजनीतिज्ञ हो गया हूँ। सत्याग्रही का मतलब था कि मैं एक सामाजिक कार्यकर्त्ता के तौर पर एक ऐसा समाज खड़ा कर दूंगा जो ब्रिटिश राज को खत्म करके एक नया समाज बनाएगा। लेकिन अब मुझे समझ लगी कि जब तक आप राजनीतिक भागीदारी नहीं करते तो यह मुश्किल है।

उस वक्त भगत सिंह ने कहा कि जो उन्होंने उसूल बनाए हैं वो तो ठीक हैं। अगर आप भगत सिंह को पढ़ें कि भगत सिंह खुद चलकर सेंट्रल असेंबली में गए, वो ड्रामा किया ताकि उनको सुना जाए, कहीं ये ना हो कि छोड़ दें तो इसीलिए उन्होंने वो धुंए वाला बम्ब फेंका वहां पर और बाद में जो गांधी जी ने कहा था कि मेरा सत्याग्रही अगर किसी कानून को नहीं मानता उसको तोड़ेगा और फिर कहेगा कि मुझे सजा दो। भगत सिंह उस पर क्रिटिक करते हैं कि गांधी जी ने पूरा नहीं पढ़ाया उनको। वो वहाँ पर अपनी राजनीतिक बात नहीं करते, कानून तोड़ते हैं और चुपके से सजा भुगत लेते हैं। उसको राजनीतिक मंच के तौर पर प्रयोग किया जाना चाहिए, जो भगत सिंह और उसके साथी बी. के. दत्त ने बड़ी खूबसूरती से किया।

भगत सिंह आलोचना कर रहे हैं कि आपने सम्पूर्ण आज़ादी तो कह दी लेकिन सम्पूर्ण आज़ादी का जो भाव है, लोगों को क्या मिलेगा उसमें? आप ये कह कर कि वहाँ भ्रष्टाचार नहीं होगी, शराबबंदी होगी, ये बहुत ऊपरी बातें हैं। उनके जीवन में बराबरी लाने वाली कोई चीज या उन्हें हक मिलेगा या नहीं मिलेगा? यह मूलभूत अधिकारों का प्रस्ताव है, कराची कांग्रेस में पेश किया गया और यह हमने आयरलैंड से सीखा और जवाहर लाल नेहरु जी जो कि अध्यक्ष थे, उन्होंने उसे पेश किया।

दूसरा ये है कि अगर आपके पास कोई और ताक़त नहीं है, तो आत्मिक ताक़त प्रयोग करिए। जैसे ही वो मुकदमा खत्म हुआ उन्होंने भूख हड़ताल शुरु कर दी। जिसका जिक्र मैंने किया कि कर्नाटक के गाँव तक वो भावना पहुंची है। वो जतिन दास को याद कर रहे हैं जिन्होंने उस भूख हड़ताल के बाद शहादत दी थी और उसमें पूरा रुपांतरण किया था।

गांधी जी बड़ा आह्वान कर रहे हैं कि नौजवान किधर जा रहा है। उसी के लिए स्थगन था। सम्पूर्ण आज़ादी का प्रस्ताव कलकत्ता कांग्रेस में लाया गया था। गांधी जी ने एक साल का समय लिया कि चलो एक साल ब्रिटिश को देते हैं। अगर वो डोमिनियन स्टेटस भी दे दें तो फिर सम्पूर्ण आज़ादी की बात बाद में कर लेंगे। वो 'बाद' जो है लाहौर कांग्रेस में हुई, मतलब दिसम्बर 1929 में। वहाँ पर ये प्रस्ताव पारित हुआ कि सम्पूर्ण आज़ादी की मांग होगी।

आपको ये याद होना चाहिए कि 26 जनवरी को संविधान क्यों लागू किया गया? क्योंकि 26 जनवरी हमारा इरादा था कि भारत में सम्पूर्ण आज़ादी आएगी और उस

सम्पूर्ण आज़ादी की शपथ गाँधी जी ने ली। उसका पहला पैरा मैं आपको सुना देता हूँ: "जो सरकार लोगों को विद्या नहीं दे सकती, जो सरकार लोगों की सेहत का प्रबंध नहीं कर सकती, जो नौजवानों को नौकरी नहीं दे सकती, जो सरकार लोगों को सिर ढंकने के लिए छत नहीं दे सकती उस सरकार को हटाने का ही नहीं समाप्त (abolish) करने का हक़ है। abolish शब्द गाँधी जी ने लिखा, क्योंकि वो जो पूरी गति (मोमेंटम) बनी और उसे भगत सिंह दूसरी तरह परिभाषित करते हैं।

गांधी जी तो बड़ा महत्वपूर्ण बिन्दु उठा रहे हैं। क्योंकि जो गोलमेज कोंफ्रेंस थी उसपे अंग्रेज ने यह कह दिया कि हम दलितों को आरक्षण दे देंगे। गांधी जी कहते कि मुझे यह चिंता है कि अगर अंग्रेजों ने यह आरक्षण दिया, तो ये जो हमारा समाज है यह तो इन्हें जिन्दा नहीं रहने देगा। इसीलिए उसका सिर्फ एक ही हल है कि यह जो आरक्षण है वो हम इस समाज से दिलवाएं। मालवीय जी से उनकी टकराहट हुई क्योंकि मालवीय जी के साथ मिलकर भूख हड़ताल किया है उन्होंने। मालवीय जी जब भी उनसे मिलने आते तो गांधी जी कहते कि भाई अंग्रेज यह आरक्षण क्यों दे, आप समाज मिलकर क्यों नहीं देते?

मुझे लगता है कि उसमें एक शब्द बड़ा महत्वपूर्ण है, वो कहते हैं कि "हम कौमी लहर के अगुआ के तौर पर हैं उसके लिए रास्ता बना रहे हैं।" यह मुझे बड़ा मजेदार लगा कि कराची कांग्रेस में ही दो प्रस्ताव पारित हुए क्योंकि भगत सिंह आलोचना कर रहे हैं कि आपने सम्पूर्ण आज़ादी तो कह दी लेकिन सम्पूर्ण आज़ादी का जो भाव है, लोगों को क्या मिलेगा उसमें? आप ये कह कर कि वहाँ भ्रष्टाचार नहीं होगी, शराबबंदी होगी, ये बहुत ऊपरी बातें हैं। उनके जीवन में बराबरी लाने वाली कोई चीज या उन्हें हक मिलेगा या नहीं मिलेगा? यह मूलभूत अधिकारों का प्रस्ताव है, कराची कांग्रेस में पेश किया गया और यह हमने आयरलैंड से सीखा और जवाहर लाल नेहरु जी ने (जो कि अध्यक्ष थे) उसे पेश किया।

दूसरी जो बहुत महत्वपूर्ण बात है, तिरंगा झंडा तीन मूल्यों के साथ वहीं कराची कांग्रेस में अपनाया गया। उन्होंने कहा कि ये तीन रंग, तीन सामाजिक स्तम्भों के रंग हैं जिन पर समाज आगे बढ़ता है और वो हैं समता, स्वतंत्रता, भाईचारा (Equality, Liberty and Fraternity)। जो इसकी प्रस्तावना है, मैं समझता हूँ कि वो इसको ट्रांसलेट करता है। उसके साथ सामाजिक न्याय वाली बात वो आ गयी। इसीलिए उस आज़ादी की लहर का वो हिस्सा जिसने हमें यह मूल आधार दिया जिसे आज हम संवैधानिक चेतना (Spirit of Constitution) कहते हैं, मतलब वो रुह है उसकी। उस विधेयक में से यह निकला।

भगत सिंह के बारे में एक बात और जिसे हमें ज्यादा जानना चाहिए। भगत सिंह और बी. के. दत्त ने अपना जो बयान दिया असेम्बली में उसमें उन्होंने अपने आप को परिभाषित किया कि "हम बड़ी नम्रता से आपको यह बताना चाहते हैं कि हम इतिहास के बहुत गंभीर विद्यार्थी हैं, और हमने अपने लोगों की हालत को भी बड़ी गंभीरता से देखा है और उनकी आशाओं को लेकर हम चल रहे हैं।" तो यह साझी ज़मीन है, यानी कि ये तीनों शब्द भगत सिंह, महात्मा गांधी और आम्बेडकर साहब।

आम्बेडकर साहब के बारे आपको मालूम है कि उन्होंने डबल D.Sc. किया। वो कानून के D.Sc. थे, उनसे उनकी तसल्ली नहीं हुई तो उन्होंने वित्त में D.Sc. किया। क्योंकि जो साम्राज्यवाद है वो वित्त से चलता है। यहाँ पर हमें इसमें लगता है कि आम्बेडकर साहब का गहरा सरोकार था, क्योंकि इतना पढ़ने के बाद भी उनको इस समाज ने वकालत नहीं करने दी। उनको लगा कि मैं अगर इतना पढ़ने के बाद भी अगर आजाद नहीं हो पाया तो मुझे कुछ अपने लोगों के लिए करना चाहिए। उसके बाद उन्होंने यह निश्चय किया कि मेरे जो लोग हैं उनका हक सुनिश्चित होना चाहिए। हमारे नए-नए जो आम्बेडकर को पढ़ने वाले हैं वो कई दफा यह कहते पाए जाते हैं कि वो एक साइमन कमीशन के खिलाफ था एक हक में था लेकिन, कहीं पर भी उन्होंने साइमन कमीशन के हक में बात नहीं की। उन्होंने यह कहा कि अगर कोई बात होने वाली है तो मेरे लोगों का जो हक है उसको मैं सुरक्षित करुं। उसमें जो सबसे खूबसूरत बात जो मुझे लगी, मैंने दोबारा पूना पैक्ट कि पूरी कोरेंस्पोंडेस जो गांधी जी की चल रही है वो पढ़ी तो मुझे लगा कि गांधी जी तो बड़ा महत्वपूर्ण बिन्दु उठा रहे हैं। क्योंकि जो गोलमेज कोंफ्रेंस थी उसपे अंग्रेज ने यह कह

दिया कि हम दलितों को आरक्षण दे देंगे। गांधी जी कहते कि मुझे यह चिंता है कि अगर अंग्रेजों ने यह आरक्षण दिया, तो ये जो हमारा समाज है यह तो इन्हें जिन्दा नहीं रहने देगा। इसीलिए उसका सिर्फ एक ही हल है कि यह जो आरक्षण है वो हम इस समाज से दिलवाएं। मालवीय जी से उनकी टकराहट हुई क्योंकि मालवीय जी के साथ मिलकर भूख हड़ताल किया है उन्होंने। मालवीय जी जब भी उनसे मिलने आते तो गांधी जी कहते कि भाई अंग्रेज यह आरक्षण क्यों दे, आप समाज मिलकर क्यों नहीं देते?

पूना पैक्ट के बारे में अक्सर गांधी बनाम आम्बेडकर कहा जाता है परन्तु गाँधी ने इसमें एक बहुत बड़ी भूमिका अदा की जिसे बाद में आम्बेडकर जी ने खुद इसे माना। उसके बाद एक बड़ा आंदोलन चला, दलितों

को मंदिरों में जाने दिया गया, पानी की लड़ाई उसे पहले आंबेडकर साहब लड़ चुके थे, क्योंकि मंदिरों से ज्यादा तो पानी कि सांझ है, कि कहीं अगर साझा पानी है तो उसमें हमें मिले।

इसी में एक मजेदार बात है जो आज के लिए भी है, गाँधी और मुंजे के जो पत्र हैं वो काफी पठनीय हैं; गांधी जी मुंजे को लिखते हैं कि 'आप बहुत शैतान लोग हैं, अपने मन की बात आप मेरे नाम पर करते हैं।' क्योंकि मुंजे, सावरकर आज की पूरी मानसिक परिस्थिति में है। वो कहते है कि आप कहते हैं कि जो अछूत हैं वो तो हिन्दू समाज का नहीं छुटने वाला रंग है, इसको हटाया नहीं जा सकता, अगर आपका समाज ये मानता है तो उस समाज से मुझे माफ़ कर दीजिए। मैं उससे छुट्टी लेता हूँ।ये गांधी जी के मुंजे को पत्र हैं। लगातार इन समस्याओं पर और किसी ने बड़ा ठीक कहा है कि गांधी जी अगर वर्ण-व्यवस्था से सीधा टकराते तो उनको भी कोई और न मिलता लेकिन उन्होंने उसकी सबसे कमजोर कड़ी जो है वो ली और उससे संघर्ष किया।

तीसरी बात जो है कि,मैंने आंबेडकर साहब को भी काफी पढ़ने कि कोशिश की, तो मुझे एक चीज लगी कि वो सिर्फ इतने पर ही नहीं हैं। मुझे एक उक्ति मिली जो एक अंग्रेज इतिहासकार G.W. FORREST की है, वो 1904 में लिख रहे हैं। G.W. FORREST ने सन् 1857 के मूल दस्तावेज देखे क्योंकि वो उस वक्त इलाहाबाद में था, उसके बाद वह कहता है कि हम सब इतिहासकार और प्रशासनिक लोग सन् 1857 से एक सबक सीखते हैं कि अगर भारत में ब्राह्मण और शूद्र इकट्ठे हो गये और हिन्दू और मुसलमान इकट्ठे हो गये तो आपका यहाँ रहना नामुमकिन है। यही कारण है कि सन् 1905 में कर्जन ने बंगाल-विभाजन किया।

ये भी एक बात समझने वाली है कि 1904 में ये निष्कर्ष निकाल लिया जाता है हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन म्युटिनी किताब में। सन् 1905 में ये पहला तजुर्बा किया जाता है कि हिन्दू और मुस्लिम को अलग अलग क्षेत्रों में बांटा जाए और वो वापस कब होता है जब 1909 में जो अलग मतदाता सुधार दे दिए जाते हैं।

उसमें बड़ी एक मजेदार बात है कि उस सुधार पे हमारे लायलपुर का एक जिला मजिस्ट्रेट लिखता है, वो कहता है, हम आगे से बहुत सयाने हो गये हैं, पहले हम हिन्दुओं को मुसलमानों से लड़ाते थे अब हमने यह तरीका खोज लिया है कि अब हम हिन्दुओं को हिन्दुओं से लड़वायेंगे और मुसलमानों को मुसलमानों से, क्योंकि जब वो अपने-अपने चुनाव क्षेत्रों में लड़ेंगे तो दो ग्रुप बनेंगे।

गाँधी जी का वो युग है कि 1916 में लखनऊ पैक्ट जो है तिलक, एनी बेसेंट और मुस्लिम लीग में होता है जिसमें हिन्दू मुस्लिम एकता की बात होती है वो हिन्दू मुस्लिम एकता जो आपको जलियांवाला बाग में मिलेगी। जलियांवाला बाग़ में राम नवमी एक साझे त्यौहार के तौर पर मनाई जाती है। उस राम नवमी के जुलूस का नेतृत्व करते हैं डॉ. बशीर और उनको बाद में इसलिए फांसी की सजा दे दी जाती है कि उन्होंने उसका नेतृत्व किया था।

वहाँ पर कोई हिन्दू मुस्लिम पानी नहीं है, और उसके पहले एक बहुत मजेदार बात हुई, एक आम बहस हुई कि लोगों की भूख मिटाने के लिए क्या करें? जो अंग्रेज समर्थक गुट था उन्होंने कहा कि जिला मजिस्ट्रेट के पास चलते हैं, उसके पास सत्ता है वो उचित मूल्य की दुकानें खुलवा देगा। दूसरे कहते ये हमारी समस्या है ये उसकी समस्या नहीं है। इसलिए वहाँ लंगर लगना शुरु हुआ और उस लंगर ने इतनी एकता बढ़ा दी कि धर्म और जात सबसे मुक्ति हो गयी थी। इसीलिए 10 अप्रैल को पहली दफा लाहौर में भी और अमृतसर में भी गोली चलाई गयी और 20-20 लोग मारे गए। क्योंकि वो एकता के खिलाफ लड़ाई हो रही थी। इसको गांधी जी हिन्दू मुस्लिम एकता की सबसे अधिक सम्भावना देख रहे हैं। इसलिए पूरी लहर में हम इसकी पूरकता को देखेंगे कि अगर भगत सिंह कर रहे हैं तो इसको वो एक तार्किक परिणीति तक ले जा रहे हैं। अम्बेडकर साहब जो हैं, आखिर में जो संदेश उन्होंने दिया वो तीन शब्द का है; शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो (EDUCATE ORGANISE AND AGITATE) पहले पढ़ो-समझो, फिर अपने आप को संगठित करो और फिर आप अपने हक के लिए लड़ाई करो।

अहिंसा के बारे में भगत सिंह कहते हैं कि mass movement have to be non violent लेकिन जब वो रुकावट आएगी, यानी जिसके खिलाफ आपका संघर्ष है वो इतना क्रूर है कि वो आपको उकसाएगा ही। उसी से मुझे लगा कि दिल्ली के दंगों में भी और उससे पहले हरियाणा के दंगों में भी जिसे जाट आंदोलन कहते हैं, कि 36 घंटे के लिए आप असुरक्षित हैं। 36 घंटे के लिए कोई राज्य नामक संस्था ने काम नहीं किया। फिर नरसंहार होता है, हिंसा होती है, दिल्ली में भी यही हुआ। इसलिए मुझे लगा कि 36 घंटे लोगों को अपने आप की रक्षा करने के लिए तैयार होना होगा। कुछ मोहल्लों में हिन्दू-सिक्ख-मुस्लिमों ने आपस में मिलकर दंगे नहीं होने दिए।

आज का संदर्भ है और मुझे लगा कि जो संविधान में बाबा साहेब आम्बेडकर का अंतिम भाषण है वो जरूर हमें पढ़ना चाहिए। 25 नवम्बर को उन्होंने संविधान सभा में जो भाषण दिया उसमें उन्होंने कहा कि ''लोग कहते हैं कि अच्छा संविधान है कोई कहता है कि खराब है तो मैं ये बता दूँ कि जो हमारी साझी समझदारी बन सकी और उसमें कांग्रेस ने ये मदद की जो बड़े अनुशासित लोग थे जिन्होंने इसे पूर्ण करने में मदद दी लेकिन कल को जो राज करेंगे अगर वो खराब हुए तो अच्छे संविधान को भी खराब बना देंगे और अगर अच्छे हुए तो खराब संविधान में से भी अच्छा निकल सकता है''। वो कहते कि ''मुझे फ़िक्र इसका नहीं है, मुझे फ़िक्र ये है कि भारत एक दफा नहीं, बल्कि कई दफा अपनी आज़ादी खो चुका है आज जो हमें मिला है ये कैसे खोएंगे, कि हमारे अपने ही लोग इसके खिलाफ जाएंगे।'' इसी पर भगत सिंह ने भी चेतावनी दी थी कि जब

''लोग कहते हैं कि अच्छा संविधान है कोई कहता है कि खराब है तो मैं ये बता दूँ कि जो हमारी साझी समझदारी बन सकी और उसमें कांग्रेस ने ये मदद की जो बड़े अनुशासित लोग थे जिन्होंने इसे पूर्ण करने में मदद दी लेकिन कल को जो राज करेंगे अगर वो खराब हुए तो अच्छे संविधान को भी खराब बना देंगे और अगर अच्छे हुए तो खराब संविधान में से भी अच्छा निकल सकता है''। वो कहते कि ''मुझे फ़िक्र इसका नहीं है, मुझे फ़िक्र ये है कि भारत एक दफा नहीं, बल्कि कई दफा अपनी आज़ादी खो चुका है आज जो हमें मिला है ये कैसे खोएंगे, कि हमारे अपने ही लोग इसके खिलाफ जाएंगे।''

सामाजिक तरक्की रुक जाएगी तो प्रतिक्रियावादी ताकतें भारी हो जाती हैं और वो जब भारी होती हैं, उससे बचने के लिए एक इंकलाबी जज्बे कि जरूरत होती है।

आज मुझे एक बड़ी खूबसूरत बात लगी कि फ्रांस में एक बहस हुई कि फ्रांस क्रांति में जो इंकलाबी संवेदना या जज्बा पैदा किया था या एक चेतना पैदा की थी उसको लेकर उन्होंने कहा कि चलो दुनिया में देखते हैं कि कहीं और भी ये चेतना या इंकलाबी भावना (यह इन्कलाब नहीं है, यह इंकलाबी भावना है, जिसमें आप लगातार काम करते हैं) है। देख कर वो इस निर्णय पर पहुंचे कि Bhagat Singh represent that revolutionary passion। वो किताब फ्रेंच भाषा में आई फिर अंग्रेजी में और उसके शीर्षक पर भगत सिंह थे। वही इंकलाबी पैशन आपको गांधी जी में भी मिलेगा क्योंकि उसमें निरन्तरता है। अंतिम

बात कि जब दंगे होते हैं तब मैंने गांधी जी से सवाल किया (सवाल करने चाहिए आपको भी) कि सन् 1946 में जब दंगे हुए थे वो पहले अहमदाबाद में हुए थे उसके बाद नोआखली में हुए। अहमदाबाद गांधी जी का घर है वहाँ पर पटेल साहब हैं, जो भारत के गृह मंत्री हैं और मोरारजी देसाई जो हैं वो बोम्बे प्रेसीडेंसी के प्रेसीडेंट थे। मैंने कहा कि गांधी जी क्या कर रहे थे तो मुझे गाँधी जी के 2 पत्र मिले जो उन्होंने मोरारजी देसाई को लिखे थे उन्होंने कहा कि भाई ये जो दंगे हो रहे हैं ये राजनीतिक काम है, आप राजनीतिज्ञों को वहाँ जाकर इसे सुधारना चाहिए।

मोरारजी देसाई लिखते हैं कि मैंने पटेल जी से भी पूछ लिया है वो कहते हैं कि नहीं नहीं हम वहाँ पुलिस भेजेंगे या आर्मी भेजेंगे। और अगला बहुत महत्वपूर्ण है वो कहते हैं कि अगर ये जो राजनितिक समस्या है आप इसे मिलिट्री और पुलिस से हल करना चाहेंगे तो आप मिलिट्री पुलिस के गुलाम हो जाएंगे और समस्या कभी हल नहीं होगी। ये जो संवेदना थी उसी को लेकर वो नौआखली गए। तो ये जो भावना है वो आपको अम्बेडकर साहब में भी मिलेगी, जो साझा जमीन है वो तीनों की इंकलाबी भावना है अपने लोगों के भले के लिए। हालाँकि भगत सिंह उस पर क्रिटिक करते हैं कि Gandhi ji a philanthropist यानी कि वो लोगों का भला चाहते हैं लेकिन भला चाहने से समाज बदलता नहीं है। समाज बदलने के लिए आपको एक वैज्ञानिक चेतना से लैस प्रगतिशील सामाजिक शक्ति (Scientifically oriented dynamic social force) चाहिए। यहाँ पर भगतसिंह परिभाषित करते हैं और वो सोशल प्रगतिशील सामाजिक शक्ति आम्बेडकर साहब ने पैदा की। मैंने वो भी पढ़ना चाहा जो उनकी पूरी 36 बिंदुओं का आखिरी भाषण है जो उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाने के वक्त दी, उसमें एक पैरा है कि जो आम आदमी है उसको कोई न कोई सहारा चाहिए ही और वो धर्म का सहारा लेकर चलता है लेकिन मैं कौन सा सहारा पकड़ाऊँ कि जिसको लेकर वो चल सकें। मैं समझता हूँ कि बौद्ध धर्म जो है वो बेहतर विकल्प है तो उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया।

अमर्त्य सेन का विश्लेषण है कि बौद्ध धर्म रहस्यवाद की जगह यथार्थवाद पर काम करता है। आज कनक तिवारी जी ने याद दिलवाई के. टी. शाह की। मुझे याद आया कि भगत सिंह ने अपनी जेल नोटबुक में एक पेज जो है वो रूसी क्रांति पर लगाया है और उस पर उन्होंने जो शीर्षक दिया है वो के.टी. शाह जी कि किताब है - द रशियन एक्सपेरिमेंट 1917-27, कि वहाँ क्या तजुर्बा हुआ है और उसी तजुर्बे से उन्होंने समाजवाद शब्द को जन्म दिया।

गैरबराबरी का हल तो बराबरी है। बराबरी भाईचारे के बिना नहीं आती। ये समानता है कि गांधी जी भी बराबरी की बात करते हैं और बाकी सब भी। मुझे यह बात बड़ी अच्छी लगी कि संविधान के पहले 51 अनुच्छेद जनता की जुबान में होने चाहिए और मैं काफी समय से बात कर रहा हूँ कि उसमें 2 ऐसे अनुच्छेद रख दिए गए हैं कि जिस पर न्यायालय निर्णय नहीं करेगी बल्कि सरकार की जनता के प्रति जो जिम्मेवारी है, वो Directive principle of state policy में है। उसका निर्णय अदालत नहीं करेगी बल्कि लोग करेंगे। मूलभूत कर्त्तव्य है कि संविधान की आत्मा की रक्षा करना और उसको बढ़ाना।

आज शाहीन बाग़ और पूरा आंदोलन संविधान को बचाने का आंदोलन है उसकी रूह को बचाने का आंदोलन है। दूसरी बात है आज़ादी की लड़ाई के संघर्ष में हमारे सामने जो आदर्श थे उन आदर्शों पर पहरा देना और उनको आगे बढ़ाना। इसमें गांधी, आंबेडकर और भगतसिंह इन तीनों का और हमें नेता जी सुभाष चंद्र बोस को भी इसमें शामिल करना चाहिए, क्योंकि उन पर बहुत कम काम हुआ है। नेता जी ने भगत सिंह का 2 फरवरी 1931 वाला कार्यक्रम पढ़ा, बंगाल में फैलाया और भगत सिंह का जो नारा था "DOWN WITH IMPERIALISM LONG LIVE REVOLUTION", उसको पूरा किया। उन्होंने रामगढ़ समानांतर कांग्रेस में कि साम्राज्यवाद से कोई समझोता नहीं, नो कम्प्रोमाइज विद इम्पियरेलिज्म।

मूलभूत कर्त्तव्यों में मानवता भी है कि हम इंसानियत की कद्रों को बढाएं। गांधी, आंबेडकर और भगतसिंह तीनों के आंदोलन के आधार पर हम सरकार को आज ये प्रश्न करने लग जाएं कि गैरबराबरी आज क्यों है? तीनों का यही उद्देश्य है कि उस भाईचारे को, उस बराबरी के सिद्धांत को कैसे लाना है?

धन्यवाद।

सबसे गरीब लोगों के हक के लिए लड़े गांधी, अंबेडकर व भगत सिंह

✦ प्रसून लतांत

चीन में एक कहावत है, आपको अगर 20-25 साल के लिए काम करना है तो आप दुकान खोलें, और अगर आपको 100-200 साल के लिए काम करना है तो मकान बनाएं। 1 मकान 100 साल तक चलता है। और अगर आपको 300-400 साल के लिए काम करना है तो खेती करो और अगर आपको हजारों हजारों साल तक काम करना है तो आप आदमी बनाने का काम कीजिए। यहाँ जो लोग मौजूद हैं, मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ कि हरियाणा सृजन उत्सव के माध्यम से आप लोग दुकान खोलने वाले, मकान बनाने वाले या खेती करने वाले लोग नहीं हैं, आप इंसान बनाने वाले लोग हैं और इंसान बनाने वाले लोगों के सामने आदर्श के रूप में इसी तरह के लोग होते हैं। सृजन उत्सव के जरिए आप शानदार काम कर रहे हैं और इस शानदार काम का संदेश भले देर से पहुंचे लेकिन बहुत दूर तक जाएगा। और मैं भी यहां इसीलिए आया हूँ कि मैं जब हिसार में था, चंडीगढ़ में था तो मुझे देस हरियाणा के बारे में चर्चा सुनने को मिलती थी, खबर आदि मिलती थी। आज यहां मैं आकर गए अपने विचारों को आपके सामने रख रहा हूँ यह मेरे लिए बहुत ही खुशनसीबी की बात है।

यह तीनों महानुभाव महात्मा गाँधी सरदार भगत सिंह और अंबेडकर। शाहीन बाग में जो एक आंदोलन चला है वहां इन तीनों महापुरुषों की तस्वीर एक साथ है। इससे पहले हमारे देश में भगत सिंह का कुनबा अलग चल रहा था, अंबेडकर साहब का कुनबा अलग चल रहा था और गाँधीजी का कुनबा चल अलग चल रहा है। उसमें भगत सिंह का कुनबा थोड़ा छोटा हो गया, गाँधीजी का कुनबा थोड़ा सिकुड़ गया लेकिन अंबेडकर साहब का कुनबा फैल गया। कल तक उनको सिर्फ दलितों का नेता बनाकर एक संकीर्ण चौखटे में रखा जा रहा था, लेकिन आज अंबेडकर साहब की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नेता के रूप में ख्याति फैल रही है।

जो हिंदू एकता के लिए षड़यंत्र करते हुए दिखाई पड़ते हैं देश में, वो लोग भी गाँधी जी को अपनी गोद में रखते हैं। वह लोग भी भगत सिंह को टोपी उतार के केसरिया रंग का पगड़ी पहना कर अपनी जेब में रखते हैं। वो लोग अंबेडकर को भी पास रख रहे हैं। यह लोग इन तीनों महापुरुषों को अपने स्वार्थ के लिए मुखौटा लगाकर जनता को धोखा दे रहे हैं। लेकिन शाहीन बाग में इन तीनों पुरुषों को एक ही कतार में रखकर इस देश में एक नई ताकत पैदा करने की कोशिश की गई है। यह एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना हो रही है। पहले कभी ऐसा नहीं होता था कि शाहीन बाग जैसे किसी एक जगह पर कोई आंदोलन हो और देश के 143 जगहों पर महिलाएं संघर्ष के लिए खड़ी थी जो इससे पहले कभी इस तरह से संघर्ष के व्यापक मैदान में नहीं उतरी थी।

गाँधी जी कहते थे मैं तो किसी के मारने से मरूंगा नहीं जब भी मेरी जरूरत किसी को होगी मैं कब्र से निकल आऊंगा। इस देश में गाँधी कई बार कब्र से निकले हैं। जब इंदिरा गाँधी ने आपातकाल लगाया तब गाँधी कब्र से निकले थे। जब अन्ना आंदोलन हुआ तब भी गाँधी पैदा हो गए थे। गाँधीजी समय-समय पर पैदा होते रहते हैं और मैं तो आपको बताऊंगा कि जब जयप्रकाश नारायण आंदोलन इस देश में हो रहा था उस आंदोलन में जयप्रकाश जी सर्वोदय नेता के रूप में नेतृत्व दे रहे थे। गाँधी के विचारों पर सब कुछ आगे बढ़ा रहे थे नौजवानों की भारी भागीदारी उस आंदोलन में थी और आंदोलन के दौरान नौजवान गाँधी जी के बताए रास्ते पर चल जरूर रहे थे लेकिन जगह-जगह पर भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा बना रहे थे, गाँधी जी की प्रतिमा नहीं बना रहे थे, गाँधी जी की प्रतिमा उनके मन में थी लेकिन जोश और आवेश, हिम्मत और उत्साह के लिए आज भी भगत सिंह

हमारे प्रतीक हैं। मैं तो समझता हूँ कि गाँधी जी की हत्या के बाद बहुत सारे लोगों ने कहा कि गाँधी जी 79 साल जिए थे तो पहाड़ पर उनकी 79 फीट ऊंची प्रतिमा बनाई जाए। आज वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा बना दिया लेकिन उस समय गाँधी जी की प्रतिमा नहीं बनी क्योंकि लोगों को लगा यह तो आडंबर होगा। गाँधी जी की इतनी बड़ी प्रतिमा बनाने से उनके विचारों की हत्या होगी। जो लोग प्रतिमा बनाना चाहते थे उनको हतोत्साहित कर दिया।

देश में जब नक्सलवादी आंदोलन चल रहा था। जिस क्षेत्र में नक्सलवादी आंदोलन चल रहा था मैं उस क्षेत्र में चला गया तो किसी ने कहा कि देखो यह गाँधी के विचार में विश्वास करता है तो एक नक्सलवादी ने फट से मुझे एक गाल पर थप्पड़ खींच कर मार दिया। बोला अरे गाँधी जी तो कहते थे कि एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल बढ़ा दो। मुझे ना जाने कैसे हिम्मत हुई बस मैंने दूसरा गाल बढ़ा दिया तो उसके साथियों ने उसको रोक लिया अरे नहीं नहीं और मत मारो। तब मुझे गाँधी समझ में आए की हिम्मत करना चाहिए। गाँधी की अहिंसा को कायरता के चौखटे में परोसने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन गाँधी की अहिंसा कायरता नहीं है। इस तरह मुझे गाँधी की बात का विश्वास हुआ। सत्ता में बने रहने के लिए 70 सालों में सरकारों ने महात्मा गाँधी का इतना दुरुपयोग किया कि मजबूती के बजाय मजबूरी का नाम महात्मा गाँधी हो गया।

आज मैं सोच रहा था कि मैं गाँधी जी की बात करने जा रहा हूँ तो कल शाम को जब सब्जी वाले ने देखा कि आज तो यह सब्जी खरीद नहीं रहा है तो बोला अरे आज सब्जी नहीं खरीद रहे हो तो मैंने कहा कि नहीं मुझे कल कुरुक्षेत्र जाना है। वह बोला कुरुक्षेत्र! वहां तो लड़ते हैं लोग, युद्ध करते हैं। उनके मन में महाभारत के कुरुक्षेत्र की कल्पना आ गई। मैं अगर हरियाणा कह देता तो शायद समझ जाते लेकिन जब मैंने कुरुक्षेत्र कह दिया तो उनको लगा कि शायद लड़ने वड़ने की जगह पर जा रहे हैं। मैं उसको कैसे बताता कि हम लड़ने के लिए तो जरूर जा रहे हैं, तीन तरह की लड़ाई होती है जो सबसे सर्वश्रेष्ठ लड़ाई होती है; बौद्धिक लड़ाई होती है उससे घटिया किस्म की जो लड़ाई होती है वह होती है; जो गाली गलौज के साथ होती है उससे भी घटिया स्तर की लड़ाई वह होती है; जब हम हथियार चलाते हैं। जब हम किसी को नष्ट करते हैं। सबसे बेहतर लड़ाई जो है वह वैचारिक लड़ाई होती है तो मैं उस सब्जी वाले को तो नहीं समझा सकता था कि मैं किस तरह की लड़ाई लड़ने के लिए कुरुक्षेत्र जा रहा हूँ लेकिन मुझे लगता है कि इस समय कुरुक्षेत्र में इस तरह का सृजन महोत्सव करके जो यह पहल की है इसकी आवाज पूरे देश

भारत के इतिहास को उलटकर देखिए सामंतों को लड़ना कहां पड़ा सामंत तो दमन करते थे, अत्याचार करते थे। देश में लड़ाई तो हमेशा सबसे पिछड़े दलित कमजोर लोगों ने की है। उसी का इतिहास है अंग्रेजों के आने से पहले यहां आदिवासियों ने लड़ाई लड़ी, बिरसा मुंडा का नाम लिया जाता है, मांझी का नाम लिया जाता

में पहुंचेगी क्योंकि आज साहित्य के नाम पर बहुत सारे उत्सव हो रहे हैं। कॉरपोरेट घराने के लोग वहां पहुंच रहे हैं साहित्य का कार्यक्रम है और साहित्य के श्रेष्ठ सृजनकारो को नहीं बुलाते हैं। घटिया स्तर के साहित्यकारों को बुलाते हैं। उसके बाद वहां गीतकार को बुला देंगे वहां फिल्म के हीरो हीरोइन को बुला देंगे और कहेंगे कि यह साहित्य महोत्सव हो रहा है। इस तरह से लोगों को भटकाया जाता है।

बोल्शेविक क्रांति के सूत्रधार लेनिन ने उस समय भारत में प्रखर लेखक एम.एन. रॉय को कहा था कि आप गाँधी जी का साथ दीजिए क्योंकि गाँधी जी के साथ पूरे देश के लोग हैं। गाँधी जी को इस देश की संस्कृति और प्रवृत्ति का भी पता था की आज़ादी की लड़ाई में यह जो जमींदार हैं, जो सामंत हैं तुम्हारे साथ नहीं चलेंगे। उनको लगा कि इस देश के जो अंतिम लोग हैं इस देश के जो गरीब से गरीब लोग हैं वही लड़ाई में शामिल हो सकते हैं और आज भारत के इतिहास को उलटकर देखिए सामंतों को लड़ना कहां पड़ा। सामंत तो दमन करते थे, अत्याचार करते थे। देश में लड़ाई तो हमेशा सबसे पिछड़े दलित कमजोर लोगों ने की है। उसी का इतिहास है अंग्रेजों के

आने से पहले यहां आदिवासियों ने लड़ाई लड़ी, बिरसा मुंडा का नाम लिया जाता है, मांझी का नाम लिया जाता है। 1857 में अगर क्रांति का बिगुल बजा था तो वह राष्ट्रभक्ति के लिए नहीं हुआ था। वह धर्म बचाने के लिए लड़ाई हो गई। क्योंकि धर्म के आधार पर उसमें बताया गया कि इसमें कोई सूअर का गोश्त लगा हुआ है इसलिए हम इसमें हाथ नहीं लगाएंगे। इसलिए 1857 में धार्मिक कारणों से वह सूत्रपात हो गया और वह लड़ाई आगे बढ़ गई तो गाँधी जी ने अपने साथ हमेशा गरीब से गरीब लोगों को जोड़ा और जब नमक सत्याग्रह किया उन्होंने तो उसमें भी यही था लोग कहते हैं कि देश में भ्रष्टाचार की शुरुआत आपसे हुई जब से अंग्रेजों ने नमक पर टैक्स लगाया। नमक को गरीब भी खाता था अमीर भी खाता था। नमक आंदोलन के बाद तो उन्होंने देश में काफी लंबे समय तक हरिजन उद्धार का कार्यक्रम चलाया। मैं उड़ीसा में एक जगह गया तो मैंने गाँधी जी का एक मंदिर देखा तो मैंने उनसे पूछा कि यह मंदिर कब बना, कैसे बना तो उन्होंने कहा कि जब हरिजन उद्धार की यात्रा के दौरान इस जगह आए थे तो उन्होंने यहां के मंदिरों को हमारे लिए खुलवाने की कोशिश की तो सामंतों ने हमारे लिए मंदिर के दरवाजे नहीं खोले तो हम लोगों ने मिलकर गाँधी जी का ही मंदिर बना लिया और गाँधी जी को ही पूजने लगे।

गाँधी जी देश में सबसे पिछड़े दलित लोगों के हक में आवाज उठाए थे। यही काम बाबा साहेब आंबेडकर ने भी किया कि उन्होंने देश के गरीब लोगों के लिए संघर्ष किया। भगत सिंह की भी यही ख्वाहिश थी, यही सपना था कि सब को आज़ादी मिले। सब को सब कुछ मिले। नेहरू और अंबेडकर साहिब महात्मा गाँधी से हमेशा असहमत होते रहे। बहुत तरह की विकास की नीतियों आदि को लेकर लेकिन जब शांति स्थापना की बात आती थी तब नेहरू और अंबेडकर, गाँधी जी की अहिंसा पर ही जोर देते, उसी तरीके के इस्तेमाल की वकालत करते थे।

अंबेडकर साहब ने जब महार में सत्याग्रह किया, तालाब में जब पानी नहीं पीने के लिए दिया जाता था तो वहां जो सत्याग्रह कर रहे थे बाबा साहब अंबेडकर के नेतृत्व में, उन पर स्वर्णों की तरफ से हमला हुआ था तो अंबेडकर साहब ने उस समय कहा था कि हमको प्रतिघात नहीं करना है, हमको उन पर हमला नहीं करना है हम अहिंसात्मक तरीके से इनका प्रतिरोध करेंगे। वहां भी गाँधी जी और अंबेडकर साहेब की जो नीति थी, एक होती थी। जब उन्होंने बौद्ध धर्म को ग्रहण किया तो बौद्ध धर्म तो अहिंसा परमो धर्म की बात करते हैं तो अंबेडकर साहब ने जब गौतम बुद्ध के धर्म को अपना लिया इसका मतलब है कि उन्होंने अहिंसा को अपनाया, तो वहां भी वह गाँधी जी की विचारधारा के साथ हैं। इस तरह से जवाब खोजने की कोशिश करेंगे तो तीनों महापुरुषों की सांझी विचारधारा को आजमाने की अपनाने की जरूरत है। हिंदू-एकता (सॉलिडिट्री) वाले लोग गाँधी जी को कभी सुभाष जी से लड़ा देते हैं, गाँधी जी को कभी भगत सिंह से लड़ा देते हैं, गाँधी जी को कभी नेहरू से लड़ा देते हैं, गाँधी जी को कभी अंबेडकर से लड़ा देते हैं। ढ़ेर सारे मतभेदों की लिस्ट उनके पास है। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को अध्यक्ष नहीं बनने दिया। लेकिन आप देखिए उससे पहले नेता जी जब अध्यक्ष बने थे उनको गाँधी जी ने ही बनवाया था। संविधान सभा के अध्यक्ष अंबेडकर जी बने तो वह गाँधी जी की सिफारिश पर बने थे। पहले वाला जो अध्यक्ष बना है उसकी चर्चा नहीं करेंगे, दूसरे की जिसमें सीतारमैय्या की हार मेरी हार है बोल दिया तो उस पर जाकर प्रचारित करेंगे। तो आज जरूरत है इन तीनों महापुरुषों के बारे में ठीक से बहुत सारी चीजें सामने लाने की।

त्रिमूर्ति राह दिखाएगी

✦ सुभाष गाताड़े

'गांधी, अंबेडकर और भगत सिंह के चिंतन की सांझी जमीन' विषय पर डॉ. भीम राव आंबेडकर के विचारों के विशेष संदर्भ में विचार रखने के लिए प्रसिद्ध दलित चिंतक सुभाष गाताड़े जी को आमंत्रित किया गया था। किन्हीं कारणों से वे सृजन उत्सव में नहीं पहुंच पाए। उन्होंने लिखित संदेश भेजा था जिसे देस हरियाणा के संपादक डॉ. सुभाष चन्द्र ने प्रस्तुत किया। उनका यह संदेश यहां दिया जा रहा है। - सं.

मेरे खयाल से यह बेहद माकूल वक्त है जब हम इस गुफ़्तगू के लिए यहां बैठे हैं, बातचीत के लिए एकत्रित हैं। हक़ीकत यही है कि आज की तारीख़ में हिन्दोस्तां की सरजमीं पर गांधी, अम्बेडकर और भगतसिंह इन तीनों को माननेवाले लोग या उनके दिखाये रास्ते पर चलनेवाले संगठन अपने आप को एक ही स्थिति में पा रहे हैं। वह एक तरह से समूची निर्णय प्रक्रियाओं से बाहर कर दिए गए हैं, सभी हाशिये पर हैं। वजह साफ है कि बीते पांच साल से अधिक समय से राजनीति के शीर्ष पर एवं समाज पर ऐसे विचारों, ऐसी ताकतों का बोलबाला है जिन्हें न गांधी, न अम्बेडकर और न ही भगत सिंह के असली योगदानों से कुछ लेना देना है।

ये वे ताकतें हैं जो भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का इरादा रखती हैं। ऐसी ताकतें जिन्होंने आज़ादी के आन्दोलन से दूरी बनाए रखी थी, ऐसी ताकतें जिन्होंने एक व्यक्ति और एक मत/वोट के आधार पर संविधान बनाने का विरोध किया और इस बात पर जोर दिया था कि नया संविधान बनाने की जरूरत क्या है, हमारे पास मनुस्मृति है ना !

इतिहास गवाह है कि धर्म और राजनीति का घालमेल करनेवाली इन संकीर्णमना ताकतों को गांधी से इतनी नफरत थी कि उन्हें उनकी हत्या करने से भी सुकून नहीं मिला और वह आज भी गांधी-हत्या को अभिनीत करती रहती हैं और गांधी के हत्यारे गोड़से के मंदिर बनाने के लिए बेचैन रहती हैं। संसद के पटल पर गोड़से को देशभक्त घोषित करती रहती हैं।

एक तरफ जहां डा. अम्बेडकर जाति-उन्मूलन की बात करते थे तो इन प्रतिक्रियावादी ताकतों को वर्णाश्रम की तारीफ करते रहने से कोई दिक्कत नहीं हैं। अंग्रेजों की गुलामी के खिलाफ जहां तमाम इन्कलाबी अपनी जिन्दगियों को दांव पर लगा रहे थे, भगत सिंह और उनके साथी फांसी के फन्दे पर झूलने के लिए तैयार थे और उन्हीं दिनों यह ताकतें हिन्दू और मुसलमानों को बांटने के काम में मसरुफ थीं।समय का फेर देखिये हिन्दू राष्ट्र की हिमायती यही ताकतें अपने आप को इन तीनों के सच्चे वारिस के तौर पर पेश करने में संकोच नहीं करती हैं।

सभागार में बैठा हर शख्स इस बात की गवाही देगा कि मुल्क के सूरतेहाल इस कदर ख़राब होंगें, ऐसा शायद ही किसी ने सोचा होगा। मनुष्य को मनुष्य न समझने वाली, उसे उसकी धार्मिक, सामुदायिक पहचान तक न्यूनीकृत करनेवाली ये ताकतें इस कदर हावी होंगी यह बात किसी के खयालों में भी नहीं थी।

एक वक्त था जब सत्तर साल पहले आज़ाद हुए मुल्कों की फेहरिस्त में भारत का नाम आगे था, पिछड़े होने के बावजूद यहां जनतंत्र की जड़ कायम करने में सरकार की सफलता की तारीफ हो रही थी और आज वहीं हम उल्टी दिशा में चल पड़े हैं। जनतंत्र बहुसंख्यकतंत्र में (जहां अल्पमत की हर आवाज़ को दबाया जाता है) तब्दील होता दिख रहा है।

गौरतलब है कि यह ताकतें महज सत्ता की बागडोर ही नहीं संभाल रही हैं, जनतंत्र के सुचारु रुप से संचालन करने के लिए बनी तमाम संस्थाओं पर भी उन्होंने अपना अधिकार कायम किया है।

इन ताकतों को जिस किस्म की सामाजिक वैधता मिली है, वह भी अपने आप अचम्भित करनेवाली है। किसी ने ठीक ही कहा है कि आज का दौर आपातकाल से भी बदतर है। आपातकाल में महज सरकारी दमन के लिए तैयार रहना था आज जनता का अच्छा खासा हिस्सा उनके साथ नत्थी हो गया है।

प्रश्न उठता है कि आज जब भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का प्रोजेक्ट निर्णायक तौर पर आगे बढ़ रहा है तब यह त्रिमूर्ति किस तरह हमारे आनेवाले पथ को आलोकित कर सकती है। इस बात को देखते हुए कि इन तीनों ने - भले ही कई अहम मसलों पर इनके चिन्तन में फर्क था - अपने-अपने स्तर पर साम्प्रदायिकता का विरोध किया था, मनुष्य तथा मनुष्य के बीच दरार पैदा करने के लिए मजहब अर्थात धर्म के इस्तेमाल का विरोध किया था, यह तीनों हमारी राह दिखा सकते हैं।

गांधी जो आज़ादी के आन्दोलन के कर्णधार थे उन्होंने अपने अन्तिम संघर्ष की धार बहुसंख्यक साम्प्रदायिकता की तरफ मोड़ी। और इसी प्रयास में वह शहीद हुए। बहुत कम भारतीय होंगे जो उनकी इस छवि से या उनके संघर्ष से सम्मोहित नहीं होंगे। अपने आखिरी दिनों में उन्हें इस बात का पूरा इल्म था कि वह कभी भी मारे जा सकते हैं, लेकिन वे अपने पथ पर अडिग रहे। बंटवारे के उन रक्तरंजित दिनों में (जबकि एक कौम के लोग दूसरे कौम के लोगों को दुश्मन बनते दिख रहे थे) उन्होंने खुल्लमखुल्ला ऐलान किया कि अल्पमत की हिफाजत के लिए वह आखरी सांस तक संघर्ष करेंगे, वह हिन्दोस्तां में मुस्लिमपरस्त हैं तो पाकिस्तान में हिन्दूपरस्त हैं।

अपने उसूलों की पूर्ति के लिए सब कुछ न्यौछावर कर देने के लिए तीनों की तत्परता और असहमतियों के लिए स्पेस देने की इनकी तैयारी इतिहास के पन्नों पर दर्ज है। और यह महज निजी तैयारी नहीं थी, उन्होंने इस महान उद्देश्य के लिए संगठनों का, साथियों के नेटवर्क का, कार्यकर्ताओं का दल तैयार किया था।

गांधी जो आज़ादी के आन्दोलन के कर्णधार थे उन्होंने अपने अन्तिम संघर्ष की धार बहुसंख्यक साम्प्रदायिकता की तरफ मोड़ी। और इसी प्रयास में वह शहीद हुए। बहुत कम भारतीय होंगे जो उनकी इस छवि से या उनके संघर्ष से सम्मोहित नहीं होंगे। अपने आखिरी दिनों में उन्हें इस बात का पूरा इल्म था कि वह कभी भी मारे जा सकते हैं, लेकिन वे अपने पथ पर अडिग रहे। बंटवारे के उन रक्तरंजित दिनों में (जबकि एक कौम के लोग दूसरे कौम के लोगों को दुश्मन बनते दिख रहे थे) उन्होंने खुल्लमखुल्ला ऐलान किया कि अल्पमत की हिफाजत के लिए वह आखरी सांस तक संघर्ष करेंगे, वह हिन्दोस्तां में मुस्लिमपरस्त हैं तो पाकिस्तान में हिन्दूपरस्त हैं।

हम ऐसा ही अदम्य साहस एवं दूरदृष्टि भगतसिंह में भी देखते हैं, जिन्होंने अपने उसूलों के लिए फांसी के फंदे पर झूल जाना वाजिब समझा। डा. अम्बेडकर का समूचा जीवन यह बताता है कि सदियों, हजारों सालों से हाशिये पर डाले गए लोगों की मुक्ति के लिए उन्हें कदम-कदम पर कितनी कुर्बानी देनी पड़ी ? यह उनकी प्रचंड विद्वता का ही नतीजा था कि वह ऐसे संविधान को आकार दे सके जो आज भी हिन्दू राष्ट्र के हिमायतियों के आंखों की किरकिरी बना बैठा है।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए हम इन तीनों के चिन्तन में झांकने की कोशिश कर सकते हैं और यह देख सकते हैं कि क्या कोई साझापन उभरता है ? भगतसिंह (1907-31), डा. अम्बेडकर (1891-1956), महात्मा गांधी (1869-1948) अगर हम इन तीनों को देखें तो हम आज़ादी पूर्व भारत की एक दिलचस्प तस्वीर से रुबरू होते हैं। ऐसा भारत जहां चार किस्म की धाराएं एक दूसरे के साथ अन्तर्क्रिया में है। एक धारा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की है, दूसरी धारा सामाजिक-सांस्कृतिक मुक्ति की है तीसरी धारा वर्गीय राजनीति की है और चौथी धारा हिन्दू-मुसलमानों में अपने आप में राष्ट्र समझनेवालों की है।

चाहे बर्तानिया से गुलामी की राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की धारा हो, ब्राह्मणवाद, पुरोहितवाद तथा पितृसत्ता से मुक्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक धारा हो या समाजवाद का ख्वाब देखकर आगे बढ़ती वर्गीय राजनीति की धारा हो हम इन तीन धाराओं को देखें तो वह भारतीय समाज को किसी न किसी स्तर पर आगे ले जानेवाली हैं

और चौथी धारा समाज में नए विघटन को पैदा करनेवाली है, उसकी गति समाज को पीछे ले जानेवाली है।

दूसरी अहम बात यह है कि ऐसे मुद्दे या बातें भी नज़र आती हैं जहां इनके विचारों की, कार्यों में अन्तर्व्याप्ति अर्थात (overlapping) भी दिखती है। मिसाल के तौर पर डा. अम्बेडकर जाति उन्मूलन के लिए जहां शास्त्रों-पुराणों को प्रश्नांकित करने या उन्हें खारिज करने का आवाहन करते हैं, वही शहीद भगतसिंह अछूत समस्या शीर्षक लेख में आह्वान करते हैं कि 'शेरो उठो ! असली सर्वहारा तुम हो।'

तीस के दशक में जब डा. अम्बेडकर की मुहिम नयी ऊंचाइयों पर पहुंचती हैं तो उधर महात्मा गांधी भी अपनी तरफ से कोशिश करते हैं कि कांग्रेस पार्टी के बैनर तले "अस्पृश्यता का मसला" उठाया जाए। और इसी प्रयास में रुढिवादी ताकतों के निशाने पर आ जाते हैं। गांधी की वर्णाश्रम की हिमायत हम निश्चित ही नामंजूर करते रहेंगे, लेकिन यह भी सत्य है कि 'अस्पृश्यता के मसले को उठाने के चलते ही उन्हीं दिनों उन पर दो बार जानलेवा हमले होते हैं, एक देवघर में तो दूसरा पुणे में।

समाजवाद की भगतसिंह की हिमायत हमें डा. अम्बेडकर के कुछ अहम विचारों की याद दिलाती हैं। 'राज्य और अल्पसंख्यक' नामक अपने ग्रंथ में वह राज्य समाजवाद की बात करते हैं। अपने अंतिम भाषण में वह बौद्ध धर्म के साथ मार्क्सवाद की तुलना करते हैं और कहते हैं कि बौद्ध धर्म में दर्ज दुख को अगर शोषण से प्रतिस्थापित करें तो दोनों बातें एक जैसी दिखती है। प्रश्न उठता है कि भारतीय समाज को आगे ले जाने की अपने में निहित तमाम संभावनाओं के बावजूद आज यह सभी विचार क्यों हाशिये पर पड़े हैं।

इस पहेली को सम्बोधित करने का जिम्मा उनके सच्चे अनुयायियों पर आता है। क्या उन्होंने बदले समय में इन विचारों की स्वीकार्यता किस तरह व्यापक बने इस पर गौर नहीं किया ? बुद्ध का मशहूर कथन है कि 'मैंने तुम्हें नदी पार करने के लिए नाव दी थी, नदी पार हो जाने के बाद कंधे पर ढोने के लिए नहीं।' गांधी के सच्चे अनुयायी, डा. अम्बेडकर के विचारों के असली वाहक लोग या भगत सिंह को माननेवाली जमातें जितना जल्दी इस बात को समझें उतना जल्दी इस मुल्क को बेहतरी के रास्ते पर डाल जा सकता है।

पुस्तक विमोचन

हरियाणा सृजन उत्सव में वरिष्ठ कवि हरभगवान चावला जी का कविता संग्रह 'इंतजार की उम्र' और वीरेन्द्र भाटिया का कविता संग्रह 'युद्ध लड़ रही है लड़कियां' । इस मौक़े पर सिरसा सतीश कुमार, जसप्रीत, रोहताश वर्मा, परमानन्द शास्त्री, हरभगवान चावला, गौहर रजा, वीरेंदर भाटिया, सुभाष चन्द्र, रमेश शास्त्री, हरविंदर सिंह, राजेश कासनिया, हरभजन बेदी, रमेश कुमार, सुरजीत सिरड़ी, राजकुमार, जयदीप, रजनीश कुमार आदि मौजूद रहे।

धर्म में लिपटी वतनपरस्ती क्या-क्या स्वांग रचाएगी..

✦ गौहर रज़ा

'देस हरियाणा' और 'सत्यशोधक फाउंडेशन' द्वारा 14-15 मार्च 2020 को कुरुक्षेत्र स्थित सैनी धर्मशाला में आयोजित 'हरियाणा सृजन उत्सव-4' में दोनों दिन सवाल उठाने और चेतना पैदा करने वाली कविताएं गूंजती रही। देश के जाने-माने वैज्ञानिक एवं शायर गौहर रज़ा के कविता पाठ के लिए विशेष सत्र आयोजित किया गया। सत्र का संचालन रेतपथ के संपादक डॉ. अमित मनोज ने किया। पत्रकार गुंजन कैहरबा ने इसे लिपिबद्ध करके यहाँ प्रस्तुत किया है - सं.

धर्म में लिपटी वतनपरस्ती क्या-क्या स्वांग रचाएगी,
मसली कलियां झुलसा गुलशन ज़र्द खिजां दिखलाएगी।
यूरोप जिस वहशत से अब भी सहमा-सहमा रहता है,
खतरा है वो वहशत मेरे मुल्क में आग लगाएगी।

दोस्तो, मुझे जर्मनी जाने का मौका मिला। मैंने वहां दो-तीन चीजें कही थी कि मैं उनके बिना हिन्दोस्तान नहीं जाऊंगा। जिसमें से एक चीज यह थी कि मैं बर्तोल्त ब्रेख्त की कब्र पर फूल चढ़ाए बिना वापिस हिन्दोस्तान नहीं जाऊंगा और दूसरी बात यह थी कि मैं बिना गैस चैंबर देखे बिना नहीं जाऊंगा। यकीन जानिए, वहां जो मैंने देखा मैं तीन दिन तक सो नहीं पाया।

जर्मन गैसकदों से अब तक खून की बदबू आती है,
अंधी वतन परस्ती हमको उस रस्ते ले जाएगी
अंधे कूएं में देश की नाव तेज चली थी मान लिया,
लेकिन बाहर रोशन दुनिया तुमसे सच बुलवाएगी।
नफरत में जो पले बढ़े हैं नफरत में जो खेले हैं
नफरत देखो आगे-आगे उनसे क्या करवाएगी।

फनकारों के बारे में बात करें तो जर्मन के फनकार तैयार नहीं थे। मुझे फख्र है कि मेरे मुल्क के फनकार, आर्टिस्ट व बुद्धिजीवी तैयार हैं। अगर सबसे पहले फासीवाद के खिलाफ आवाज उठी तो हिन्दोस्तान के फनकारों की तरफ से उठी।

फनकारों से पूछ रहे हो क्यों लौटाए हैं सम्मान
पूछो कितने चुप बैठे हैं शर्म उन्हें कब आएगी
ये मत खाओ वो मत पहनो इश्क तो बिल्कुल करना मत
देशद्रोह की छाप तुम्हारे दामन पर लग जाएंगी
ये मत भूलो अगली नस्लें रोशन शौला होती हैं
आग कुरेदोगे चिंगारी दामन तक तो आएगी

एक नज़्म जो कि फैज़ साहब को समर्पित है। फैज़ साहब के शुरुआती संग्रह में एक नज़्म है - इंतिसाब यानी डेडिकेशन। उन्होंने अपनी पूरी शायरी को समर्पित किया है, वह इस नज़्म में है। मेरे ख्याल से इससे खूबसूरत डेडिकेशन मैंने कहीं और किसी और जुबान में नहीं पढ़ा। उनकी नज़्म की दो पंक्तियां हैं-

जर्द पत्तों का बन जो मेरा देश है
दर्द की अंजुमन जो मेरा देश है

इसके बाद वे बहुत कुछ लिखते हैं-

पोस्ट-मैनों के नाम
ताँगे वालों का नाम
रेल-बानों के नाम
कार-ख़ानों के भूके जियालों के नाम..
दहक़ाँ के नाम
जिस के ढोरों को ज़ालिम हँका ले गए
जिस की बेटी को डाकू उठा ले गए

वो काफी लंबी कविता है..

जर्द पत्तों का बन-
ज़र्द पत्तों का बन जो मेरा देस है
दर्द की अंजुमन जो मेरा देस है
जब पढ़े थे ये मिसरे तो क्यों था गुमाँ
ज़र्द पत्तों का बन, फ़ैज़ का देस है
दर्द की अंजुमन, फ़ैज़ का देस है
बस वही देस है,
जो कि तारीक है
बस उसी देस तक है
खिज़ाँ की डगर
बस वही देस है ज़र्द पत्तों का बन
बस वही देस है दर्द की अंजुमन

मुझ को क्यों था गुमां
के मेरे देस में
ज़र्द पत्तों के गिरने का मौसम नहीं
मुझ को क्यों था यक़ीं
के मेरे देस तक
पतझड़ों की कोई रहगुजऱ ही नहीं
इस के दामन पे जितने भी धब्बे लगे
अगली बरसात आने पे धुल जाएँगे

अब जो आया है पतझड़
मेरे देस में
धडक़ने जिंदगी की हैं
रुक सी गयीं
ख़ंजरों की ज़बान रक़्स करने लगी
फूल खिलने पे पाबंदियाँ लग गयीं
क़त्लगाहें सजाई गईं जा-ब-जा
और इंसाफ़ सूली चढ़ाया गया
ख़ून की प्यास इतनी बढ़ी, आखिऱश
जाम-ओ-मीना लहू से छलकने लगे

नाम किसके करूँ
इन ख़िज़ाओं को मैं
किस से पूछूँ
बहारें किधर खो गयीं
किस से जाकर कहूँ
ज़र्द पत्तों का बन, अब मेरा देस है
दर्द की अंजुमन, अब मेरा देस है

ऐ मेरे हमनशीं
ज़र्द पत्तों का बन, दर्द की अंज़ूमन
आने वाले सफ़ीरों की क़िस्मत नहीं
ये भी सच है के उस
फ़ैज़ के देस में
चाँद ज़ुल्मत के घेरे में कितना भी हो
नूर उसका बिखरता है अब भी वहाँ

पा-बा-जोलाँ सही, फिर भी सच है यही
ज़िंदगी अब भी रक़साँ है उस देस में
क़त्लगाहें सजी हैं अगर जा-ब-जा
ग़ाज़ियों की भी कोई, कमीं तो नहीं

और मेरे देस में
रात लम्बी सही,
चाँद मद्धम सही
मुझ को है ये यक़ीं
ख़लक़ उठेगी हाथों में पर्चम लिए
सुबह पाज़ेब पहने हुए आएगी
रन पड़ेगा बहारों-खिजाओं का जब
रंग बिखरेंगे, और रात ढल जाएगी

इस्लाम मजहब में एक शब्द है - मुन्किर। जो खुदा से इन्कार कर दे। यह सबसे बड़ा जुर्म है। इसकी एक ही सजा कत्ल की सजा है। मुन्किर होना सबसे बड़ा जुर्म है। अगर किसी का खुदा यह कहता है कि स्कूल में जाकर बच्चों को कत्ल कर दो। तो मैं फिर मुन्किर ही अच्छा हूँ। अगर किसी का राम यह कहता है कि औरत के गर्भ से बच्चा निकालो, उसे उछालो और उसके खून से राम का नाम लिखो तो मैं फिर नास्तिक ही ठीक हूँ।

लहू में डूबे ये हाथ कब तक कहेंगे
खुद को धर्म का चालक
खुदा-ए-बरतार का नाम लेवा,
मनु के कदमों पे चलने वाला
कहेंगे कब तक ये राम-ओ-ईसा का खुद को
पैरोकार
ये मंदिरों से ये मस्जिदों से,
ये हर कलीसा से उठ के कब तक
तेरे ही नारे लगा-लगा कर,
तेरे घरों को गिरा-गिरा कर
तेरे ही बंदों का कत्ल करके
ये बस्तियों को जला-जला कर
करेंगे दावा तेरी मोहब्बत,
तेरी इनायत, तेरी रफाकत,
तेरी इबादत का सर उठाकर
लहू में डूबे ये हाथ कब तक,
ये हाथ उठते हैं जब दुआ को
मैं कांपता हूँ कि अबकी बिजली कहां गिरेगी
मैं तुझसे मुन्किर हुआ कि अब तो,
मेरी अकीदत, मेरे यकीं की हर एक सीमा
कि सब्रो-ईमान की हद से बाहर
हजारों मुन्किर खड़े हुए हैं,
जो नाम लेवा हैं अब भी तेरे
ये बांटते हैं घने अंधेरे,
वो जुल्मतों से उलझ रहे हैं।

दोस्तो, जो सम्मान यहां दिया गया है.. मैं इसके लिए आयोजकों के साथ-साथ आप सब साथियों का शुक्रगुजार हूँ। मैं यह सुनता रहा कि हरियाणा में एक अद्भुत कार्यक्रम होता है। और हमेशा दिल में ये आस रही कि शायद मुझको भी बुलाया जाएगा। इसलिए आज यहां आकर आपके बीच में बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूँ।

आज हम इस देश में एक भयंकर वक्त से गुजर रहे हैं, जब सिर्फ उन लोगों के ऊपर नहीं जो कविताएं लिखते हैं, जो गाने गाते हैं, जो म्यूजिक करते हैं, जो फिल्में बनाते हैं, जो कहानियां लिखते हैं। खाली उन पर ही हमला होता तो हम सह लेते। यह हमला इस मुल्क के विचार के ऊपर है, यह हमला इस मुल्क के ख्वाब के ऊपर है। उन सारे शहीदों के ख्वाब के ऊपर है, जिन्होंने ये मुल्क बनाया। ये उन सब लोगों के ऊपर हमला है, जिन्होंने देश को बनाया। आखिर में यह सबसे बड़ा हमला है - देश के संविधान के ऊपर। हम ऐसे वक्त से गुजर रहे हैं, जब कविता को भी खड़ा होना पड़ेगा, कहानी को खड़े होना पड़ेगा और इस मुल्क के हर शहरी को खड़ा होना पड़ेगा।

दोस्तो, फासीवाद के बारे में बहुत बातें हो चुकी। बहुत चिंताएं जताई जा चुकी और अब कम से कम उत्तर भारत में मुझे लगता है कि यह फासीवाद शब्द लोगों की विचारधारा का हिस्सा बन रहा है कि फासीवाद कोई चीज होती है। मेरा मानना यह है कि फासीवाद हमेशा लोकतंत्र की कोख से ही जन्म लेता है। जिसका मतलब यह हुआ कि फासीवाद हाशिये पर हर लोकतंत्र के अंदर मौजूद रहता है। लेकिन जब ये हाशिये से निकल कर सत्ता के गलियारों तक पहुंच जाता है तो इसका एक भयंकर रूप लोगों के

बीच आना शुरू होता है। अगर यह बात मान ली जाए तो फिर हमें फासीवाद को दो तरीके से देखना बहुत जरूरी है।

एक फासीवाद विचारधारा है जो लगातार जनतंत्र के बीच में पनपती रहती है। यह बहुत कमजोर होती है, जब लोकतंत्र मजबूत होता है। इसलिए यह लगातार कमजोर दुश्मनों को तलाश करती रहती है। हमें यह दिखाई देता है कि अल्पसंख्यक इसके सबसे पहले और घोषित दुश्मन होते हैं। और वो इसलिए हैं कि वे सबसे कमजोर होते हैं। कमजोरों को दानव बनाकर पेश करना ही फासीवादी विचारधारा को आगे मजबूत करने के लिए धीरे-धीरे बढ़ाता है। यानी हमारी लड़ाई मुश्किल इसलिए है कि हमको इससे पहले विचारधारा के स्तर पर लड़ना होगा, लड़ना चाहिए। शायद हमसे पहले कोई भूल हुई है। और इस भूल के लिए हममें से यहां बैठा हुआ हर आदमी जिम्मेदार है।

मैं ये समझता हूँ कि हम उस लड़ाई में, जो विचारधारा की लड़ाई है, उसमें हम कमजोर पड़ गए और इसलिए फासीवाद निकल करके सत्ता के गलियारों तक पहुंच गया। और अब हमें उसका वो भयंकर चेहरा दिखाई देता है, जो भयंकर चेहरा हमने जर्मनी में देखा था। हमने लैटिन अमेरिका के देशों में देखा था। जो हमने अफ्रीका में देखा था। जो हमने अपने पड़ोसी देशों-पाकिस्तान व बांग्लादेश में देखा था। लेकिन यह विचार कि जहां-जहां मुसलमान बहुमत में हैं, वहां-वहां फासीवाद उभरता हुआ ज्यादा दिखाई देता है। यह विचारधारा हमारे देश में कुछ आम सी हो गई है। यह जब इतना फैल जाए कि हर इक जुबान तक आ जाए तो हम ये भूल जाते हैं कि फासीवाद का एक चेहरा हमको श्रीलंका में भी दिखाई दिया। हमको म्यांमार में भी दिखाई दिया। हमको बहुत सारे देश में दिखाई दिया है, जिसका मुसलमानों से कोई लेना-देना नहीं है।

आर.एस.एस. के इस ढाँचे में ये देश फिट नहीं होते, इसलिए इन देशों के नाम भी नहीं लिए जाते। मैं ये समझता हूँ कि अगर हमें फासीवाद से अपने देश के अंदर लड़ना है तो हमको विचारधारा की लड़ाई को पैना करना पड़ेगा। हमको नई नस्ल को यह बताना पड़ेगा कि फासीवाद के खतरे आपके चारों तरफ हैं, कहीं दूर नहीं हैं।

मुझे अभी थोड़ी देर पहले जिक्र हुआ - शाहीन बाग के आंदोलन का, जो नागरिकता संशोधन क़ानून के खिलाफ इस देश में खड़ा हो रहा है। मुझे बहुत उम्मीद है नई नस्ल से। और वह उम्मीद दोनों तरह से पैदा हुई है। एक तो हमारी नस्ल के लोग नई नस्ल के बच्चों को लगातार यह कहने लगे थे कि उन्हें अपने से अधिक किसी की चिंता नहीं है। हम यह कहने लगे थे कि वे फ़ोन तक महदूद होकर रह गए हैं। हम यह कहने लगे थे कि व्हाट्सअप यूनिवर्सिटी ही उनको अब पढ़ा रही है। और हमारी नस्ल के लोगों ने इस बात पर यकीन सा कर लिया था। ये जो मूवमेंट खड़ा हुआ है। इसने हमें जीवन दिया है।

हमें गलत साबित किया है।

नई नस्ल के बच्चे, जो यहां बैठे हैं, मैं उन्हें मुबारकबाद देना चाहता हूँ। उन्होंने हमें सिखाया है कि नहीं वे सो नहीं रहे हैं। जब-जब इस मुल्क पर आफत आएगी, वो उठेगा। हमारा काम यह बचा है कि जो आंदोलन खड़ा हो रहा है, उसे दिशा दे सकें। मैं एक कवि की हैसियत से भी बहुत फ़ख़्र इस बात पर महसूस करता हूँ कि इस बीच में जो साहित्य पैदा हुआ है, जो कविताएं लिखी गई, जो बच्चे कहानियां रच रहे हैं, जिस तरह के नारे चल रहे हैं इस बीच में, जिस तरह की कला विकसित हुई है, जिस तरह के पोस्टर बनाए गए हैं और जिस तरह के गाने गाए जा रहे हैं। वो हमें ये यकीन दिलाते हैं कि हमारी नई नस्ल इसे हथियार बनाकर लड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार है। खूबसूरत गाने, खूबसूरत नारे, हिंसा से दूर ये यकीन दिलाने के लिए कि हम संविधान को बचाने के लिए खड़े हुए हैं। ये मेरी उम्र के लोगों को यकीन दिलाते हैं कि सब कुछ अभी हाथ से गया नहीं है। ये नई नस्ल आगे बढ़ेगी और संविधान को जरूर बचाएगी।

नयी शिक्षा नीति : दायित्व से मुक्ति

✦ कमलानंद झा

विश्वविद्यालय परिसरों का माहौल और शैक्षिक परिदृश्य सृजन उत्सव के दूसरे दिन विश्वविद्यालय परिसरों का माहौल और शैक्षिक परिदृश्य विषय परिसंवाद आयोजित हुआ। परिसंवाद में अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कमलानंद झा ने नई शिक्षा नीति-2019 के मसौदे के अन्तर्विरोधों पर व्याख्यान दिया। सत्र का संचालन देस हरियाणा टीम के सदस्य सुनील थुआ ने किया। व्याख्यान के लिए प्रो. झा द्वारा तैयार किया गया व्याख्यान यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। - सं.

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति 2019 का प्रारूप आम जनता में विमर्श हेतु प्रस्तुत किया है। वैसे इस विमर्श की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वर्तमान सरकार की आस्था विमर्श या बातचीत में कतई नहीं है, उसे जो भी लागू करना होता है आम मर्जी से या जबरदस्ती लागू कर ही देती है। विगत कुछ वर्षों में सरकार द्वारा लिए गए बड़े फैसलों में सरकार की 'मेरी मर्जी' वाली नीति को हम सभी ने देखा ही है। जब जनता ने उन्हें भारी मतों से जिताया है तो बगैर विमर्श के निर्णय लेने का सत्वाधिकार भी उनके लिए सुरक्षित है। इसलिए नई शिक्षा नीति के इस प्रारूप को जनता के बीच लाना हाथी के दिखाने वाले दाँत हैं। वैसे जब जनता के बीच यह प्रारूप आ ही गया है तो 'मन बहलाने के ख्याल' से ही सही बातचीत होनी चाहिए। बातचीत यह देखने के लिए भी होनी चाहिए कि सरकार किस तरह शिक्षा के दायित्व से अपने को समेट रही है।

नेरेशन के माध्यम से कही गई बातें जनोन्मुखी, प्रगतिशील और उदारता से भरी हुई हैं। कदाचित इसे देखकर ही कई शिक्षाविदों ने इसे आदर्शवादी नीति की संज्ञा दी है और चिंता जताई है कि इसे जमीनी हकीकत में तब्दील करना दुष्कर है। लेकिन यह प्रारूप कहीं से भी आदर्शवादी नहीं है, बल्कि अगर प्रारूप को ठीक से पढ़ा जाए 'बिटवीन द लाइन्स' को समझा जाए, अनकहा पर गौर किया जाए और प्रारूप के निहितार्थ को खोलने की कोशिश की जाए तो इस आदर्शवाद का पूरा मुलम्मा उतर जाता है और इसकी वास्तविकता खुली किताब की तरह स्पष्ट हो जाती है।

ऊपरी तौर पर बुद्धिजीवियों को बहलाने के लिए इसमें सन 1948 में डॉ. राधाकृष्ण की अध्यक्षता में बनी उच्च शिक्षा आयोग की सिफारिशों से लेकर 1993 में यशपाल समिति की अनुशंसाओं का प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष उल्लेख किया गया है। पूर्व की समितियों की अच्छी और आकर्षक बातों को इस प्रारूप में चिपकाने का प्रयास किया गया है। लेकिन यह सारी बातें कथन के तौर पर है यानी 'ऐसा होना चाहिए'। जहां ठोस रूप में नीति निर्धारण की बात है, वहां यह बातें हवा-हवाई हैं। दूसरी कठिनाई इस प्रारूप में यह है कि नीति निर्धारण का यथार्थ और आदर्शवाद के बीच उचित सामंजस्य के अभाव में पूरा प्रारूप अंतर्विरोध, विरोधी वक्तव्य और मिथ्या कथनों से भरा पड़ा है। रेखांकन योग्य मामला यह है कि यहां नीति और नीयत में प्रचंड भेद है। प्रारूप के आदर्श वाक्य और सरकार की समझ और नीयत में 36 का आंकड़ा है। प्रस्तुत आलेख में कुछ ऐसे ही अंतर्विरोधों और प्रचंड मतभेदों को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।

प्रारूप स्कूल के शिक्षकों से गैर शैक्षणिक कार्य लेने को अनुचित मानता है। प्रारूप के 165वें पृष्ठ पर कहा गया है कि गैर शैक्षणिक काम जैसे चुनाव कार्य , सर्वे तथा अन्य प्रशासनिक कार्य शिक्षक नहीं करेंगे। लेकिन 10 ही पृष्ठ बाद 175 वें पृष्ठ पर प्रारूप कहता है कि 'उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार चुनाव ड्यूटी और कुछ सर्वे को छोड़कर स्कूल के दौरान कोई भी गैर शैक्षिक गतिविधि नहीं करनी होगी।' सोचने की बात यह है कि हिंदुस्तान में लोकसभा, विधानसभा से लेकर पैक्स तथा पंचायत चुनाव साल भर होते ही रहते हैं। चुनाव कार्य और सर्वे को छोड़कर मात्र मिड-डे मील बच जाता है। सर्वे के संदर्भ में भी 'कुछ' को स्पष्ट नहीं किया गया है। ऐसी हालत में कोई भी सर्वे

'कुछ' की श्रेणी में ही आ जाएगा। प्रारुप अत्यंत चतुराई से कहता है कि चुनाव और सर्वे के अतिरिक्त स्कूल के दौरान शिक्षकों को अन्य गैर प्रशासनिक कार्य लिए जा सकते हैं।

प्रारुप के 181वें पृष्ठ पर घोषणा की गई है कि "माध्यमिक स्तर पर सभी शिक्षकों के लिए उनके कार्य के अनुसार मानक सेवा की शर्तें और समान वेतन होगा।" लेकिन वर्तमान सरकार की नीयत ठीक इसके विपरीत है। पूरे देश में 'ठेका' पर स्कूल शिक्षकों की बहाली हो रही है। बिहार में शिक्षकों ने समान काम के लिए समान वेतन की मांग की, उन्होंने आंदोलन चलाया किन्तु जब कोई रास्ता नहीं निकला तो शिक्षकों ने न्यायालय में अपने हक के लिए मुकदमा दायर किया। उच्च न्यायालय ने शिक्षकों के पक्ष में निर्णय दिया। सरकार की नीयत समान वेतन की होती तो वह शिक्षकों को समान वेतन व्यवस्था लागू कर देती। किंतु सरकार उच्चतम न्यायालय चली गई उसमें शिक्षक के विरोध में और सरकार के पक्ष में फैसला आया। शिक्षक समान काम के लिए असमान वेतन के लिए मजबूर हुए।

प्रारुप में देश के सभी बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने की बात बार-बार कही गई है। 'विजन' में कहा गया कि "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 एक भारत केंद्रित शिक्षा प्रणाली की कल्पना करती है जो सभी को उच्च शिक्षा प्रदान करके हमारे राष्ट्र को एक न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज में लगातार बदलने में योगदान देती है। जो सभी को गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करके हमारे राष्ट्र को न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज में लगातार बदलने में योगदान देती है।" प्रारुप में गरीब से गरीब बच्चों को भी गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने के लिए कथित रुप से नीति प्रतिबद्ध है। किंतु विडंबना यह है कि देश भर में सरकार व्यापक पैमाने पर स्कूल बंद कर रही है या दूर के स्कूलों में विलय कर रही है। झारखंड में लगभग छः हज़ार स्कूल बंद कर दिए गए हैं। मध्यप्रदेश में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने 5 हजार स्कूलों को बंद करने का मन बना लिया था। गुजरात में 8673 स्कूलों को बंद करने की पूरी तैयारी हो चुकी है। क्या यह नीति देश के सभी बच्चों को स्कूल बंद करके गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देगी? कम छात्रों और कम शिक्षकों वाले स्कूल को बंद करने की योजना यह नीति बना चुकी है। नीति में स्पष्ट कहा गया है कि 'कम शिक्षक और कम छात्र वाले स्कूलों का संचालन जटिल होने के साथ-साथ आर्थिक रुप से व्यवहारिक नहीं है क्योंकि अच्छे स्कूल को चलाने के लिए जितने संसाधन आवंटित करने की आवश्यकता होती है उतने छोटे स्कूलों के लिए संभव नहीं होता।" आशय स्पष्ट है कि पहाड़ों, जंगलों और ऊसर प्रदेशों में जहां जनसंख्या अत्यंत विरल है और निम्नतम दर्जे कि लोग रहते हैं उन्हें शिक्षा देना सरकार की मंशा नहीं है। स्कूल में अधिक से अधिक बच्चे आएं, वहां अच्छे शिक्षकों की नियुक्ति हो, इस भगीरथी प्रयास के बदले स्कूल को ही बंद कर देना दुर्भाग्यपूर्ण है। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि कई कारणों से हाशिये के बच्चे जो निकटतम स्कूल में नहीं जा पाते, उनसे यह उम्मीद करना कि पांच किलोमीटर दूर स्कूल में पढ़ने जाएंगे कोई असामान्य सोच का व्यक्ति ही सोच सकता है।

प्रारुप में कहा गया है कि "निजी स्कूल अपने शिक्षकों को सार्वजनिक स्कूल के शिक्षकों के लिए तैयार किए गए और संचालित किए गए क्षमता संवर्धन कार्यशालाओं में भेज सकते हैं या निजी विद्यालय सार्वजनिक स्कूल कॉम्प्लेक्स के साथ संसाधनों को साझा करने की गतिविधियों में भी शामिल हो सकते हैं।)"

प्रारुप में स्कूल शिक्षा से संबंधित जो सबसे खतरनाक संकेत हैं वह सरकारी स्कूल के संसाधनों को निजी स्कूल के लिए मुहैया कराना। प्रारुप सरकारी स्कूल और निजी स्कूल के पीछे सामंजस्य पूर्ण स्थिति कायम करना चाहता है और इसके लिए अपने स्कूल का संसाधन जैसे शिक्षक, पुस्तकालय, खेल का मैदान आदि निजी स्कूलों से शुल्क लेकर देने का मन बना रहा है। यह तय है कि जब निजी स्कूल एक बार अपना पैर सरकारी स्कूलों में पसार लेंगे तो वहां उनका अधिकार पक्का हो जाएगा। 266 पृष्ठ संख्या पर प्रारुप में कहा गया है कि "निजी स्कूल अपने शिक्षकों को सार्वजनिक स्कूल के शिक्षकों के लिए तैयार किए गए और संचालित किए गए क्षमता संवर्धन कार्यशालाओं में भेज सकते हैं या निजी विद्यालय सार्वजनिक स्कूल कॉम्प्लेक्स के साथ संसाधनों को साझा करने की गतिविधियों में भी शामिल हो सकते हैं। (उदाहरण के लिए साझे खेल के मैदान, व्यावसायिक

शिक्षकों को साझा करना आदि)"। सोचने की बात है कि सार्वजनिक स्कूल के 'दीन हीन' गरीब बच्चे निजी स्कूल के 'टाई मार्का' बच्चों के साथ कैसे मिल सकते हैं। धीरे-धीरे सार्वजनिक स्कूल के बच्चे इन गतिविधियों से भी अपने को अलग कर लेंगे। और इन संसाधनों पर धीरे-धीरे निजी स्कूल का कब्जा हो जाएगा। लेकिन सरकार की मंशा स्कूल के संसाधनों से रुपए वसूली की है ना कि अपने बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने की। यह अकारण नहीं है कि प्रारूप में निजी स्कूल संचालक को बार-बार महान परोपकारी कहा गया है और इन पर संदेह न करने की बात दुहराई गई है, "निजी परोपकार स्कूलों ने भारत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और भविष्य में भी निभाते रहेंगे। इन्हें संदेह के साथ हतोत्साहित करने की बजाए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।"(पृष्ठ 262)

प्रारूप में वैज्ञानिक शिक्षा देने की वकालत की गई है, वैज्ञानिक शिक्षा जो तर्क और प्रयोग पर आधारित हो। मजे की बात यह है कि विज्ञान शिक्षण में ही नहीं बल्कि विज्ञान से इतर विषयों को भी वैज्ञानिक दृष्टि से पढ़ाने की बात प्रारूप करता है। पृष्ठ संख्या 119 पर उपशीर्षक 'वैज्ञानिक सोच' में प्रारूप घोषित करता है कि "पूरे शिक्षा क्रम में वैज्ञानिक सोच को विकसित करना और प्रमाण आधारित चिंतन को बढ़ावा देना, शिक्षाक्रम के सभी दायरों में विज्ञान और परंपरागत गैर विज्ञान विषयों में भी प्रमाण आधारित चिंतन और वैज्ञानिक विषयों को शामिल किया जाएगा ताकि विश्लेषणात्मक, तार्किक, तर्कसंगत, मात्रात्मक चिंतन को शिक्षाक्रम के सभी दायरों में बढ़ावा मिले।" विडंबना यह है कि वर्तमान सरकार की दृष्टि नितांत अवैज्ञानिक है। इस अवैज्ञानिक दृष्टि से वैज्ञानिक चेतना सम्पन्न शिक्षा कैसे दी जा सकती है? अभी कुछ दिन पूर्व इन पंक्तियों का लेखक जब प्रारूप पढ़ रहा था, आई आई टी खड़गपुर में शिक्षा मंत्री भावी इंजीनियरों को रामसेतु इंजीनियरिंग की कलात्मकता का गुर बता रहे थे और नल-नील को देश का पहला इंजीनियर। इतना ही नहीं उन्होंने जोर डाल कर कहा कि रामसेतु पर आप लोगों को शोध करना चाहिए। वर्तमान सरकार के साधारण नुमाइंदे से लेकर प्रधानमंत्री तक ने जब-तब अवैज्ञानिकता पूर्ण बातों को प्रचारित प्रसारित करने का बीड़ा उठाया हुआ है। कहीं नारद को पहला जनसंचारक कहा जाता है तो कहीं गणेश के सर पर हाथी के सूँड़ को प्राचीन काल में प्लास्टिक सर्जरी की बात पूरे आत्मविश्वास के साथ कही जाती है। अंधविश्वास के खिलाफ वैज्ञानिक और तार्किक सोच को बढ़ाने वाले बुद्धिजीवियों को लगातार मारा जा रहा है, उन्हें संदेह की नजरों से देखा जा रहा है और देशद्रोही की जमात में शामिल किया जा रहा है। दाभोलकर, पनसारे, कलबुर्गी और गौरी लंकेश जैसे तार्किक बुद्धिजीवी की हत्या को इस संदर्भ में देखा जाना चाहिए। ऐसे नितांत गैर वैज्ञानिक और घोर अंधविश्वासी नीयत और माहौल में वैज्ञानिक शिक्षा देने की बात धूर्तता और छलावा के अतिरिक्त क्या हो सकती है?

प्रारूप में ना जाने कितनी बार शिक्षा में लोकतांत्रिक- संवैधानिक मूल्यों की रक्षा की बात दुहराई गई है।किन्तु वर्तमान सरकार की नीयत संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करना कतई नहीं है।लगातार हो रहे मॉब लिंचिंग, खानपान पर पाबंदी, प्रेम संबंधों पर निगरानी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की समाप्ति (दुनिया भर में अभिव्यक्ति की

स्वतंत्रता के मामले में भारत की दयनीय स्थिति) आदि ऐसे खुले तथ्य हैं

प्रारुप में 'लिबरल शिक्षा' जैसे मनमोहक शब्दावली का प्रयोग ही नहीं किया गया है बल्कि अत्यंत विस्तार से इसके महत्व को रेखांकित भी किया गया है। सभी विषयों को एक साथ मिलाकर शिक्षा देना लिबरल शिक्षा कहा गया है। अर्थात विषयों को 'वाटर टाइट' कंपार्टमेंट में न बांटकर सभी विषयों को अन्तरग्रंथित रुप से पढ़ाना।बाह्य रुप से तो यह बड़ा ही लुभावना और चित्ताकर्षक लग रहा है लेकिन इसका निहितार्थ अत्यंत घातक है। विद्यार्थियों को विशेषज्ञता से दूर कर मात्र रोजगार, वह भी दक्ष मजदूर बनाने की कवायद का दूसरा नाम है लिबरल शिक्षा। यह शिक्षा अमेरिका की चौथी औद्योगिक क्रांति की उपज है जिसका मकसद है व्यापक पैमाने पर उद्योग के लिए कुशल मजदूर तैयार करना। यह प्रारूप संकेत भी करता है की भविष्य में स्थाई नौकरी की बात संभव नहीं रह जाएगी। नई शिक्षा नीति कहती है - "जिस तेजी से अर्थव्यवस्थाएं बदल रही हैं, कौन जानता है कि हम भविष्य में किस तरह के काम कर रहे होंगे। जो काम और जिम्मेदारियां इनमें आज है वह कल भी वैसा ही रहेगी यह पक्का पक्का नहीं कहा जा सकता। कला शिक्षा का उद्देश्य लोगों को केवल उनके पहले रोजगार के लिए तैयार करना भर नहीं है बल्कि दूसरे, तीसरे, चौथे और आगे के कामों के लिए भी तैयार करती है। (पृष्ठ 309) जब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी जी कहते हैं कि युवाओं को नौकरी की चिंता नहीं करनी चाहिए , उन्हें समाज के लिए काम करना चाहिए या जब प्रधानमंत्री 'पकोड़े' की बात करते हैं तो लिबरल शिक्षा का निहितार्थ स्पष्ट हो जाता है।

नई शिक्षा नीति 2032 तक उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की संख्या दूनी करना चाहती है। रोचक तथ्य यह है कि यह दूनी संख्या वह एक चौथाई शैक्षिक संस्थाओं को घटाकर करना चाहती है। आज की तारीख में विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों को मिलाकर देश में लगभग 50,000 संस्थान हैं। धीरे-धीरे सरकार इनकी संख्या घटाकर अधिकतम 12300 करना चाह रही है। टाइप 1 जो शोध विश्वविद्यालय होंगे, इसकी संख्या एक सौ से तीन सौ होगी। टाइप 2, जो शिक्षण विश्वविद्यालय होंगे और इनकी संख्या 1000 से 2000 तक होगी और टाइप-3 जो, कॉलेज होंगे और इनकी संख्या 5000 से 10000 तक होगी। अगर अधिकतम संख्या को भी लिया जाए तो कुल 12300 संस्थान होंगे और इसी में दोगुने विद्यार्थियों को 'ठूसने' का प्रयास किया जाएगा। 2032 तक सभी संस्थानों को स्वायत्त करने की योजना है, जिससे वह अपना पाठ्यक्रम चलाने के लिए स्वायत्त होंगे और धन की उगाही के लिए भी। नीति दो टूक कहती है- "सभी (वर्तमान में) संबद्ध कॉलेज 2032 तक स्वायत्त डिग्री देने वाले कॉलेजों टाइप 3 में विकसित होने चाहिए या पूरी तरह से उस विश्वविद्यालय के साथ विलय हो सकते हैं जिससे वह संबंध हैं या फिर स्वयं विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो जाएं (टाइप 1 टाइप 2) (पृष्ठ 304)। मार्मिक तथ्य यह है कि जो कॉलेज टाइप 3 तक विकसित नहीं हो पाएंगे उन कॉलेजों को सरकार बंद कर देगी या 'सामाजिक भलाई ' केंद्र में तब्दील कर देगी - "2032 तक जो कॉलेज टाइप 3 HEL विकसित नहीं हो पाए उनकी सुविधाएं और संसाधनों का अन्य सार्वजनिक भलाई और सेवाओं के लिए बेहतर उपयोग किया जाएगा। उदाहरण के लिए वयस्क शिक्षा केंद्र, सार्वजनिक पुस्तकालय, व्यावसायिक शिक्षा सुविधाएं आदि।" (पृष्ठ 304)

इस तरह से सरकार नई शिक्षा नीति 2019 के रुप में सरकार उच्च शिक्षा से भी अपना दामन छुड़ाने की पूरी तैयारी करके बैठी हुई है। भविष्य में केवल लाभ की दृष्टि से व्यावसायिक और कौशल पूर्ण शिक्षा पर सरकार निवेश करने को इच्छुक है। यह शिक्षा नीति अपने अंतिम चरण में जाते-जाते पृष्ठ संख्या 507 पर स्पष्ट करती है "यहां ध्यान रखने की आवश्यकता है कि यह नीति शिक्षा के लिए मिलने वाले प्रत्येक सहयोग और खर्च को निवेश मानती है ना कि व्यय।" लोक कल्याणकारी राज्य में सरकार शिक्षा पर व्यय करती है, उससे समाज स्वस्थ संपन्न और खुशहाल होता है। यही सरकार के शिक्षा पर किए गए व्यय का बड़ा लाभ होता है। लेकिन अब सरकार अर्थशास्त्र के असली मुहावरे में निवेश करेगी तो निवेश और प्रोडक्ट का लाभ के साथ अन्योन्याश्रय संबंध होता ही है। निवेश लाभदायक विषयों पर ही किए जाएंगे। यह अकारण नहीं है कि विगत कुछ वर्षों से जितने सार्वजनिक और निजी विश्वविद्यालय, कॉलेज खुल रहे हैं, उनमें समाज विज्ञान, मानविकी तथा कला और संस्कृति आदि विषयों को दयनीय स्थिति प्राप्त है।

नई शिक्षा नीति इसी तरह की विसंगतियों, विडंबनाओं और छलावों से भरी हुई है। जो सबसे बड़ा छलावा है वह है पूरी शिक्षा व्यवस्था के श्रृंग यानी शीर्ष पर प्रधानमंत्री का विराजना। यद्यपि नीति में स्वायत्तता और स्वतंत्रता के राग खूब अलापे गए हैं, पूरे शिक्षा तंत्र को कई खानों, उपखानों, विभागों, प्रभागों में विभाजित किया गया है और कहा गया है कि सभी अपने-अपने तरह से कार्य करने के लिए स्वतंत्र होंगे, जिससे कार्य आसानी और सरलतापूर्वक निष्पादित होगा। लेकिन...लेकिन सबसे ऊपर राष्ट्रीय शिक्षा आयोग होगा जिसके मुखिया प्रधानमंत्री होंगे और सदस्यों में नौकरशाहों की भारी उपस्थिति होगी। कहने के लिए शिक्षक भी होंगे उसमें लेकिन जहां प्रधानमंत्री होंगे, शिक्षा मंत्री होंगे, नौकरशाह होंगे, वहां 'बेचारे' शिक्षकों की भला क्या बिसात? और जहां प्रधानमंत्री 'मोदी है तो मुमकिन है' होंगे वहां किसकी चलेगी यह तो सर्वविदित है ही। यह नीति शिक्षा का ऐसा ताना-बाना निर्मित करती है जहां भविष्य में सिर्फ दो तरह के शिक्षा संस्थान रह जाएंगे - एक शिक्षा संस्थान से निकलने वाले मजदूर बनेंगे, कुशल- दक्ष मजदूर और दूसरे संस्थान से मालिक। एक से शोषित निकलेंगे दूसरे से शोषक।

उच्च शिक्षा के हालात और विश्वविद्यालय परिदृश्य

✦ अरविन्द इन्द्रजीत

विश्वविद्यालय परिसरों का माहौल और शैक्षिक परिदृश्य विषय पर परिसंवाद के दूसरे वक्ता एमडीयू के छात्र नेता अरविन्द इन्द्रजीत शैक्षिक संस्थानों के माहौल पर चर्चा की। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की छात्र नेता सुमन गढ़वाल ने भी अपनी बातचीत रखी। रविन्द्र गासो, परमानंद शास्त्री, डॉ गुलाब सिंह, रविन्द्र कुमार, दिवाकर तिवारी, संदीप, डॉ. आबिद, शैलेन्द्र सिंह ने सवाल पूछे और टिप्पणियां की, जिनका वक्ताओं ने जवाब दिया। यहां पर अरविन्द इन्द्रजीत के व्याख्यान को प्रस्तुत किया जा रहा है।-सं

ज्ञान का मानव जीवन में उच्च स्थान है। ज्ञान ही हमें अनवरत आवश्यकता की गुलामी से स्वतन्त्रता की मुक्ति की तरफ़ अग्रसर करता है। लेकिन आज ज्ञानार्जन के लिए खड़ी की गयी शिक्षा व्यवस्था मुनाफ़े के तन्त्र के सामने दम तोड़ती नज़र आ रही है। खासतौर पर उच्च शिक्षा के हालात बेहद ख़राब होते जा रहें हैं। एक तरफ़ रोज़गार के भयंकर संकट ने छात्र आबादी को घनघोर प्रतियोगिता और अनिश्चितता में धकेल दिया है तो दूसरी तरफ़ शिक्षा व्यवस्था के सरकारी ढाँचे से विनिवेश की प्रक्रिया द्रुत गति से आगे बढ़ रही है। तमाम सरकारें उच्च शिक्षा को बिकाऊ माल बनाने पर तुली हुई हैं। सेमेस्टर सिस्टम, एफ.वाई.यू.पी. (फोर ईयर अण्डर ग्रेजुएट प्रोग्राम), सी.बी.सी.एस. (क्रेडिट बेस्ड चॉइस सिस्टम), यू.जी.सी. (यूनिवर्सिटी ग्राण्ट कमीशन) की जगह एच.ई.सी.आई. (हायर एजुकेशन कमीशन ऑफ इण्डिया) इत्यादि कार्यक्रम/स्कीमें भारत की शिक्षा व्यवस्था को अमेरिकी शिक्षा पद्धति के अनुसार ढालने के प्रयास भर हैं। ताकि मन्दी की मार झेल रही बड़ी पूँजी शिक्षा के बाजार में घुसपैठ करके पहले से ही तैयार ढाँचे को निगल ले। कोरोना महामारी और लॉक डाउन ने उच्च शिक्षा के प्रति सरकारों व विश्वविद्यालयों के प्रशासन के सरोकार की और भी पोल खोलकर रख दी है जोकि अलग से चर्चा का विषय है।

भारत में पहली शिक्षा नीति 1968 में बनी थी। इसके बाद दूसरी शिक्षा नीति 1986 में बनी जिसे 1992 में उदारीकरण-निजीकरण की नीतियों के मद्देनजर संशोधित किया गया। मुख्यतः तभी से शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण

की शुरुआत व्यापक रूप से हुई तथा उत्तरोत्तर शिक्षा भी मुनाफ़ा कमाने का एक साधन बनती चली गयी। अब सरकार तीसरी शिक्षा नीति को लेकर आ रही है। के.कस्तूरीरंगन कमेटी ने नयी शिक्षा नीति का प्रारूप (ड्राफ्ट) सरकार को 31 मई 2019 को सौंप दिया था। यह ड्राफ्ट अंग्रेजी में 484 और हिंदी में 648 पेज का है। इसी के आधार पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) ने 55 पेज का प्रारूप (ड्राफ्ट) कैबिनेट में भेज दिया था। कैबिनेट इसे पारित करके संसद के दोनों सदनों में पेश करेगा और फ़िर वहाँ से पास होने पर ये ड्राफ्ट देश में नयी शिक्षा नीति के रूप में लागू हो जायेगा। अगले 20 साल तक शिक्षा का स्वरूप, ढाँचा कैसा होगा यह सब यह शिक्षा नीति निर्धारित करेगी।

जहाँ तक विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक परिदृश्य की बात है तो वहाँ के हालात और भी निराशाजनक हैं। पिछले दिनों आयी रिपोर्टें कहती हैं कि केन्द्रीय और राज्य विश्वविद्यालयों में क़रीबन 70 हजार प्रोफेसरों के पद खाली हैं। हरियाणा के महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में 54% पदों पर नियमित भर्ती नहीं है। इनमें से 27% एडहॉक पर हैं जबकि 27% पद बिल्कुल खाली पड़े हैं! कमोबेश तमाम शिक्षण संस्थानों के यही हालात हैं। उच्च शिक्षा को सुधारने के लिए हायर एजुकेशन फाइनेंसियल एजेंसी (HEFA) बनी हुई है। उसका बजट विगत साल 650 करोड़ घटाकर 2100 करोड़ कर दिया गया था। उससे पिछले साल इसका बजट 2,750 करोड़ था किन्तु हैरानी की बात तो यह है कि ख़र्च सिर्फ 250 करोड़ ही किया गया।

नयी शिक्षा नीति बात तो बड़ी-बड़ी कर रही है किन्तु इसकी बातों और इसमें सुझाये गये प्रावधानों में विरोधाभास हैं। यह नीति शिक्षा के स्तर और गुणवत्ता को उन्नत करने की बात कहती है। दूसरी तरफ़ दूसरी कक्षा तक की पढ़ाई के लिए सरकार की ज़िम्मेदारी को ख़त्म करने की बात कहती है। शिक्षा नीति का मूल प्रारूप देश में स्कूली स्तर पर 10 लाख अध्यापकों की कमी को तो स्वीकार करता है परन्तु इन पदों की भर्ती की कोई ठोस योजना पेश नही करता। यह प्रारूप पहले 5 साल की पढ़ाई (3+2) में अध्यापक की कोई जरूरत महसूस नही करता। वैसे भी यह प्रारूप ढांचागत समायोजन की बात करता है जिसका मतलब है कम संसाधनों में ज़्यादा करो। उच्च शिक्षा नीति का ड्राफ्ट खुद स्वीकार करता है कि देश में अब भी 25% यानी 30 करोड़ से ऊपर लोग अनपढ़ हैं फ़िर भी नयी शिक्षा नीति में सार्वभौमिकता का पहलू छोड़ दिया गया है। यानी शिक्षा की पहुँच को आखिरी आदमी तक पहुँचाए जाने की कोई ज़रुरत नहीं! वैसे तो यह प्रारूप 2030 तक 100% साक्षरता के लक्ष्य को पाने की बात करता है परन्तु दूसरी तरफ़ कहता है कि जहाँ 50 से कम बच्चे हों वहाँ स्कूल को बन्द कर देना चाहिए। आज स्कूलों को बढ़ाने की जरूरत है किन्तु यह नीति ठीक इसके उलट उपाय सुझा रही है। पुरानी शिक्षा नीति कहती थी कि स्कूल पहुँच के हिसाब से होना चाहिए ना कि बच्चों की संख्या के हिसाब से। मूल प्रारूप शिक्षा के ऊपर जी.डी.पी. का 6% और केंद्रीय बजट का 10% ख़र्च करने की बात करता है किन्तु साथ में ये यह भी कहता है कि यदि कर (टैक्स) कम इक्कठा हुआ तो इतना खर्च नहीं किया जा सकता। यह प्रारूप शिक्षा के अधिकार के तहत 3-18 साल तक के बच्चे को निःशुल्क शिक्षा देने की बात करता है। यह एक सकरात्मक सुझाव है किन्तु आयु सीमा 18 साल तक नहीं होनी चाहिए बल्कि सरकार को शिक्षा नर्सरी से पी.एच.डी. तक निःशुल्क और एक समान देनी चाहिए। इस ड्राफ्ट में यह भी सुझाव दिया गया है कि छठी कक्षा से बच्चों को छोटे-मोटे काम-धन्धे भी सिखाये जायेंगे। आज हमारे देश के उद्योगों में उत्पादन क्षमता का सिर्फ़ 73% ही पैदा किया जा रहा है। पूँजीपति आपसी प्रतिस्पर्धा में सस्ते श्रमिकों की आपूर्ति के लिए वोकेशनल, आई.टी.आई, पॉलिटेक्निक इत्यादि संस्थानों का रुख कर रहे हैं ताकि इन्हें सस्ते मज़दूर मिल सकें और शिक्षा पर खर्च भी कम करना पड़े। यह कदम इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर नयी शिक्षा नीति में शामिल किया गया है। कुल मिलाकर नयी शिक्षा नीति का प्रारूप जनता के समान और निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार को हतोत्साहित ही करता है।

जहाँ तक विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक परिदृश्य की बात है तो वहाँ के हालात और भी निराशाजनक हैं। पिछले दिनों आयी रिपोर्टें कहती हैं कि केन्द्रीय और राज्य विश्वविद्यालयों में क़रीबन 70 हजार प्रोफेसरों के पद खाली हैं। हरियाणा के महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में 54% पदों पर नियमित भर्ती नहीं है। इनमें से 27% एडहॉक पर हैं जबकि 27% पद बिल्कुल खाली पड़े हैं! कमोबेश तमाम शिक्षण संस्थानों के यही हालात हैं। उच्च शिक्षा को सुधारने के लिए हायर एजुकेशन फाइनेंसियल एजेंसी (HEFA) बनी हुई है। उसका बजट विगत साल 650 करोड़ घटाकर 2100 करोड़ कर दिया गया था। उससे पिछले साल इसका बजट 2,750 करोड़ था किन्तु हैरानी की बात तो यह है कि ख़र्च सिर्फ 250 करोड़ ही किया गया। यह संस्था विश्वविद्यालयों को अनुदान न देकर लोन दे रही है, जो एक निश्चित समय के बाद विश्वविद्यालय को चुकाना होगा। सरकारें लगातार उच्च शिक्षा बजट को कम कर रही हैं। लगातार कोर्सों को स्व-वित्तपोषित बनाया जा रहा है। विश्वविद्यालयों को स्वायत्ता दी जा रही है जिसका मतलब है सरकार विश्वविद्यालय को कोई फंड जारी नहीं करेगी। सरकार की मानें तो विश्वविद्यालय को अपना फंड, फीसें बढ़ाकर या किसी भी अन्य तरीके से जिसका बोझ अन्ततः विद्यार्थियों पर ही पड़ेगा, करना होगा। इसके पीछे सरकार खजाना खाली होने की बात करती है किन्तु कैग की रिपोर्ट के अनुसार 2007 से अब तक प्राप्त कुल शिक्षा-कर (cess) में से 2 लाख 18 हज़ार करोड़ रुपये की राशि सरकार ने खर्च ही नहीं की है। क्या ये पैसा पूँजीपतियों को बेल आउट पैकेज देने पर खर्च किया जायेगा? एक तरफ सरकारें ढोंग करती हैं कि बजट का 10 प्रतिशत और सकल घरेलू उत्पाद का छह प्रतिशत शिक्षा पर खर्च होना चाहिए। दूसरी तरफ 10 और 6 प्रतिशत तो छोड़ ही दीजिए जो थोड़ी बहुत राशि शिक्षा बजट के तौर पर आवंटित होती है सरकारें उसमें से भी कटौती करने की फ़िराक में रहती हैं। यदि सोचा जाए तो हर किसी को शिक्षा देना सरकार की ज़िम्मेदारी है क्योंकि सरकारी खज़ाने का 85% के लगभग अप्रत्यक्ष करों के रूप में जनता की जेब से आता है और प्रत्यक्ष कर देने वालों के पास भी धन जनता की मेहनत की बदौलत ही आता है।

आज बेरोज़गारी का बहुत संकट छाया हुआ है। एक रिपोर्ट बताती है कि 2007 से 2016 के बीच लगभग 75 हजार ने आत्महत्या की है। एन.सी.आर.बी. (नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो) की ही अन्तिम रिपोर्ट कहती है कि साल 2018 में भारत में हर दिन 35 बेरोजगारों और 36 अर्द्ध-बेरोज़गारों ने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। निश्चित तौर पर इन आत्महत्याओं के पीछे बहुत बड़ा हाथ बेरोज़गारी और इससे पैदा होने वाली अनिश्चितता और अवसाद का है। एक रिपोर्ट कहती है कि हरियाणा में 1995-96 में सरकारी-अर्ध सरकारी 4,25,462 नौकरियाँ थी जोकि 20 साल बाद घटकर मात्र 3,66,829 रह गयी। यानी प्रदेश की तमाम सरकारें हर साल औसतन 3,100 नौकरियाँ खा गयी हैं! पढ़ी-लिखी युवा आबादी चप्पलें फटकारती घूमती है जिसके कारण मानविकी के अन्तर्गत आने वाले विषयों का तो जैसे दिवाला पिट गया है। प्रोफेशनल कोर्सों में भी अभिरुचि के अनुरूप नहीं बल्कि बाजार के रुझान के अनुरूप भविष्य के बेरोज़गारों की दिशा तय होती है और रोज़गार के मामले में यहाँ भी ढाक के तीन पात! मूल समस्या एक यह भी है उच्चशिक्षा रोज़गार परक नहीं है और समय के साथ इसकी व्यवस्था में बदलाव करके इसे समुन्नत करने के प्रयास नहीं किये जा रहे हैं। इसका नतीजा यह होता है कि छात्र पुस्तकालयों में मौजूद ज्ञान/विज्ञान के सागर तक पहुँचकर भी उसमें डुबकी नहीं लगा पाते। बेरोज़गारी का संकट उन्हें प्रतियोगिता की अन्धी चूहा दौड़ में धकेल देता है। परिणाम यह होता है कि युवा पीढ़ी अपनी जवानी का बेशकीमती वक़्त तोता रटन्त की भेंट चढ़ा देता है।

हरियाणा के तो हालात ये हैं कि यहाँ विश्वविद्यालयों में बड़ी संख्या में छात्र प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के मकसद से लाइब्रेरी पहचान पत्र और छात्रावास की सुविधा हासिल करने के लिए ही दाखिला लेते हैं। इसके बाद भी जब नौकरी हाथ नहीं आती तो युवा आबादी का गुस्सा निश्चित योजना और समस्याओं की सांगोपांग समझ की कमी के चलते धार्मिक और जातीय ठेकेदारों की रहनुमाई में जातिवाद और फूटपरस्ती की ओर रुख कर लेता है, बहुत सारे युवा नशे व अपराध की भेंट चढ़ जाते हैं, बहुत सी युवतियाँ पढ़-लिखकर भी चूल्हे-चौखट की गुलामी में होम हो जाती हैं।

निष्कर्ष रुप से देश में उच्च शिक्षा के हालात व शैक्षणिक संस्थानों की दशा और दिशा दोनों ही ख़राब हैं। आज का ज़िन्दा सवाल यही है कि इसमें परिवर्तन कैसे हो?

अमित मनोज

बिटिया के सैंडिल

भरी दुपहरी एक अजनबी शहर में घूम रहा हूँ
हाथों में लिए बिटिया के सैंडिल
ढूंढता कोई मोची
जो सी दे सैंडिलों की उधड़ी हुई बद्धियाँ
संडे है आज
और सब बैठने वाले अपने-अपने घरों में फरमा रहे हैं आराम
कर रहे हैं कुछ घर भर के काम
जो हफ़्तों से रहे अधूरे
और बीवी जिनके लिए डांट चुकी उन्हें कई बार

बिटिया को क्या बताऊँ
कि कोई मोची नहीं मिला कहीं भी इस शहर में
न जानता मैं किसी का पता
कि हाथ में सैंडिल लिए चला जाऊं उनके दरवाज़े
और प्रार्थना करूँ सैंडिलों को ठीक करने की
कि भाई मेरी बिटिया उभाणे पाँव खड़ी है
और दूसरी जोड़ी खरीदने की अभी हिम्मत नहीं है

कौन पसीजेगा देखकर मेरी हालत
और बिटिया के सैंडिल लिए मुझे देख
किसको याद आएंगी अपनी बेटियां
जो बहुत-सी तो मारी जा चुकीं गर्भ में
और बहुत-सी भेज दी गईं अजनबी घरों में सदा के लिए
इस तरह जैसे नहीं जरूरत है अब उनकी कभी

कौन मोची ले आएगा अपनी संदूकची
और हाथ में लिए बिटिया के सैंडिल छीन कर कहेगा मुझसे
लाओ भाई! मैं ठीक किए देता हूँ अभी अपनी बिटिया के सैंडिल

होर्डिंग

एक होर्डिंग कई दशकों से अविचल खड़ा है
आंधी वर्षा तूफ़ान उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाए हैं

यह होर्डिंग है कि
हर बार राज्य के मुख्यमंत्री के चेहरे से पटा होता है
सरकार जब भी नई बनती है
पहला आदेश होर्डिंगों के बदलने का ही देती है
पेंटर सरकारी आदेश की अनुपालना में हर बार
नए मुख्यमंत्री का चेहरा अपनी ब्रुश से बनाता है
और बाक़ी बची जगह में फोटो वाले की प्रशंसा में
बहुत कुछ लिखता है

कुछ होर्डिंग हैं जैसे कि यह जो आपके सामने है
हर बार नया मुख्यमंत्री आने के बाद भी
पुराने मुख्यमंत्री के चेहरे को छुपा नहीं पाता है
कई-कई बार तो ऐसा होता है कि
पुराने मुख्यमंत्री का चेहरा नए मुख्यमंत्री के चेहरे से इतना मिल जाता है
न नए मुख्यमंत्री का चेहरा ठीक से सामने आ पाता है
न पुराने मुख्यमंत्री का
ऐसा लगता है कि
पुराना मुख्यमंत्री अभी गया नहीं है
वह नए मुख्यमंत्री को धकेलने की फिराक में है
उसे विश्वास है कि यह भोली जनता

फिर लाकर बैठाएगी उसे कुर्सी पर

यह सही है कि जब भी जनता को लगता है कि
होर्डिंग पर छपा मुख्यमंत्री घमंडी अधिक हो गया
तो वह फ़ोटो के पीछे छुपे पुराने मुख्यमंत्री को आगे ले आती है
बेशक लोकतंत्र है
पर जनता के पास एक ही विकल्प है
या तो यह मुख्यमंत्री
या वह मुख्यमंत्री

दयाल जास्ट

1.

सदियों से मेरा नाम
नहीं लिया गया
आजादी के दौरान
और
आजादी के बाद
किये गए विकास कार्यों
मैंने
बार-बार जोड़ा है
अपनी बिखरती हड्डियों को
खेत के लिए
समाज के लिए
सदियों से।

मैंने भी सपने लिए हैं
नए दौर के
बिना हो-हल्ले
बिना सौर के
अपने लिए
परिवार के लिए
नयी व्यवस्था में
अपने देश की

रोटी के लिए
वजूद के लिए
मैंने नहीं तोड़े नियम
और
सत्ता है कि
मेरा दम घोंटती रही हर बार
सत्ता के लिये।

सुन तो लिया है ना आपने
रामायण के दौरान भी मैं था
महाभारत में भी मैं था
1857 में मैं था
1947 के बाद भी मैं ही हूँ
जो चुपचाप लगा हूँ अपने काम में
जो आता है मेरे देश के काम।

मेरी उदासीनता एक प्रश्न है
मेरा मौन एक बिगुल है
ये देश मेरा देश है
मेरा खुद का संसार है
मैं खुद ही जीना चाहता हूं
क्योंकि अब मैं आजाद हूँ
और
इसके लिये मैं राजद्रोह भी करूँगा।

2.

जो प्रातः प्यार बरसाएगी
सबके तकरार मिटाएगी
दिल मे लेकर आएगी कोई खास जगह
उस दिन की है इंतजार मुझे।

जुल्म-ज्यादती कहीं न हो
सहुकारे की बही न हो
आत्महत्या कहीं न हो किसी तरह

उस दिन की है इंतजार मुझे।

जिंदगी ये हराम न हो
देश मेरा बदनाम न हो
बुरा कोई पैगाम न हो
अब तो आये कोई नेक सुबह
उस दिन का है इंतजार मुझे।

मजहब सारे एक रहें
नेकी करें और नेक कहें
न लड़ें न लड़ाई सहें
होगी मानवता की फतेह
उस दिन का है इंतजार मुझे।

अरुण कैहरबा

बच्चों के बोल

हर बच्चा ही रहा है बोल
खेल-मेल का मिले माहौल।
झिझक ना हो संकोच ना हो
सब बच्चे बोलें दिल खोल।
जिज्ञासा में जब कुछ पूछें
प्रश्नों को ना करे कोई गोल।
सम्मान सहित शिक्षा हो अच्छी
किसी का भी ना बने मखौल।
खेल भी हो शिक्षा भी हो
खेल और शिक्षा हों हमजोल।
भूखा और बेबस बालक
कूड़ें में क्या रहा टटोल।
बचपन तो है बड़ा कीमती
नहीं मिलता पैसों के मोल।
आओ इसे बचाएं मिलकर
और निभाएं अपना रोल।

जयपाल

लिखना है
उन हाथों के लिए
जो ज़ंजीरों में जकड़े हैं
लेकिन प्रतिरोध में उठते हैं
उन पैरों के लिए
जो महाजन के पास गिरवी हैं
लेकिन जलूस में शामिल हैं
उन आँखों के लिए
जो फोड़ दी गई हैं
लेकिन सपने देखी हैं
उस ज़ुबान के लिए जो काट दी गई है
लेकिन बेज़ुबान नहीं हुई
होठों के लिए जो सील दिए गए हैं
लेकिन फड़फड़ाना नहीं भूले

योगेश शर्मा

1.

शहर की ऊँची ईमारतें
गाँव के छोटे घरों पर जंगल जंगल
चिल्लाती हैं,
और बड़े घरों को विस्थापन मार्ग पर लगा
इंडिकेटर समझती हैं।
ये वही इमारतें हैं,
जिनकी घटती बढ़ती छांव तले
फूल, फूल बेचते हैं।

उनके पास तर्क हैं
गाँव को जंगल कहने के,
इसके लिए उन्होंने दिल्ली में बैठक की है,
वे कहते हैं,
यहाँ सुविधाएँ नही हैं,
बीमारी में शहर की तरफ दौड़ो
महामारी में शहर की तरफ दौड़ो

शादी ब्याह में,
तीज त्यौहारों,
मरण गलन आदि आदि सब में,
और यह तय हुआ है कि इन तर्कों की प्रमाणिकता
दिल्ली तय करेगी।

शहरों में कुत्ते, दया हेतु
सीख गए हैं ढोंग करना।
बिल्लियाँ कुत्तों के साथ रहती हैं,
चूहे विशालकाय होते जा रहे हैं।

चैत की बारिश में उन्मादित हुए शहरी कवि
भाषा के हर सम्भव शिल्प को तलाशकर
प्रेम प्रेम चिल्लाते हैं...

संस्कृति कहती थी,
आग सबसे शुद्ध होती है
फिर ऐसा हुआ,
किसी ने उस संस्कृति में ही आग लगा दी।
आजकल 'जंगलों' में कुछ ही लोग बचें हैं
कुछ की
केवल मानसिकता विस्थापित हो पायी है
और कुछ सशरीर विस्थापित हो गये।

2.

बारिश अजीब है,
पक्की छत वालों को
हमेशा कम लगती है
और कच्ची छत वालों को
हमेशा ज्यादा,
नही नही, बारिश नही
घरों की छत ही अजीब हैं।

पुस्तक विमोचन

हरियाणा सृजन उत्सव में राधेश्याम भारतीय की बाल-साहित्य पर केन्द्रित पुस्तक समरीन का संसार का विमोचन किया गया। इस मौक़े पर शिक्षाविद् प्रो. कमलानंद झा, देस हरियाणा पत्रिका के सलाहकार प्रो.टी.आर.कुंडू, प्रसिद्ध भाषाविद् प्रो.जोगा सिंह, देस हरियाणा के सम्पादक डॉ.सुभाष चन्द्र, गांधीवादी चिंतक राममोहन राय, लेखिका कमलेश चौधरी, कहानीकार ब्रह्मदत शर्मा, लेखक राधेश्याम भारतीय, लघुकथाकार व कवियत्री कमलेश मनशवी 'पद्ममांजली', जनसंचार विभाग के.यु.के. से डॉ.आबिद अली आदि मौजूद थे।

मंजीत भोला

1.

चरागों की तो आपस में नहीं कोई अदावत है
अँधेरा मिट नहीं पाया उजालों की सियासत है

जहां तू सर पटकता है वहां बस एक पत्थर है
इबादत से बड़ी गाफिल यहाँ पर शै नदामत है

बहाना मत जरा आँसू समझ लेना मेरे बाबा
क़त्ल मेरा करेंगे वो, बताएंगे शहादत है

नशा उतरे हक़ूमत का तभी हाकिम कोई समझे
जहां तामीर कुरसी है,पराई वो इमारात है

रंगे हैं हाथ जिसके खून से खैरात वो बांटे
कयामत है कयामत है कयामत है कयामत है

नदामत : प्रायश्चित

2.

संगदिल वो पानियों की धार से वाकिफ़ नहीं
किस तरह दिल में रहेगा प्यार से वाकिफ नहीं

हर शज़र पे लाल पत्ते चाहता है ना समझ
ये परिंदा बाग़ के मेयार से वाकिफ़ नहीं

जो मुहाफ़िज़ बन गए हैं आज चौथे लाट के
राम औ' लंकेश के किरदार से वाकिफ़ नहीं

कमजकम वो आदमी तो चैन से होगा यहाँ
जो किसी चैनल किसी अखबार से वाकिफ़ नहीं

दर्दे-दिल इक रोज मेरा खुद दवा हो जाएगा
चारसाज़ों तुम मिरे आज़ार से वाकिफ़ नहीं

राम : पत्रकार रामचंद्र छत्रपति
लंकेश : पत्रकार गौरी लंकेश

3.

हर तरफ सहमी हुई सी प्यार की आवाज है
चाहतों के देश में अब नफरतों का राज है

कौन चिड़िया गुनगुनाए गीत यारों बाग में
हर शज़र पे आजकल बैठा हुआ इक बाज़ है

तानपूरे,ढोल,तबले,बाँसुरी खामोश है
गोलियों की धुन सुनो बन्दूक ही अब साज़ है

कागजी किरदार सारे हैं अदीबों मौज में
रौनकी मुहताज कल था आज भी मुहताज है

है कहाँ गिरवी कलम, कुछ ऐ सहाफी तुम कहो
खुदकुशी लिखते क़त्ल को क्या गज़ब अंदाज है

खुशबुएँ थी जिन गुलों में बस वही तोड़े गए
काम जो आए किसी के गिरती उस पे गाज है

हक मिरा जो खा गए वो कह रहे हैं दोस्तों
है हमारा खास "भोला" हमको उसपे नाज़ है

सहाफी : पत्रकार

मंगत राम शास्त्री

मेरे मन के सारे कमरे खाल्ली सैं।
प्यार बिना बेचारे कमरे खाल्ली सैं।

कर दी डुब्बा ढेरी घर की लालच नै
खुदगर्जी के मारे कमरे खाल्ली सैं।

कट्ठे थे जब रोज तुहार हुया करदे
जिब तै पाट्टे न्यारे कमरे खाल्ली सैं।

बाल़क फिरते पढ कै भी रुजगार बिना
बहुवां बिना कुवारे कमरे खाल्ली सैं।

पेट की खात्तर बाल़क बाह्र गये घर तै
यें गुरबत के मारे कमरे खाल्ली सैं।

बटवारे पै जिब तै जूत बजया घर म्हं
बच्च्यां ज्यूं भैमारे कमरे खाल्ली सैं।

"खड़तल" पंछी उड़गे जो,वें ना आणे
करदा रहो इशारे कमरे खाल्ली सैं।

2.
के सोच्चै सै आग नि बल़दी लकड़ी गिल्ली म्हं
भोत घणी बारूद हो सै नफरत की तिल्ली म्हं

घर जल़गे, माणस मरगे, गिणती रोज बढ़ै सै
हा- हा कार मची चोगरदै देक्खो दिल्ली म्हं.

"फूलआल़्यां की सैर" हुई बदनाम जमान्ने म्हं
काल़स लाग्गी बख्तीयार की चाद्दर लिल्ली म्हं

जिस टिल्ली पै खेल्ले बाल़क अलगू-जुम्मन के
पाट्टी मिली दराड़ बडी उस साज्झी टिल्ली मह

हाकिम की चालाकी देक्खो मसला उल़झा कै
उसका हल टोह्वै सै मुंसिफ की तबदील्ली म्हं

"रात की राणी तो लुट गी"इब खड़तल सोच्चै सै
क्यूकर रौणक हुवै चमन की तबियत ढ़िल्ली म्हं

3.
दौर इसा सै यू इब लोग डराए जां सैं।
अंधी देश भगती म्हं धकियाए जां सैं।

ऐर नहीं मान्नैं बेशक और् सच बोल्लैं जो
लोग इसी वजह तै भी मरवाए जां सैं।

अपणै बरगे अनुयायी चहियें हाकिम नै
ज्यां तै छांट विदेशी घरां बुलाए जां सैं।

निर्धन बाल़क पढ़ ज्यां सैं जिन संस्थानां म्हं
करवा दंगे वें बदनाम कराए जां सैं।

फीस कम कराण तईं जो धरणा देवैं
इब निर्दोष वें छात्तर भी पिटवाए जां सैं।

सारी दुनिया म्हं भिद पिट री जी.डी.पी.की
हिन्दू- मुस्लिम लड़वा खोट छुपाए जां सैं।

इसतै माड़ी कार बता और् के होवैगी
कुर्सी खात्तर फौज्जी तक मरवाए ...

4.
हांसण खात्तर मनवा बेफिकरा चहिये सै।
सुंदर होण तईं हिरदा सुथरा चहिये सै।।
कहणे को तो बहुत फिरैं सैं मुंह नै बांएं
साच्ची बात कहण खात्तर जिगरा चहिये सै।

आज तेरै सिर फोड्या कल मेरै फोड़ैगा
उसनै तो हर रोज नया ठिकरा चहिये सै।

बह्र निभावण भर तै बस गजल नहीं बणदी
मकसद पूरा करदा हर मिसरा चहिये सै।

बाग जल़ै पर कह माल़ी, पील़े फूल खिले
झूठ चलाण तईं माणस नुगरा चहिये सै।

इब तो सिटिजनशिप नै सिद्ध करण ताहीं भी
दाद्दे पड़दाद्यां तक का सिजरा चहिये सै।

"खड़तल"सबनै थ्यावै न्या-भा, इस खात्तर तो
इस सिस्टम म्हं परिवर्तन सगरा चहिये सै।

कर्मचंद केसर

भूली बिसरी याद पराणी लिख द् यूं के
मैं भी अपणी राम काह्णी लिख द् यूं के

बणकै खंडहर रोवै अपणी हालत पै
उस कुएं का मीठा पाणी लिख द् यूं के

मार् या करते छाळ जोह्ड म्हं बड़ पै तै
केह् रु -मेह् रु सारे हाणी लिख द् यूं के

कचरी गोअल बेर लसूड़े अर नाप्पै
कुदरत के मेव्यां की ढाणी लिख द् यूं के

सुणी सणाई सबनैं पीढ़ी दर पीढ़ी
रांझा हीर की प्रेम काह् णी लिख द् यूं के

फूटे आंडे खिंड् या आलणा चिड़िया का
दरख़त की वा टूटी टाह् णी लिख द् यूं के

खेल्या करती गुड् डा गुड़िया नीम्ब तळै
कमला बिमला शिमला राणी लिख द् यूं के

कती नहीं इब तलक भी प्यार की पूणी
धरम जात म्हं उळझी ताणी लिख द् यूं के

करकै याद घर गाम खेत नैं बुढ् ढे की
आंख्यां के म्हं रिसदा पाणी लिख द् यूं के

ईख बाजरा बाड़ी जीरी कणकां की
करैं लामणी बीर कमाणी लिख द् यूं के

पुरखां की जैदाद लुटा दी हो जिसनैं
'केसर'उनकी कुणबा घाणी लिख द् यूं के

2

ठेकेदार का देक्खो हाजमा क्यूकर उनैं डकारे।
रेता-रूता, बजरी-बूजरी, पत्थर-पाथर सारे।

मतलब सेती आवै-जावै मतलब सेती बोल्लै,
सगैर-सगूर, भाई-भूई, मित्तर-मात्तर सारे।

खंडहर देखकै बुडढा बोल्या सब मर खपग्ये उस म्हं,
राजे-रूजे, राणी-रूणी, नौकर-नाककर सारे।

फाग्गण म्हं रंग छोड़ लुगाई मणसा ऊपर गेरैं,
पाणी-पूणी, चीक्कड-चाक्कड, गोबर-गाबर सारे।

बाबा की करामात देखिये सब चरणा म्ह बैठे,
धाक्कड-धुक्कड, अफसर-ऊफसर, लीड़र-लाड़र सारे।

रह्ये नहीं इब ओरै-गोरै दरखत झाड-बोझड़े,
जाल-जूल, कैर-कूर, कीकर-काक्कर सारे।

चौगिरदै इब दिखते कोन्या के बेरा कित लुकग्ये,
तोते-ताते, चील-चूल, तीतर-तातर सारे।

याद आवै सै जाड्या म्हं जब जिब ददकीड़ी बाज्जै,
धूणा-धाणा, गीठी-गाठी, हीटर-हाटर सारे।

देर सवेर आण मिलैंगे इसे धूल म्ह मैं भी।
कंवर-कुंवर, ठाक्कर-ठुक्कर, केसर-कासर सार

सुरजीत सिरड़ी की पंजाबी कविता

1.

दिल्लीए!
की तूँ भुल्ल गई ऐं
देग विच उबलदा
दयाला
रुँ विच सड़दा
सती दास
आरे नाल चिरदा
मती दास
जां ओह चांदनी चौक
जित्थे धड़ तों वक्खरा
कीता गया सी
गुरु दा सीस
चलो हो सकदा ए
तूँ भुल्ल गई होवें
इह सभ
पर चुरासी तां हाले कल
ही बीतया
सड़दे टायरां दी बोअ
कायम है हवा विच
ओसे तरां
अजे तां ओदां ही पये ने
साडे फट्ट हरे
लहू मिझ नाल गंधली
पई है धरती
हाले तीकर
अजे तां अदालत विच पै
रहीआं ने
तरीकां वी
दिल्लीए!
तूँ ऐनी छेती फ़िर क्यों
मंगन लगदी हैं ख़ून

की कुझ समें बाद
जाग पैंदा है
तेरे अन्दरों सुत्ता होया
कोई पिशाच
ते इह आदमखोर
उदों तक मुंह अड्डी
रक्खदा है
जिन्नी देर मनुक्खता
त्राह त्राह नहीं कर
उठदी

2.

भारत माँ दा शब्द चित्र

तिन्न रंगे कपड़े दी
रेशमी साड़ी विच
लिपटी होई
मत्थे ते बिंदी
ला के खलोती
सोहनी जेही कोई
मुटियार
भारत माँ किंवें
हो सकदी ऐ

चित्रकार
दा चित्र
ऐना बेमानी
किंवें हो सकदा ऐ
सच्च तों ऐना दूर
शायद उस कोई
सुपना सिरजिया होवे
पर मैं
किंवें मन्न लवां
इस नूँ भारत माँ

एह कौन है ?
जो कचहरियाँ विच
कुर्सी दे पावयां नाल बज्झे
जज्जाँ अग्गे
नियाँ लई हाड़े कढदी है

इह कौन है जो
तैमूर,गजनी ते बाबर हत्थों
ही नहीं अपने जायाँ दे हत्थों वी
निर्वस्त्र हुंदी
अंग अंग तुड़वाउंदी
ज़ार ज़ार रोंदी है

एह कौन है
जो अपने हकां लई
आवाज़ उठाउंदी
ज़ाबरां हत्थों
हर वार
सिर पड़वाऊंदी
लहूलुहान हुंदी है

एह कौन है जो
सैंकड़ियाँ वार
मज़हबां दे ज़हर नाल
तड़पदी , विलकदी , सिसकदी
मुंहों झग उलटदी है

एह कौन है जो
बहुत नाँह नाँह
करदी वी
नीम हकीमां पासों ही
अपने अंदर जनमीयाँ
कैंसरां ते टी बी' याँ
दा इलाज़ करवाऊंदी है

एह कौन है
जो मजबूरी वस
पिठ पिच्छे बन्न के बाल निक्का
 सिर ते बठ्ठल ढोंदी
 पौड़ीयाँ चढ़दी
 कारपोरेट लई लुट दे केंद्र
स्थापित करदी है

एह कौन है
जो हर वार
वोटां लई विकदी
सच्च नूँ झूठ नाल हिकदी
लोकराज लई सिकदी है।

मेरे चित्रकार दोस्त
की तूँ भारत माँ दा
इस तरां दा वी
कोई चित्तर चितर
सकदा हैं
जे चितर सकदा ऐं
तां मैनूं ज़रूर भेंट कर
नहीं तां मेरे वल्लों
भारत माँ दा एह
शब्द चित्तर कबूल कर

विक्रम राही की रागनी

भगतसिंह तेरे आज़ मुल्क नै है बाट्टण आले़ रैह्गे
बस जात धर्मं के नाम पे न्यारे छाट्टण आले़ रैह्गे

तनै कह्या था गौरे जांगे काले क़ब्ज़ा कर लेंगे
फूट डाल कै राज करण की उसै नीति नै बर लेंगे
थोथे नारे नक़ली मुद्दे घड़ कै बुद्धि हर लेंगे
लोग मुल्क के जात धर्म पै लड़ लड़कै मर लेंगे
बुका सिखा मैं नीत रहै जड़ै काट्टण आले़ रह्गे ।

म्हारे देस की आजादी रै ना रुंगे मैं थ्याई थी
हिंदू मुस्लिम सिख सभी नै ज्यान की बाजी लाई थी
राजगुरु सुखदेव भगत सिंह अश्फ़ाक नै ज्याही थी
उधम सिंह और बिस्मिल नै भी ओटी खूब तबाही थी
बहोत से माणस उतां के तल़वे चाट्टण आले़ रैह्गे

दंग्यां के माह जल़ै देख न्यूं किस किसका घर बार सुणो
कोण होया उरै जख्मी लोगों कोण दिया उरै मार सुणो
जुल्म देखकै जो आंख मीचले उसका दिल गद्दार सुणो
माणस के हाथां चौड़े कालर माणसपण की हार सुणो
गल़े लागकै थोड़े माणस दिल डाट्टण आले़ रैह्गे

माणस नै माणस की चाह्वां माणस बण सम्मान करो
जात धर्म के मेट्टो रोल़े जो कह् रया संविधान करो
सीख सूथरी लेणी चाहिए उन्नत मन विज्ञान करो
बाल़ पुल़ा यू कोण फिरै थम उसकी भी पहचान करो
विक्रम राही नफरत की खाई कम पाट्टण आले़ रैह्गे

हम भारत के लोग और आगे का रास्ता

✦ प्रो. जोगा सिंह

हरियाणा सृजन उत्सव-4 के समापन सत्र में प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक प्रो. जोगा सिंह ने 'हम भारत के लोग और आगे का रास्ता' पर विचार व्यक्त किए। जिसमें भारत के लोग कौन हैं वक्तव्य की प्रस्तुति देस हरियाणा टीम के सदस्य इकबाल सिंह ने की।

इस बार हरियाणा सृजन उत्सव का केन्द्रीय विषय 'हम भारत के लोग' रखा गया है तो बहुत ताज्जुब हुआ। इन्होंने यह विषय कैसे रख दिया। भारत के लोग कौन हैं? यह तो अभी तक तय भी नहीं हुआ। सबसे बड़ा काम तो यही है। सरकार कह रही है पहले तो हम यह तय करेंगे कि भारत के लोग कौन हैं? अब कैसे तय करें कि कौन, कहां पैदा हुआ था। यदि हम यह सोचें कि जहां से हम आए, हम वहां के नागरिक होंगे, तो भारत का तो कोई नागरिक ही नहीं है, यहां पर सब अफ्रीका से आए हैं।

करोना काल में भी सृजन हुआ। किसी ने करोना का कॉर्टून बनाया और सींग लगाये, जीवा लाल थी उसका जो वर्ण है वह कुछ कृष्ण वर्ण(अश्वेत) था। क्या कोई हिम्मत कर सकता है कि कोई ब्रह्मा वर्ण का कॉर्टून बना दे? पहला तो उस कॉर्टून से पता चलता है कि भारत के लोग कौन हैं, और कौन नहीं हैं। जो अश्वेत वर्ण है वह भारत में वॉरयस है, नुकसान करने वाला है। बॉलीवुड की कितनी फिल्मों में कृष्ण वर्ण की नायिका देखी है? नायक तो है कुछ फिल्मों में जैसे 'गौरा और काला' फिल्म के अलावा 'मदर इण्डिया' में सुनील दत्त थे। कभी आपने ऐसी कोई क्रीम देखी है जिससें आपका वर्ण काला हो जाएगा।

हम किसे भारतीय नागरिक मानते है, इस पर विचार करने की जरूरत है। हम हिमाचल और पूर्वोत्तर के राज्यों में जमीन नहीं ले सकते। हमें पूर्वोत्तर के राज्यों में जाने के लिए इनर लाईन परमिट लेना पड़ता है। जब से भारत का एकीकरण शुरू हुआ है तब से इनर लाईन परमिट का क्षेत्र ओर बढ़ गया है। पहले मिजोरम के कुछ क्षेत्र जो इनर लाईन परमिट में थे। कश्मीर में धारा 370 के मामले के पश्चात मिजोरम के सारे क्षेत्र में इनर लाईन परमिट लागू हो गया। असम में 19 लाख लोगों को जो नागरिकता रजिस्ट्रेशन से बाहर हो गये, उन्हें असम अब रखने को तैयार नहीं है, अब उन्हें कहाँ ले जाना। नागालैंड का कुछ क्षेत्र था जो इनर लाईन परमिट में था। अब नागालैंड की राजधानी कोहिमा के शहर दीमापुर में भी आप परमिट के बिना नहीं जा सकते। भारत के ज्यादा से ज्यादा क्षेत्र इनर लाईन परमिट में आ रहे हैं। ऐसे भारत का एकीकरण हो रहा है।

भारत की भाषा कौनसी है? कौन-सी नहीं है? इसका ठोस जवाब नहीं है। भारत सरकार ने 1961 में हमें बताया था कि भारत में 1652 भाषाएं थी। अब 2011 तक आते-आते वह 124 भाषाएं रह गई। केवल 22 भाषाएं को ही आठवीं अनुसूची में शामिल किया है।

भारत क्या है? अभी हमें जानने की जरूरत है और 1947 के बाद पहली बार, भारत में विचार हो रहा है कि भारत क्या है? भारत के नागरिक कौन है? पहले कश्मीर के संविधान के अनुसार जब तक कश्मीर सरकार कोई कानून पास नहीं करती तब तक भारत सरकार का कोई भी कानून कश्मीर में लागू नहीं होगा। धारा 370 के साथ वह अब हटा दिया।। कश्मीर के राज्यपाल की सहमति को कश्मीर की सहमति मान ली जाती है लेकिन 1942 में लाहौर की असेंबली में जो स्थानीय सरकार थी पंजाब की, उसने सर्व-सहमति से कानून पास किया था कि हम पंजाब का बंटवारा नहीं होने देना चाहते।

हमारे देश में नस्लें कितनी है, किस नस्ल व किसी भाषा का भारत पर कितना हक है? और मौलिक कौन है? यह तय करना मुश्किल है। भारत विविधताओं से भरा देश है जिसमें अनेक जाति, धर्म, भाषा व बोलियों को लेकर, यह विविधता ही भारत की संस्कृति है। 1950 में हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें एक मजबूत संविधान दिया था। भारतीय संविधान पर लगातार हमले कर उसे कमजोर किया जा रहा है। आज हम सभी को मिलकर मानवता विरोधी व भारत की मिली-जुली संस्कृति को नष्ट करने वाली ताकतों का विरोध करना होगा।

हरियाणवी समाजः सृजन और बौद्धिक उदासीनता

✦ प्रो. टी. आर . कुंडू

हरियाणा ने भौतिक सफलता तो पाई लेकिन बौद्धिक स्तर पर हरियाणा की उपलब्धियाँ क्या हैं? पिछले कुछ समय में दूनिया में जो कुछ भी घटा है, उसको लेकर हरियाणवी <u>इंटेलेक्चुअल</u> का नज़रिया क्या है? बुद्धिजीवियों, नेताओं, अध्यापकों और पत्रकारों द्वारा कही गई बातों से समाज दिशा लेता है लेकिन हरियाणा में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विचारों को लेकर बुद्धिजीवियों में पहलकदमी का अभाव दिखाई देता है। हरियाणा सृजन उत्सव में 'वर्तमान हरियाणवी समाज और बौद्धिक उदासीनता' विषय पर आयोजित सत्र का संचालन प्रो. सुभाष चंद्र ने किया। वक्ता के तौर पर प्रो.टी.आर. कूंडु, अमित ओहलान, महेंद्र सिंह और कृष्ण बेनीवाल ने भाग लिया। प्रस्तुत है प्रो. टी.आर. कुंडू का व्याख्यान। प्रस्तुति- ब्रजपाल।

हरियाणा के बारे में बात करना, यानी अपने बारे में बात करना और अपने बारे में बात करना थोड़ा मुश्किल होता है और इसके लिए जिगरा चाहिए, हम आम तौर पर अपने बारे में बताते कम और छिपाते ज्यादा है। बल्कि हम बहुत सारे प्रयास करते हैं कि जैसे हम हैं वैसे नजर न आए। आईना भी अकेले देखते हैं। लेकिन कर्मचंद 'केसर' जी ने एक बात कही -'कि कह दूँ क्या' और यह बात मेरी हर बात के पीछे लगा दीजिए।

आज हरियाणा में हर रोज ग्यारह अपहरण की घटनाएं घटती हैं, तीन हत्या होती हैं, पांच रेप होते हैं। महिलाओं के मामले में हरियाणा देश का सबसे असुरक्षित राज्य है। हमारा युवा नशे की लत में आ गया यानि कि जो उड़ता पंजाब है उसके बगल में एक बिगड़ता हरियाणा भी है। नैतिकता का ह्रास हुआ है।

हरियाणा 1 नवंबर 1966 को एक पृथक राज्य के रूप में बना और बहुत सारे उतार-चढ़ाव से गुजरा है। गतिशील या जिस को अंग्रेजी में डायनेमिक स्टेज कहते हैं। पृथक राज्य के रूप में गठन के बाद ऐसे अनुमान लगाए जा रहे थे कि यह राज्य क्या अपने पांव पर खड़ा हो पाएगा? क्या यह राज्य पर्याप्त मात्रा में अपने लिए खाद्यान्नों का उत्पादन कर पाएगा? इन सब आशंकाओं को झुठलाते हुए उनको दरकिनार करते हुए हरियाणा ने हर क्षेत्र में कीर्ति के नए आयाम स्थापित किए।

हरियाणा देश का पहला राज्य था जिसने अपने हर कस्बे में हर गांव में पानी, बिजली, सड़क पहुंचाई यानि कुछ राज्यों से हरियाणा आज 50 साल आगे है जहां यह सुविधाएं आज भी उपलब्ध नहीं है। हम अनेक क्रांतियों का प्रमुख केंद्र बने। बल्कि देश को आत्मनिर्भर बनाने में हमारा महत्वपूर्ण योगदान रहा है। औद्योगिक क्षेत्र में हमने महत्वपूर्ण पहचान बनाई। कृषि मशीनरी या उपकरण बनाने में हम देश के अग्रणी राज्यों के साथ खड़े हैं। हम ऑटो सेक्टर के लीडर हैं। हमारी अंबाला और रेवाड़ी की जो फर्म है वह इसरो के लिए उपकरण बना रही है। हमारे इंजीनियर और मैनेजर देश के लिए अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। सूचना क्रांति का भी हिस्सा और जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है उसके विकास में भी हमारा महत्वपूर्ण योगदान है। कुल मिलाकर आर्थिक क्षेत्र में हम एक मॉडल के रूप में उभरे और आज हम देश का सबसे रिचेस्ट स्टेट हैं। प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से आज हरियाणा देश का सबसे धनाढ्य राज्य है। गोवा को छोड़कर जो बड़े राज्य है उनमें हमारे प्रति व्यक्ति आय सबसे ज्यादा है। खेलों में हमारे खिलाड़ियों ने नए कीर्तिमान बनाए हैं और यह साबित किया है कि जो असली एंपावरमेंट है वो अंदर से आती है यानी कि अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को पहचानना ही वास्तविक सशक्तिकरण है।

इस बदलाव का एक दूसरा पक्ष भी है हमारा जो

आर्थिक विकास रहा यह समावेशी नहीं रहा। इसके लाभ विभिन्न क्षेत्रों को विभिन्न वर्गों को समान रूप से नहीं बटें। जिससे असंतोष और तनाव आया। तनाव परिवर्तन में होता है चाहे वह अच्छे के लिए हो। लेकिन यह बुरे के लिए तनाव हुआ और अपराधीकरण बढ़ा। आज हरियाणा में हर रोज ग्यारह अपहरण की घटनाएं घटती हैं, तीन हत्या होती हैं, पांच रेप होते हैं। महिलाओं के मामले में हरियाणा देश का सबसे असुरक्षित राज्य है। हमारा युवा नशे की लत में आ गया यानि कि जो उड़ता पंजाब है उसके बगल में एक बिगड़ता हरियाणा भी है। नैतिकता का ह्रास हुआ है।

उदारीकरण के बाद हमारी अर्थव्यवस्था ने रफ्तार पकड़ी और एक मिडिल क्लास का तेजी से विकास हुआ। खुली अर्थव्यवस्था अपनाई गई जिसमें देश विदेश के नए-नए ब्रांडेड वस्तुएं आई। उपभोग की संस्कृति का विकास हुआ उसका प्रचार हुआ। उपभोग हमारी हैसियत का हमारी प्रतिष्ठा का मापदंड बन गया। शॉपिंग मॉल्स, जिम खाने या, कलब, कदम-कदम पर रेस्टोरेंट्स यह नए-नए स्थल बने। हम अपना जन्मदिन होटलों में मनाने लगे, केक भी बाहर से आने लगे और शादियां वेडिंग पैलेस में होने लगी। यह जो उपभोग की संस्कृति है। इसमें उचित अनुचित कुछ नहीं होता। यह मौज-मस्ती की संस्कृति है इसकी जो बुनियाद है वह अश्लील विज्ञापनों पर, झूठे प्रचारों पर और भ्रामक विचार पर टिकी हुई होती है। इन सब बातों ने हमारे आचरण को हमारे मूल्यों को बुरे तरीके प्रभावित किया है आज हम दो तरह का हरियाणा देखते हैं आधुनिक हरियाणा है और सांस्कृतिक हरियाणा।

एक आधुनिक हरियाणा है जिसके पास संस्कृति के नाम पर कंज्यूमर संस्कृति है। वह व्यवहारिक हरियाणा है जो परिणामों में विश्वास रखता है वो रिजल्ट चाहता है। कानून से थोड़ा बहुत घबराता है लेकिन उचित अनुचित में कोई भेद नहीं करता इस तरह की यांत्रिक विवेक से चलता है। दूसरी तरफ जो हरियाणा है उसके पास विरासत है, मूल्य है और बेबाकी भी है जिसके पास अपनी बोली है, जो अपनी संस्कृति को जी रहा है। अपने विरोधाभासों से भी गिरा हुआ है, असहजनीय है, बदलना भी चाह रहा है। आज हमें दोनों हरियाणाओं के बीच एक संवाद की जरूरत है। एक सांझी जमीन की जरूरत है जिससे हरियाणा की एक स्वस्थ संस्कृति का निर्माण हो सके और यह कार्य जो है वो सृजनकार ही कर सकते है।

हमने एक राजनीतिक मॉडल भी दिया है डेमोक्रेसी का। हमारे विकास को दूसरों ने स्वीकार नहीं किया। लेकिन जो डेमोक्रेसी का बिगड़ा हुआ जो मॉडल है उसे देश के दूसरे सभी राज्यों ने स्वीकार किया। ऐसा सुनने में भी आता है कि हरियाणा से ही 'आया राम - गया राम' की संस्कृति पैदा हुई। एक विधायक थे जिन्होंने पाँच दफा अपनी पार्टी बदली। यानि पार्टी की मैम्बरशीप ऐसी हो गई कि जैसे कि शेयर खरीदते है। दूसरा रिजोर्ट की यानि कि भावदर्शन की जो संस्कृति शुरू हुई वह हरियाणा से ही शुरू हुई। जब एक पार्टी के नेता सभी एम.एल.ए को बैठा कर किसी भावदर्शन पर चले गए और बस पर लिखा था शंकर वेडस देवी ।

एक और बात जो हरियाणा से निकली है वो जात-पात की बात है। यानि की जाति एक राजनैतिक इकाई बनी। नेहरू जी ने कहा था कि जात-पात तो एंटी-डेमोक्रेसी है। उनको लगा था औद्योगीकरण के कारण जब लोग इक्ट्ठा होंगे और मिले-जुलेंगे तो यह समाप्त हो जाएगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ। आज हर पार्टी टिकट देने से पहले यह देखती है कि इसकी जाति क्या है और जाति के लोगों की जनगणना क्या है। तो जो विकृत रूप है उसको तो सभी ने स्वीकार किया लेकिन जो हरियाणा का शुक्ल पक्ष उसको किसी ने नही देखा। इस पक्ष को भी अगर देखा होता तो आज हरियाणा की छवि कुछ और होती है।

एक आधुनिक हरियाणा है जिसके पास संस्कृति के नाम पर कंज्यूमर संस्कृति है। वह व्यवहारिक हरियाणा है जो परिणामों में विश्वास रखता है वो रिजल्ट चाहता है। कानून से थोड़ा बहुत घबराता है लेकिन उचित अनुचित में कोई भेद नहीं करता इस तरह की यांत्रिक विवेक से चलता है। दूसरी तरफ जो हरियाणा है उसके पास विरासत है, मूल्य है और बेबाकी भी है जिसके पास अपनी बोली है, जो अपनी संस्कृति को जी रहा है। अपने विरोधाभासों से भी गिरा हुआ है, असहजनीय है, बदलना भी चाह रहा है। आज हमें दोनों हरियाणाओं के बीच एक संवाद की जरूरत है।

हरियाणा में बौद्धिक उदासीनता नहीं, अज्ञानता है

✦ अमित ओहलान

हमने भौतिक सफलता तो बहुत पाई है, हमारे घर बड़े हो गये और पैसे आ गए है, अलग-2 जातियों के सामुदायिक भवन बड़े होते चले गए हैं, जब उनके भवन बड़े हुए तो उनके साथ उनका अहम भी बहुत बड़ी हुई है।

2016 में हमने देखा था कि एक खास किस्म की विचारधारा ने किस तरीके से हमें गृह युद्ध में धकेल दिया था। राजनीतिक पार्टियां और ब्राह्मणवादी सोच लोगों के बीच में दूरियां बनाए रखना चाहती हैं।

हमें अपनी संस्कृति को, अपने राज्य को, समाज को इतना बचाव करने की जरूरत क्यों पड़ती है। क्या समाज इतना शक्तिशाली नहीं होना चाहिए कि वह खुद को बचाव कर पाए। क्योंकि समाज बनता तो हमसे ही है। हमारे अंदर जो कमियां होती है वहीं कमियां सामाजिक रूप धारण कर लेती है। हरियाणा समाज को उस सड़क की जरूरत है जो हमें आपस में जोड़ पाए। क्योंकि अभी भी अंदर दूरियां है।

हरियाणा एक संपन्न राज्य है पुलिस में, फौज में यहां से बहुत युवा जाते हैं और खेलों में भी स्वर्ण पदक लेकर आते हैं। हरियाणा की छवि एक विकसित राज्य के तौर पर देखी जाती है। लेकिन राष्ट्रीय स्तर के विकास में हरियाणा का क्या योगदान है? तब हम इस विषय को नजरअंदाज कर देते है। यह जो शब्द है बौद्धिक उदासीनता यह इतनी मात्रा में नहीं है जितनी अज्ञानता हैं।

हरियाणा अमीर राज्य है पुलिस में, फौज में यहां से बहुत युवा जाते हैं और खेलों में भी स्वर्ण पदक लेकर आते हैं। हरियाणा की छवि एक विकसित राज्य के तौर पर देखी जाती है। लेकिन राष्ट्रीय स्तर के विकास में हरियाणा का क्या योगदान है? तब हम इस विषय को नजरअंदाज कर देते है। यह जो शब्द है बौद्धिक उदासीनता यह इतनी मात्रा में नहीं है जितनी अज्ञानता हैं।

अज्ञानता भारत के दूसरे राज्य के बजाय हरियाणा में एक अलग प्रकार की है यहां पर लोग पढ़ते तो हैं, लेकिन हम नौकरी या व्यवसाय के लिए पढ़ते हैं। साहित्य, सामाजिक-राजनीतिक, रचनात्मकता चिन्तन के अध्ययन से कुछ रचनात्मक बनना चाहिए था जिसका एक समाज में योगदान हो। जिससे बौद्धिक विकास होता हैं जिससे समाज निर्माण की राह को पकड़ता हैं। जिससे हम अपने विचारों को आगे बढ़ा सके। समाज हजारों साल से चलती आ रही इकाई है और उसके साथ-साथ टूटती-बनती रहती है। जब यह टूटने की प्रक्रिया होती है इसमें जो चीज हमें नहीं चाहिए होती है उसको फेंक देते हैं और जो चाहिए उसमें जोड़ते रहते हैं। यहीं सतत विकास की प्रक्रिया है।

हरियाणवी कविताओं की, हरियाणवी गानों की, छोटी फिल्मों की या चुटकुलों की एक बाढ़ सी आ गई है जिसमें हरियाणवी कल्चर को कुछ ऐसे दिखाए जाते जैसे कि हुक्का हो गया, खाट होगी या कार हो गई या कार के पीछे जाट बॉय, गुर्जर बॉय, सैनी बॉय आदि जातियां लिखी होती है। उससे जो हमारी छवि बनती है कि यह बौद्धिक लोग नहीं है। लेकिन इसका दूसरा पक्ष हमारे सामने नहीं आ पाता क्योंकि हरियाणा में पहलवान बनना आसान है और एक राइटर बनना बड़ा मुश्किल है हमारी पहलवान लड़कियों की कहानी पूरी दुनिया जानती है लेकिन लेखिकाएं जो हरियाणा से संबंधित है, उन्हें कौन

जानता है? क्या हरियाणा में महिलाओं की स्थिति इतनी खराब है? नहीं पूरे भारत में जैसी स्थिति दूसरे राज्यों की औरतों की है उनमें सबसे ज्यादा पावरफुल महिलाएँ हरियाणा में ही दिखती हैं।

एक सवाल है कि किस तरीके से हरियाणा की महिलाओं की स्थिति को सुधारा जाए और दूसरा कि किस प्रकार से महिलाओं को चिन्तन प्रक्रिया में लेकर आया जाए और तीसरा जैसे यह सृजन उत्सव हो रहा है ऐसे कार्यक्रम लगातार होते रहें। सभी सोचने विचारने वाले लोग एक जगह पर इकट्ठे होकर विचारों का आदान-प्रदान करें। हमारे समाज को आगे बढ़ाना है तो इसमें सबसे से बड़ा कार्य तो शिक्षा का है और उसके साथ-साथ जो बौद्धिक और खोजबीन के कार्यक्रम चलते रहते हैं, उसमें लोगों का जुड़ते रहना ज़रूरी है।

हरियाणा के समाज को जब ध्यान से देखा तो पता लगा कि हमारे अंदर हमारी हरियाणवी ठसक है उसका ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। दूसरा, हम अपने आप को दिखाने की कोशिश करते हैं कि मैं हरियाणवी हूँ और आपसे थोड़ा-सा बलवान हूँ। एक झूठी इज्जत हमारे साथ रहती है, हमारे कारों के पिछली सीट पर जाति लिखी रहती है तो इससे बचना चाहिए और जो नकली चीज है उन्हें हमें छोड़ देना चाहिए। समाज एक गाड़ी की तरह है और उसकी हमें कदर करनी पड़ती है। समय के साथ उसे बदलना पड़ता है।

कविता में एक बात है कि इसमें कीकर का पेड़ अब नहीं आता, आने वाले समय में भी नीम भी नजर नहीं आएगा लेकिन एक बात बुरी लगती है कि उसमें हुक्का आता है, पनघट आता है वह देखने में हमारे मन को बहुत अच्छी लग सकती है लेकिन वह इतिहास की चीज है जो जा चुकी है अब हमारे पास बिजली, पानी पहुंच गए हैं। हमारा समाज बदल चुका है तो हमारा सोचने का तरीका भी बदलना चाहिए। जो बीत चुका है उसे छोड़कर हमें आगे बढ़ना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

सृजनात्मकता और शिक्षा-पद्धति

✦ कृष्ण बैनीवाल

अशिक्षा विवेकहीनता का मुख्य कारण है। राजनीतिक विकास एकदम घटित हो जाता है लेकिन सामाजिक विकास की गति बहुत धीमी हो जाती है। जहां-जहां जमीन के उंचे दाम मिलते गए है वहीं पर शिक्षा स्तर में गिरावट आई है।

निजी स्कूलों ने अच्छे परिणाम के चक्कर में, छात्रों को दबाव में डालकर विषय को रटवाया जाता है जिससे उनकी सृजनात्मकता नष्ट होती जा रही है। इसे अलावा जो छात्र रह जाते है उनको नकल करवाकर उसकी सोचने-समझने की शक्ति को नष्ट किया जा रहा है। उनकी सृजनात्मकता को नष्ट करके रीढ़ की हड्डी को तोड़ने का काम किया जाता है। जिस व्यक्ति और समाज में सोचने-समझने की शक्ति ना हो उसका हमेशा ही उपभोग किया गया है और किया जाता रहेगा।

हरियाणा का बुद्धिजीवी वर्ग उदासीन हो चुका है। जिन छात्रों को पढ़ाने के लिए अध्यापक वेतन लेता है, उनको शिक्षित करने की बजाय वह अपना सारा ध्यान अच्छे कपड़े, अच्छा मकान और अपनी सुख-सुविधाओं में लगाते है। माना कि हम समृद्ध हैं, और अधिक हो रहें हैं लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में, चिंतन के क्षेत्र में हम दिन-प्रतिदिन पिछड़ते जा रहे हैं। हरियाणा को चिन्तन के क्षेत्र में काम करना होगा और यह कार्य लोगों के द्वारा ही होगा न कि सरकार द्वारा। मैं देसहरियाणा की टीम का धन्यवाद करता हूँ कि वो हरियाणा में इस तरह की बहस छेड़ कर अच्छा काम कर रहे हैं।

हरियाणा सृजन यात्रा

29 फ़रवरी से 1 मार्च 2020 को हरियाणा में सत्यशोधक फाउंडेशन द्वारा हरियाणा सृजन यात्रा निकाली गई। कुरुक्षेत्र से चलकर इस यात्रा का पहला पड़ाव पानीपत में प्रसिद्ध शायर और नवजागरण के अग्रदूत मौलाना अल्ताफ़ हुसैन हाली की मज़ार पर रहा। ये मजार पीर हजरत बू-अली शाह कलंदर की दरगाह में है। हजरत बू-अली शाह कलंदर ने अपने जीवन में सदा भाईचारे और मोहब्बत का सन्देश दिया है। हाली की मज़ार पर संगोष्ठी हुई जिसमें हाली के साहित्यिक-सांस्कृतिक अवदान पर चर्चा हुई। प्रस्तुत है संक्षिप्त रिपोर्ट जिसे कलमबद्ध किया है राजकुमार जांगड़ा ने - सं.

हरियाणा सृजन यात्रा के पहले पड़ाव पर (29 फरवरी 2020) का पहला पड़ाव प्रसिद्ध शायर मौलाना अल्ताफ़ हुसैन हाली की मजार पर पानीपत में हुआ। यात्रा का स्वागत गाँधीवादी विचारक और वरिष्ठ अधिवक्ता राम मोहन राय ने स्वागत किया।

उन्होंने कहा कि 1947 से पहले यहाँ 70 फीसदी मुसलमान थे और वे जो पानीपत छोड़कर नहीं जाना चाहते थे पर मजबूर किए गये पानीपत छोड़ने के लिए। 11 नवम्बर 1947 को महात्मा गाँधी यहाँ आए और उन्होंने कहा इन मुसलमानों को मत जाने दो ये बहुत अच्छे कारीगर हैं, ये हुनरमंद लोग हैं। पर हालात उस समय के, कितने साम्प्रदायिकता के थे। पास ही किला है, किला ग्राउंड गाँधी जी वहाँ बोलना चाह रहे थे, लोगों ने बोलने नहीं दिया और जो साम्प्रदायिक उन्माद था वो उनको मारने के लिए उतारू था।

उस समय हमारे संयुक्त पंजाब के प्रगतिशील धारा के एक बहुत बड़े ओजस्वी नेता थे कामरेड टीकाराम सुखन, वो संयुक्त के प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सेक्रेट्री थे बहुत अच्छे मुक़र्रर थे, बहुत अच्छा बोलने वाले थे उन्होंने अपना भाषण दिया और लोगों को शांत किया। गाँधी जी को लाइब्रेरी में बन्द कर दिया गया था फिर गाँधी जी को लाया गया। फिर गाँधी जी ने तकरीर की । ये 1947 का इतिहास था ।

ये हाली साहब की मज़ार है। हाली साहब के बारे में आप सब जानते है कि वो अपने समय एक बेहतरीन शायर तो थे ही समाज सुधारक भी थे। महिलाओं के बारे में जितना उन्होंने लिखा, लड़कियों के लिए पहला स्कूल बनाया और जब कोई दाखिल होने के लिए नहीं आया तो अपनी बेटी, बहु और परिवार के लोगों को दाखिल किया। उसके बाद कोई अध्यापक नहीं मिला तो खुद पढ़ाया । लड़कियों के लिए स्कूल पूरे संयुक्त पंजाब में बना तो हाली साहब ने बनाया। उस समय आपने लिखा।

ऐ मांओ,बहनों, बेटियों
दुनिया की जीनत तुमसे है

मुल्कों की बस्ती हो तुम्ही,
कौमों को इज्जत तुमसे है।

यह उस समय लिखा और आज के जो हालात है , जिस हालात में हम जी रहे हैं ,आज का तो ये क़ौमी तराना होना चाहिए कि

गर तुम चाहते हो मुल्क़ की खैर,
ना किसी हमवतन को समझो गैर।
तेरी एक मुश्ते ख़ाक के बदले
लूँ न हरगिज़ बहिश्त अगर मिले

ये जो सृजन उत्सव यात्रा हुई है उसका हार्दिक स्वागत करता हूँ और मैं इसको बहुत ही प्रसांगिक मानता हूँ ऐसे हालात में आप लोग निकले है ।और इतनी बड़ी तादाद में निकले हैं । ये एक रोशनी की किरण है । गाँधी ने सन् 1947 में कश्मीर में कहा था कि मुझे अगर कहीं आशा की किरण दिखाई दे रही है तो मुझे कश्मीर में दिखाई दे रही है तो हम कह सकते हैं कि आपने ये जो घुप्प अंधेरा छाया हुआ है, आज जो पूरा का पूरा वातावरण विषाक्त बना हुआ है उस विषाक्त वातावरण में एक दीया जलाने की एक बहुत बेहतरीन कोशिश की है। मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ अभिनन्दन करता हूँ। हम कोई बहुत बड़े इंतजाम नहीं कर पाए। पर हम ये समझते है कि हमारे जो साथी आये है, ये वो साथी है जो पूरी तरह से इस मिशन को समर्पित हैं ।

भाईचारा अमन कायम रहे - रमेश चंद्र पुहाल

हरियाणा सृजन यात्रा का स्वागत करते हुए श्री रमेश चंद पुहाल ने कहा पानीपत में अमन कायम करने के लिए जब मुसलमानों को यहाँ से निकलने के लिए ये दहशत पैदा कर दी गई कि तुमको निकलना ही है, तो पानीपत की अमन कमेटी के ही कुछ सदस्यों ने इनको रोकने के लिए महात्मा गांधी तक ये सन्देश पहुंचाया कि यहाँ पानीपत का कंबल उद्योग खत्म हो जायेगा, क्योंकि पानीपत का कम्बल मिलिट्री को, अस्पतालों को और गवर्नमेंट ऑफ इंडिया को सप्लाई होता था । ये तबाह हो गया ।

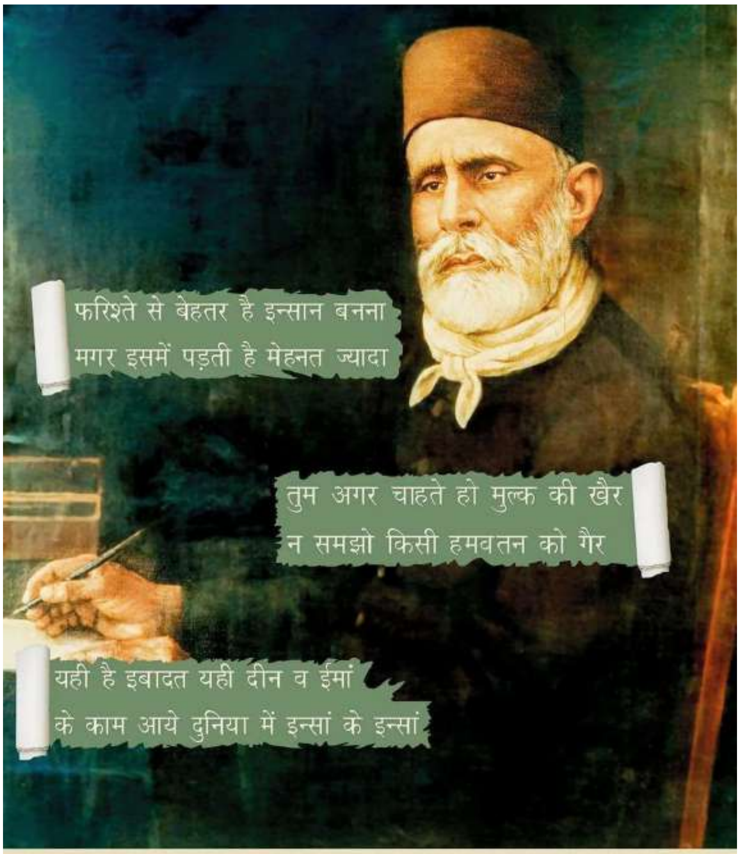

मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली'
(नवम्बर,1837 - 31 दिसम्बर,1914)

जिस वक्त यहाँ पर महात्मा गांधी जी आये। यहाँ किले पर बड़ा भारी जलसा हुआ। जिसमें हिंदू-मुसलमान इकट्ठा हुए और गोपीचंद भार्गव जो चीफ मिनिस्टर थे उस मौके के वे भी यहाँ पर आये और दीगर नेता भी यहाँ मौलवी लिकाउल्ला खां की मौजूदगी में आये और इसके साथ साथ पंडित मायाराम, लाला खेमचंद रईस।

महात्मा गाँधी जी मौलाना अल्ताफ़ हुसैन साहब के लिटरेचर के मुरीद थे। कई बार वो अपने भाषणों में हाली साहब के लिटरेचर का जिक्र करते थे। क्योंकि ये बड़ा भारी अचम्भा हुआ कि 1894 में यहाँ पूरे मुश्तरका पंजाब के अंदर इस दरगाह के सामने एक महिला है उनके घर के पास ही लड़कियों का जो पहला स्कूल खोला और उनको पता लगा कि पानीपत में एक ऐसा स्कूल खोला गया है जिसमें अल्ताफ हुसैन हाली खुद बच्चों को तालीम देते हैं। और जब लोगों ने लड़कियों को स्कूल में नहीं भेजा उन्होंने अपनी पोती को और अपने खानदान की लड़कियों को वहाँ बैठाना शुरु किया फिर वहाँ दाख़िले शुरु हुए। उन्होंने दस रुपये महावार के हिसाब से दिल्ली से एक अध्यापक मुहैया करवाया। उस अध्यापक ने इस लड़कियों

के स्कूल को कामयाब किया। इस वक्त बड़े हैरान थे पहला मौका था जिस वक्त हिंदुस्तान के अंदर ख्वाजा अल्ताफ़ हुसैन ने महिला सशक्तिकरण की आवाज उठाई थी की जो शिक्षा, जो तालीम लडकों को है उतना ही हक़ लड़कियों का भी है उनको भी शिक्षा मिलनी चाहिए।

जिस वक्त हाली किसी गली कूचे से निकलते , या बाजार से निकलते थे तब हिंदू और मुसलमान औरतें तथा आदमी यह कहते थे कि ये जा रहे हैं ये लड़कियों को अंग्रेज बनायेंगे। ये तंज कसते थे, ये ताने देते थे । आज क्या मौका आया, आज वही सामने हैं लड़कियों को, औरतों को, महिलाओं को बराबर का, आदमियों के बराबर का दर्जा हासिल है। ख्वाजा अल्ताफ़ हुसैन 'हाली' साहब का वो जो ख्वाब था वो आज पूरा हुआ।

हम बू अली शाह कलन्दर के इस अहाते में ये दुआ करतें हैं कि हिन्दुस्तान के अंदर ये भाईचारा, ये अमन कायम रहे।आज हम भी इस बात पर अहद करते हैं कि चाहे दिल्ली हो, चाहे पानीपत हो या हिंदुस्तान का कोई भी शहर हो, इस तरह की वारदात जो हुई है दिल्ली में, ये घृणा की बात है, ये घृणा फैलाने वाली बात है, ये नहीं होना चाहिए ,और अमन कायम रहे, हमारा भाईचारा उसी तरह बना रहे जैसे पहले हम रहते आये है। इन बातों के साथ पानीपत तशरीफ़ लाने पर आपका खैर मकदम और मैं ये दुआ करता हूँ, कि आप अपने इस मिशन पर कामयाब रहें ।

बंटवारे की बात स्वार्थ की राजनीति है – सरोज बाला गुर

हरियाणा सृजन यात्रा का स्वागत करते हुए श्रीमती सरोज बाला गुर (सेवानिवृत्त सयुंक्त निदेशक शिक्षा विभाग) ने कहा कि आज मौसम ज्यादा ख़राब होने के बाद भी जहाँ बात सद्भावना की हो वहाँ मेरे पैर रुक नही पाते। कल ही मैं टीवी पर देख रही थी दिल्ली में कितने दंगे हुए फिर भी वहाँ इंसानियत जिंदा थी। दंगे करवाने वाले कोई ओर होते हैं। वे आपस में चाहे हिंदू हो या मुसलमान हैं तो इंसान। एक दूसरे की बड़ी मदद की टीवी में छोटी-छोटी स्टोरीज दिखा रहे थे। किसी ने कहा मैं ईद पर उसकी सेवईयां खाता हूँ, दूसरे ने कहा मैं दीवाली के दीये जलाता हूँ। ये बंटवारे की बात स्वार्थ की राजनीति है। इंसान कभी किसी से भी नफ़रत नहीं कर सकता अगर वो सीधी राह पर चलता है ।

मेरी दादी जी बताती थी कि यह हिन्दू और मुसलमान की लड़ाई नहीं है। ये कहीं-न-कहीं इस काले सिर वाले का लालच है। जहाँ पर यह लालच आ जाता है, राजनीति आ जाती है वहीं पर हम अंधविश्वास के सहारे धर्म का सहारा लेकर लक्ष्य हासिल करते हैं।

मानवता के दुश्मन सड़कों पर घूम रहे हैं फिर मानवता के प्रेमी घरों में क्यों ? – डा. सुभाष चंद्र

इस अवसर पर हरियाणा सृजन यात्रा के संयोजक प्रो. सुभाषचन्द्र ने धन्यवाद करते हुए कहा कि हमारे रचनाकार, साहित्यकार, रंगकर्मी,कलाकार जो इस हरियाणा सृजन यात्रा में निकले हैं और जो हरियाणा के बड़े बड़े साहित्यकार हुए है इस धरती पर जिन्होंने अपने-अपने समय पर अमन का, शाँति का, भाईचारे का, सद्भावना और मानवता की गरिमा का सन्देश दिया उन सबके स्थानों पर जाकर उनसे प्रेरणा लेने के लिए हम निकले है कि इस माहौल में जिसका जिक्र आप कर रहे हैं कि एक साहित्यकार जो है एक सृजनकर्मी जिसके पास अपनी बात कहने के अलग अलग माध्यम है कि वो किस तरह से अपना फर्ज निभा सकता है।

इस समय में तो उसमें हाली साहब जैसा आप सब ने बताया और सब जानते है । हाली साहब के साहित्य के माध्यम से और जिस जगह पे हम हैं बू अली कलंदर जिनसे गुरू नानक की भेंट का रिकॉर्ड भी मौजूद है कि गुरू नानक यहाँ इनसे गोष्ठी करने के लिए, मिलने के लिए आये थे। आपको पता है कि गुरू नानक कितने महान, विद्वान लोगों से विचार करके, मिलके आगे चलते थे । हमारी यात्रा का यह पहला पड़ाव है। आपने हमारी यात्रा के साथियों का स्वागत किया, इसके महत्व को समझा, इसके लिए हम आपके बहुत -बहुत आभारी हैं । यहाँ आकर हमें जो महसूस हो रहा है कि जहाँ हाली साहब आराम फरमा रहे हैं, हम उनके चरणों में बैठे हैं उनके पास बैठकर उस जज्बे को उस ज्ञान को उस भावना को हम अपने अंदर महसूस कर रहे हैं और हम यहाँ से थोड़ा- थोड़ा अंश जरूर प्राप्त करके जाएंगे, जो आगे चलकर अपना काम करेगा

अलग अलग विधाओं के माध्यम से। हम ये यात्रा क्यों कर रहे हैं? ये जगह जगह और बार-बार पत्रकार लोग भी पूछते हैं, आम और साधारण लोगों के भी दिमाग में भी यह बात होती है कि तीर्थ यात्राएँ होती हैं, और तरह-तरह की यात्राएँ होती है, यह सृजन यात्रा क्या है ? ये यात्रा भी ऐसे रूप में है जैसे मानवता की यात्रा है वैसे ही सृजन की यात्रा है।

हम एक कार्यक्रम किया करते हैं पानीपत के साथियों को मैं न्यौता भी दे रहा हूँ इन सब साथियों की तरफ से, देस हरियाणा और सत्यशोधक फाउंडेशन की तरफ से । इस बार ये चौथा सृजन उत्सव 14 और 15 मार्च को कुरुक्षेत्र में होगा। तीन साल से हम लगातार सृजन उत्सव कर रहे हैं इसमें हमारी पूरी विरासत है, उसके जो मानवीय पहलू हैं और हमारे जो उत्तरदायित्व आज के दिन बनते हैं वो हमें याद करवाते हैं।उस पर विचार, चिंतन, मंथन होता है। देश-प्रदेश के जो जानकर लोग हैं, साहित्यकार लोग हैं, समाजशास्त्री हैं, हमारे लीडर हैं जिनका अनुभव है समाज में काम करने का, सामाजिक नेता हैं, वो सब लोग वहाँ बैठकर विचार मंथन करते हैं अलग अलग विषयों पर।

जो माहौल हमारे चारों तरफ है, मुझे उसे कहने की जरूरत नहीं है, वो माहौल आपने बताया, पुहाल साहब ने बताया, राममोहन राय जी ने बताया, सारा पानीपत जानता है, सारी दुनिया जानती है, गाँधी जी के सामने भी था। इतने बड़े आदमी जिनको कमरे में बन्द कर दिया जा सकता है, ऐसी शक्तियों के द्वारा, ऐसी काली ताक़तें हमेशा अपना फ़न उठाती रही हैं और उनको बार-बार कुचला भी जाता रहा है।

इस यात्रा के दौरान हम मानवता के सन्देश देने वाले चार साहित्यकारों की स्थली पर जाएंगे जिसमें हाली साहब हैं। शाम को हम जाएंगे बालमुकुंद गुप्त जो हिंदी के एक बहुत बड़े पत्रकार हुए और जब बंगाल का विभाजन किया अंग्रेज सरकार ने हिन्दू और मुसलमान को बाँटने के लिए, उन्होंने अपने अखबार 'भारत मित्र' में 'शिवशम्भू के चिट्ठे' नाम से आठ चिट्ठियां छापी थी। पूरे बंगाल में अंग्रेजों की विभाजनकारी नीति के खिलाफ लोगों को इस तरह लामबंद किया। ये उनकी कलम की ताकत थी। उसको याद करने हम जा रहे हैं। आखिर इनसे हम क्या सीख सकते हैं कि आज के दिन लोगों के अंदर इतनी नफरत और फूटपरस्त ताकतें ज़हर घोल रही हैं।

हाली में, बालमुकुंद में आखिर कौनसी बात थी जो उन्होंने लोगों की उस आत्मा को, चेतना को जगाया था और लोगों को ऐसी बड़ी-बड़ी शासन सत्ताओं को मजबूर कर दिया था फिर बंगाल विभाजन नहीं हुआ था। अंग्रेज सरकार को फिर से एक करना पड़ा था ।

आज शासन सत्ताओं के द्वारा दिलों में जो नफ़रत पैदा की जा रही है इसमें एक साहित्यकार का क्या दायित्व बनता है इनके माध्यम से सन्त गरीबदास, जो कबीरदास की परम्परा के सन्त हैं। कबीर का नाम हम सब लोग जानते हैं कि जिस तरह से उन्होंने चाहे धार्मिक पाखण्ड हो, चाहे साम्प्रदायिक भेदभाव हो, जाति-प्रथा हो, उन्होंने इन सब चीजों के खिलाफ आवाज़ उठाई थी, और उस समय के जो दबे-कुचले, शोषित लोग थे उनकी आवाज बन गए थे।

बाबा फरीद हैं जिनके स्थान पर कल हमारी यात्रा पहुंचेगी, 12 साल तक हांसी में रहे। वहाँ पर साधना तपस्या की थी, विचार मंथन किया, चिंतन किया और उसमें से वो मोती निकालकर लाए कि सारी दुनियां अब उनका सन्देश पढ़ती है। मानवता को आगे बढ़ाने में इन चार महान पुरुषों, महान साहित्यकारों, महान सृजन कर्मियों

लोग भूल गए हैं अपने महापुरुषों को इन्हीं के माध्यम से जो मानवता का सन्देश है उसको हम जगजाहिर करना चाहते हैं। फिर से जो लोगों के दिमाग पर साम्प्रदायिकता की या ऐसी बुराइयों की जो काई जम गई है इनकी याद ही इसको साफ करेगी। ये सोचकर हम यहाँ आए हैं।

आज शासन सत्ताओं के द्वारा दिलों में जो नफ़रत पैदा की जा रही है इसमें एक साहित्यकार का क्या दायित्व बनता है जैसे मानवता के दुश्मन सड़कों पर घूम रहे हैं जो मानवता के प्रेमी हैं वो घरों में क्यों हैं? ऐसे माहौल में जो अच्छे लोग हैं जो अच्छाई की तरफ जो लोग हैं, सार्वजनिक रूप से वो सड़कों पर बाहर दिखाई देंगे तो यह अपने आप में ही एक सन्देश होता है ।

की स्थलियों पर जाना चाहते हैं इसीलिए हम सब यात्रा पर निकले हैं। हमारे साथ सारे युवा रचनाकार, शोधार्थी, कवि, लेखक सब मौजूद हैं। इनका अपना जज्बा है जिसके सहारे ये चल रहे हैं। हाली साहब का आशीर्वाद है, मुझे उम्मीद है उनकी जो भावना है जो इनके अंदर से उतरकर इनकी कलम के माध्यम से, फिर से वो रोशनी पैदा करेगी। इसलिए हम यहाँ आये हैं, कोई ज्ञान देने के लिए नहीं आए, हम तो यहाँ सीखने के लिए आए हैं। आप लोगों ने हमारा यहाँ पर स्वागत किया, उससे हमारा हौंसला और बढ़ा है और जिस मकसद के लिए हम निकले हैं हमें उम्मीद है उस मकसद में आप हमारे साथ हैं और उस मकसद में हम कामयाब होंगे क्योंकि ये निरन्तर और निरन्तर चलने वाला मकसद है और निरन्तर और निरन्तर चलने वाले सृजन की यात्रा है।

यह यात्रा के माध्यम से हम अपने महापुरुषों ने मानवता का जो सन्देश दिया है उसको जगजाहिर करना चाहते हैं। लोगों के दिमाग पर साम्प्रदायिकता की या ऐसी बुराइयों की जो काई जम गई है इनकी याद ही इसको साफ करेगी। ये सोचकर हम यहाँ आए हैं। फिर से आपका बहुत बहुत आभार प्रकट करतें हैं। क्योंकि हमें आगे भी जाना है गोष्ठी तो हम पूरा दिन कर सकते है, हाली साहब पर भी और कलन्दर साहब पर भी। ये बातें तो हमेशा चलती रहती हैं। यह एक यात्रा है उसका यह एक पड़ाव है। यह अन्तिम पड़ाव नहीं है। यह पहला पड़ाव है। हम यहाँ से शुरुआत कर रहे हैं। हमने जो सोचकर शुरुआत की है उससे दोगुना हौसला हमें यहाँ से मिला है। मौसम ख़राब है, लोग कम हैं, यह कोई बात नही होती है। इन सब चीजों के बीच में ही सब चीजें चलती रहती है।

मैं आपका एक बार फिर हमारे साथियों की तरफ से धन्यवाद करता हूँ कि आप लोगों ने हमें इतना मान सम्मान दिया, हमारी जो बातचीत है आप पानीपत में भी इसको फैलाएंगे कि इस तरह से भी बाहर निकलने की जरुरत है । जैसे मानवता के दुश्मन सड़कों पर घूम रहे हैं जो मानवता के प्रेमी हैं वो घरों में क्यों हैं? ऐसे माहौल में जो अच्छे लोग हैं जो अच्छाई की तरफ जो लोग हैं, सार्वजनिक रुप से वो सड़कों पर बाहर दिखाई देंगे तो यह अपने आप में ही एक सन्देश होता है ।

विध्वंस के साथ-साथ सृजन भी चलता है - डा. शंकर लाल

इस अवसर पर डॉ शंकरलाल ने कहा मैं आपको, आपके जज्बे को, आपके हौसले को, आपकी रचनात्मकता को, आपकी सृजनात्मकता को सलाम करता हूँ। डॉ सुभाष चन्द्र ने कहा कि विध्वंस भी चलता है तो सृजन भी चलता है ये प्रकृति का नियम है।आग लगाने वाले होते हैं तो आग बुझाने वाले भी होते हैं। हम आग बुझाने वाले हैं, हम आग बुझाएंगे। हम आज ये आह्वान करतें हैं ऐ अमन चाहने वालो, ऐ शाँति चाहने वाले इंसानो, चुप मत रहो, मजलूम के आगे मत झुको, मजलूम का उत्तर शांति के साथ दिया जाता है ।

हाली साहब जैसे उन शायरों का, उन समाज सुधारकों का , जो ये पैगाम है वो हमेशा रहेगा और इस दरगाह पर आज हम प्रण करते हैं, दृढ़ संकल्प होकर हम वादा करते हैं कि पानीपत से हम एक सन्देश पहुंचाएंगे, आज की आपकी सृजन यात्रा है वो सृजन अंदर के हमारे, जो आदमी होने का सृजन है, निरन्तर सदा वो सृजन, सृजन की वो शक्ति है वो चलती है । डॉ सुभाष चन्द्र जी के बारे में कहना चाहूँगा कि सृजन शब्द की संरचना, सृजन शब्द को परिभाषित, व्याख्यायित करना, न केवल शब्दों में बल्कि कर्म में, व्यवहार में चलकर जनता के बीच में, ये छोटी बात नहीं है। आपका जो ये कार्य है निसन्देह न केवल भारतीय महाद्वीप बल्कि पूरी दुनिया में अमन का पैगाम जाएगा। इसी के साथ में आपका धन्यवाद करता हूँ। आपकी यात्रा का ये पड़ाव बहुत बड़ा मील का पत्थर साबित होगा ।

इस अवसर पर रमेशचंद्र पुहाल द्वारा लिखित पुस्तक 'यादगार-ए-हाली पानीपती' का विमोचन हुआ। इस मौके पर वरिष्ठ अधिवक्ता राममोहन राय, रमेशचंद्र पुहाल, सरोज बाला गुर, डॉ शंकरलाल व अन्य बहुत से गणमान्य व्यक्ति तथा हरियाणा सृजन यात्रा के संयोजक प्रो. सुभाष चन्द्र, अशोक भाटिया, श्रीमती विपुला, अंजू, सुरेंद्रपाल सिंह, बलवान सिंह नैन, अरुण कुमार कैहरबा, राजकुमार जांगड़ा, विकास साल्याण, ब्रजपाल, नरेश दहिया, कपिल भारद्वाज, मनजीत भोला, दयालचंद जास्ट, नरेश सैनी, विरेंद्र वीरु, योगेश कुमार, राजेश कासनिया आदि हरियाणा सृजन यात्री मौजूद रहे।

सत्यशोधक फाउंडेशन व देस हरियाणा पत्रिका द्वारा आयोजित हरियाणा सृजन यात्रा के दौरान हांसी स्थित चार कुतुब में आयोजित सेमिनार में पंजाबी व सूफी साहित्य के जाने-माने विद्वान डॉ. सुमेल सिंह सिद्धू ने बाबा फरीद और हमारा समाज विषय पर व्याख्यान दिया। सेमिनार का संचालन करते हुए देस हरियाणा के संपादक डॉ. सुभाष चन्द्र ने कहा कि आज जान लेने वाले सड़क पर हैं, लेकिन देने वाले नहीं हैं। संतों-भक्तों व मध्यकाल के महापुरुषों के विचारों को खंगालने की जरूरत है, जोकि हमारी विरासत है। इस व्याख्यान की प्रस्तुति देस हरियाणा के सह-संपादक अरुण कुमार कैहरबा ने की है। पढ़िए उन्होंने क्या कहा? प्रस्तुति - अरुण कुमार कैहरबा

बाबा फरीद और हमारा समाज

✦ डॉ. सुमेल सिंह सिद्धू

यह कितना अद्भुत कार्य है कि आप लोगों तो हरियाणा के सब हिस्सों में जाकर हरियाणा सृजन यात्रा निकाल रहे हैं। यह अलग किस्म की तीर्थ यात्रा है कि हरियाणा की सांस्कृतिक व वैचारिक बुनियादें हैं, उन स्थानों पर जाकर उसे दोबारा खड़ा किया जाए। इस किस्म की कोशिशें हमारे उत्तर भारत में खत्म हैं। आप लोगों के हौंसले और जीवंतता को सलाम।

हरियाणा सृजन उत्सव व सृजन यात्रा आदि के जरिये देस हरियाणा की पूरी टीम जिस तरह से काम कर रही है। यह कोई रस्मी बात नहीं है। हम लोग ऐसी जगह पर खड़े ही नहीं हैं, जहां पर किसी रस्म को निभाया जाए,

यह हम सबके विशेष तौर पर पंजाब में हमारे सीखने लायक मुकाम है। मैं इसलिए यहां नहीं आया कि मुझे कुछ बोलना है, बल्कि मुझे आपके साथ होना है। अब फासले ऐसे ही कम होंगे। ऐसे ही रास्ते खुलते हैं। ऐसे ही नई सांझदारी खड़ी होती है और आज हम हांसी में हैं। और हांसी के भी उस मुकाम पर हैं, जहां चार कुतुब, कैसे-कैसे महान विद्वान साधक बंदगी करने वाले, जिन्होंने समाज को जोड़ा।

आप सोच कर देखिए कि हांसी उस समय का रिमोट (दूर-दराज) स्थान है। यह किसी शाहराह / हाईवे पर नहीं है। यह बहुत बड़े राजदरबारों के नजदीक नहीं है। मुलतान में भी बाबा फरीद एक सबसे उजाड़ जगह पर जाकर वहां पर अपनी खानकाह खड़ी करते हैं। यह चिश्तिया सिलसिले की वैचारिकता का एक खास बिंदु है, कि ये अपने आपको राजघरानों से तोड़ कर दूर रखते हैं हमेशा। बाद में हम देखते हैं कि ये संरक्षण के चक्कर में राजाओं के नजदीक आते हैं, तब हमें उसकी आलोचना भी हुई मिलती है कि यह सूफियों का तरीका नहीं है कि इस तरह से बड़े राज दरबारों के नज़दीक होना और उनसे पुश्तपुनाही की आस करना। राज दरबारों के साथ रिश्ते का इनका कोई चलन नहीं रहा है। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है, इनके सारे वैचारिक मसाइल को समझने के लिये। आज हम लोगों ने वह जगह देखी है, जहां बाबा फरीद ने अपना चिल्लाह गाड़ा। 12 साल उन्होंने यहां पर पर रहकर शिक्षा हासिल की। हांसी का इतना बड़ा मुकाम है।

बाबा फरीद दो लिहाज से हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। एक तो इस लिहाज से कि वे चिश्तिया सिलसिले के खलीफा हुए। ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी के बाद चिश्तिया सिलसिले में किसी को अपना खलीफा नियुक्त नहीं किया गया था। चिश्तियों में यह था उस समय कि ख़लीफा वही होगा, जिसके पास ज्ञान की, उस विचारधारा की खास समझ होगी। उससे कमतर कोई रहेगा तो गद्दी खाली छोड़ दी जाएगी। यह देखा जाता है कि ज्ञान व समझदारी में कौन आगे निकलता है और फिर उसे खलीफा की गद्दी मिलेगी। जब बाबा फरीद पढ़ते थे। कुरान की जो पढ़ाई थी, उसको जैसे वे अता करते थे, उसके अंदर गजब की मिठास थी। इसलिए यह कहा गया कि जब वे कहते हैं तो ये तो शकर के, चीनी के या मिठास के खजाने हैं। शकरगंज का मतलब यह रहा। जब वे पढ़ते थे तो उनकी बातचीत या कुरान की व्याख्या, इस्लाम या सूफीवाद की बातचीत सुनकर अचंभित रहते थे।

चिश्तियों में यह था उस समय कि ख़लीफा वही होगा, जिसके पास ज्ञान की, उस विचारधारा की खास समझ होगी। उससे कमतर कोई रहेगा तो गद्दी खाली छोड़ दी जाएगी। यह देखा जाता है कि ज्ञान व समझदारी में कौन आगे निकलता है और फिर उसे खलीफा की गद्दी मिलेगी। जब बाबा फरीद कुरान पढ़ते थे। उसको जैसे वे अता करते थे, उसके अंदर गजब की मिठास थी। इसलिए यह कहा गया कि जब वे कहते हैं तो ये तो शकर के, चीनी के या मिठास के खजाने हैं। शकरगंज का मतलब यह रहा - जब वे पढ़ते थे तो उनकी बातचीत या कुरान की व्याख्या, इस्लाम या सूफीवाद की बातचीत सुनकर अचंभित रहते थे।

सूफियों के साहित्य में एक वाकया मिलता है हमें कि ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी यह बात कहते हैं कि फरीदुद्दीन (बाबा फरीद) को देखकर मुझे तुम पर रश्क होता है कि मेरे पास एक भी ऐसा शिष्य नहीं है, जैसा यह शिष्य तुमने हासिल किया है। इस पंक्ति को मैंने पढ़ा और मैं चौंक गया। यह बहुत कम मिलता है कि दो उस्ताद किसी शागिर्द की यूं तारीफ कर रहे हों। अक्सर अपने अध्यापकों या उस्तादों की हम तारीफ करते हैं। यह एक ऐसा दुर्लभ वाकया है, जब उस्ताद किसी विद्यार्थी की तारीफ कर रहे हैं। इसके साथ ही मुझे याद आया कि 20वीं शताब्दी में भगत सिंह के नेशनल कॉलेज लाहौर के जो अध्यापक थे, जब उनसे पूछा गया कि भगत सिंह के बाद कोई और विद्यार्थी क्यों नहीं निकला, नेशनल कॉलेज ठप्प क्यों हो गया। उनका यह जवाब था कि भगत सिंह को पढ़ाने के बाद किसी और छात्र को पढ़ाने का मन नहीं हुआ। हमने कोई ऐसा छात्र नहीं देखा है, जिसकी पकड़ इतनी ज्यादा हो। जिसमें ज्ञान का इतना कौतूहल हो। हमारे पास ये दो गजब के ऐसे उदाहरण हैं कि बाबा फरीद

के उस्ताद ये बात कह रहे हैं और भगत सिंह के साथ यह हो रहा है।

बाबा फरीद मुलतान से थे। अरबी इस्लाम की भाषा है, उसमें पारंगत थे। फारसी साहित्य की भाषा थी। यही निजाम की भाषा थी। इन दोनों के वे आलिम थे। जब वे खलीफा बने तो महरौली में ख्वाजा बख्तियार काकी की दरगाह के आस-पास, वहां चिश्तियों की बस्ती थी, जहां वे मुकीम थे। वहां बाबा फरीद महसूस करते हैं कि हम लोग सुल्तान की बगल में हैं। जब आप दरबारों के नजदीक होते हैं तो आपके अंदर भी वो चीजें शुरु हो जाती हैं, वही कैसे आएं। इस बात के ऊपर बाबा फरीद ने मलाल महसूस किया कि यह गलत हो रहा है। वे एक दिन चुपचाप सुबह के वक्त अपनी खिलाफत को अपनी गद्दी, चिश्तिया सिलसिले की जो निजामत उनके हाथ में थी, इसके लीडर थे, सौंप दिया।

चिश्तिया सिलसिला ऐसा है, जो हिंदुस्तान में सबसे ज्यादा फैला हुआ है। बाकी सिलसिले कम हैं या किसी एक स्थान पर केन्द्रित हैं। चिश्तिया सिलसिले की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि ये लोग जहां रहे, वहीं की बोली को उन्होंने अपनाया। उसी जुबान बोली में, उसी

साजिशें कि कौन किसके साथ है। इस किस्म की जुगतें और साजिशों से उन्हें लगता था कि उनका जो काम है, वे उसे ठीक से नहीं कर रहे हैं। एक तो उनके ऊपर इसका वजन था। साथ ही नक्शबंदियों का दरबार था, वे सुल्तान के साथ हिल-मिलकर रहते थे। उनका दरबार शहंशाही किस्म का होता था, जिसमें मसनदें लगी हुई हैं। जबकि चिश्तिया एकदम सादे। कोई ऐसी चीज नहीं जो हमें सादगी, बंदगी व आम लोगों से दूर कर सके।

बाबा फरीद के साथ एक बात और थी कि वह आम लोगों की संगत को बहुत ज्यादा पसंद करते थे। हांसी से उन्हें उनके जानने वाले लोग मिलने गए तो वहां दरबानों ने उन्हें आगे नहीं जाने दिया। कि पहले समय लेना पड़ता है। बाबा फरीद जब शाम को बाजार में निकले तो उन्हें वे मिले। उन्होंने कहा कि तुम आए क्यों नहीं? उन लोगों ने कहा कि आपके तो लोगों ने हमें दौड़ा दिया। हम लहजे और राग-रागनियों में जो कुछ देख रहे हैं, उस पर लिखा। चरखा देख रहे हैं तो चरखे के बीच में से सारी तसव्वुफ की बात की जाएगी। हल चलाता देख रहे हैं तो उसके माध्यम से सारी बात की जाएगी। बगुला देख रहे हैं, नदी बह रही है, औरतें काम कर रही हैं, गहना क्या पहना है, काम कैसा है, फसल कैसी हुई है इसी से जोड़ कर ही उन्होंने अपनी बात को कहा। उसके चलते अरब देशों की, तुर्की या सीरिया की जो सारी की सारी बिम्बावली थी कि बहुत सारी बात उनके संदर्भों में करते थे। उस पृष्ठभूमि (लैंडस्केप) का हवाला देकर करते थे, क्योंकि कुरान में उसका हवाला आता है। आप चिश्तिया में यह पाइयेगा कि उसमें हांसी की जो उस समय तस्वीर थी, उसके सारे रंग उसमें मिल जाएंगे। मुलतान के सारे उजाड़ रुही बियाबान के सारे रंग बाबा फरीद के कलाम में हमें मिल जाएंगे। उन्होंने वहां पर अरबी-फारसी में भी लिखी अपनी बातें। लेकिन वहां पर जाकर उन्होंने सबसे बड़ा काम किया। वह

हमारे खित्ते (क्षेत्र), जिसे हम सांझा पंजाब कहते थे, इसके लिए उन्होंने सबसे बड़ा काम यह किया कि अरबी-फारसी के जानकार, दिल्ली में सबसे बड़े तसव्वुफ के तख्तनशीन, जुबानों और इल्मो-फ़ज़ल के जानकार, यह सब छोड़कर अपने लोगों के साथ होने के लिए जब वे सब कुछ छोड़ कर जाते हैं तो वे बड़ा फैसला करके जाते हैं। लोगों की चाहत के चलते तो आपको बात भी उन्हीं की जुबान में करनी है। यह मेरे लिहाज से एक इंकलाबी कदम था।

पहली बार हम ये पाते हैं, कम से कम पंजाबी के लिहाज से कि इस्लाम की बातचीत, तसव्वुफ व इल्मो-फ़ज़ल की बातचीत मुलतानी जुबान में करते हैं, जिसे हम लहंदी जुबान भी बोलते हैं। मुलतानी जुबान का बहुत बड़ा दखल दिल्ली पर भी रहा। बड़ी जुबान थी यह। सिंध से आते हुए मुलतान एक बहुत बड़ा केंद्र था। अभी भी इंज़माम उल हक हैं तो हांसी ही के, बसे वे मुलतान में हैं। वे जब यहां आए तो बहुत बिल्खे कि मैं हांसी में अपने पुरखों की जगह हांसी जाना चाहता हूँ। इस बात पर भी गौर कीजिएगा कि हांसी का जो मुलतान के साथ रिश्ता है, वह आप ही लोगों का है। इंज़िमाम-उल-हक जितने मुलतान व पाकिस्तान वालों के हैं, शायद वे भी यह मानते होंगे कि वे उतने ही हांसी व हरियाणा वालों के भी हैं। आप रोहतक के नजदीक से आए हैं। फैज अहमद फैज की वह नज़्म-हम देखेंगे.. जिसे गाने नहीं दिया जा रहा है, उसको जिस मोहतरमा ने निभाया और गाया, वह खुद रोहतक की हैं। इकबाल बानो साहिबा।

वहां जाकर जो खानकाह उन्होंने खड़ी की, उस खानकाह में और जुबानों के साथ-साथ पहली बार पंजाबी में या मुलतानी में शिक्षा दी जानी शुरू हुई। लोगों के साथ मोहब्बत व लगाव को उन्होंने एक कितना बड़ा मुकाम दिया बाबा फरीद ने। उनकी शायरी या कलाम जब हम पढ़ते हैं तो यह मानिएगा कि उससे सादा जुबान आपको पंजाबी में नहीं मिलेगी। आज से वो करीब साढ़े सात सौ साल पहले हुए हैं। बहुत कम हैं ऐसे शब्द जो आपको समझ ना आएं। सिख या पंजाबी जानने वाले बाबा फरीद को जब पढ़ते हैं या जब आप उदास हों तो वे आपके अंदर उतर जाते हैं। जब आप खुद से बात करना चाहते हों, या आप बहुत गहरी बात किसी राग में करने का मन करे कि आपका दुख घटे।

औरतों के अंदर बाबा फरीद बहुत बोले जाते हैं। कुछ ही दिन पहले पंजाबी की मशहूर उपन्यासकारा दिलीप कौर टिवाणा जी का देहांत हुआ है। मैंने ये पाया कि उनके उपन्यासों के जो शीर्षक हैं, वे बाबा फरीद की वाणी के ही वाक्यांश उन्होंने लिए हुए हैं। 'दुनी सुहावा बाग', 'जिवैं पुछै आसमान', 'वाट हमारी' आदि। मैंने उनसे पूछा कि क्या आपने कभी गौर किया है कि आपके उपन्यासों के शीर्षक सीधे बाबा फरीद से आ रहे हैं। वो चौंकी और उन्होंने कहा कि मैंने इससे पहले कभी गौर ही नहीं किया है कि ये बाबा फरीद से मैं ले रही हूँ। वे पढ़ाती हैं और जानती भी हैं। लेकिन लिखते हुए उनके मन में नहीं था कि वे सचेत रूप से बाबा फरीद के कलाम के वाक्यांश ले रही हैं। उन्होंने कहा कि अचेत रूप से ये सारा कुछ होता रहा।

ये बात मेरे लिए खासा मायने रखती है कि बाबा फरीद हमारे साथ हवा व फिज़ा में रहते हैं कि पता ही नहीं चलता कि हम अपनी बात कह रहे हैं या उनके वाक्यांशों का प्रयोग कर रहे हैं। यह बहुत बड़ा मुकाम होता है कि आपका कलाम लोगों के अंदर रच-बस जाए। इसकी एक वजह है कि मुलतानी जुबान में लोच बहुत है। उसके अंदर छोटी-छोटी बात के अंदर भरभूर लय है।

वे कहते हैं कि जब हमें गाली देनी होती है तो हम पंजाबी बोलते हैं। नहीं तो हम लोग अपनी ज़बान- जिसे सरायकी या लहंदी कहते हैं, इसमें तो हम गाली भी नहीं दे सकते। इसमें पता ही नहीं चलता कि किसी ने आपके साथ तल्खी में बात की है।

बाबा फरीद का एक श्लोक देखिए-

खालक खलक में, खलक बसै रब मांह।
मंदा किसनूं आखियै जब तिस बिन कोउ नांह।

जब ये बात मानी गई कि लोगों के साथ उनकी ही जबान में बात होगी तो उसकी बुनियाद, उसका मापदंड, उसका ढाँचा बाबा फरीद ने तय करके दे दिया कि इससे कम बात नहीं होगी। उससे पहले पंजाबी में छुट-पुट कलाम कुछ नाथों व सिद्धों का मिलता है। लेकिन वह मात्रा में बहुत कम है और वैचारिक तौर पर उतना गठा हुआ नहीं है। तसव्वुफ व इस्लाम की बात छोड़ भी दें तो बाबा फरीद के कलाम में हमें पहली बार लोगों की बात हुई दिखती है। इसमें कोई ऐसे हवाले भी नहीं हैं। कोई हजरत

मोहम्मद साहब का नाम भी नहीं आता है। कोई काबा, किबला, मक्का, मदीना किसी का नाम नहीं आता है। आस-पास की बात चलती रहती है। छोटी-छोटी बातें हैं - लम्मी-लम्मी नदी बहै, केल करेंदे हंजू (हंस वहां खेल रहा है।), नदी कंड्डे रूखड़ा, दुनि सुहावा बाग आदि चीजें आपको धीरे-धीरे करके मिलती रहती हैं। बिल्कुल आस-पास की। जैसे हम कहीं जा रहें हों तो वो कहें कि देखो कितने खूबसूरत वृक्ष खड़े हैं। कुछ इस किस्म के बिंब बाबा फरीद के कलाम में हमें मिलते हैं। लेकिन उसके अंदर उन्होंने बहुत गहराई लाकर खड़ी कर दी है। उसका शैल्पिक गठन है, वह बहुत आगे का है। उनके दो सौ साल बाद तक हमें कोई कलाम पंजाबी का नहीं मिलता है।

पंजाबी उस समय बोलचाल की भाषा थी। साहित्य की, सोचने की व विचार की भाषा ये नहीं थी। इसको विचार, सोच व ख्याल की भाषा बनाया बाबा फरीद शकरगंज ने। इस खित्ते को यह उनका सबसे बड़ा योगदान है कि पंजाबी व इसके आस-पास की भाषा के साहित्य की बुनियाद अब खड़ी हुई है। गुरु नानक साहब हैं, जिन्होंने बाबा फरीद के पंजाबी कलाम को शेख इब्राहिम से उनकी मुलाकात हुई, उनसे मिलने गए, उन्होंने कहा कि किसलिए आए हो। उन्हें दूर रोक लिया कि पहले कुछ सुनाओ। बाबा नानक का गायकी में बड़ा मुकाम था। संगीत के बड़े जानकार थे। अपनी किस्म के विद्वान थे लोगों के साथ जुड़े हुए। तो उन्होंने पूरी भावना से उस कलाम को रखा। फिर उन्होंने खुश होकर वह पोथियां उन्हें दी।

बाबा फरीद की वाणी का जो सबसे शुद्ध रुप है, वह गुरु ग्रंथ साहब के अंदर ही मिलता है। बाकी के अंदर मिलावट होती रहती है, क्योंकि बहुत सारी चीजें जबानी-कलामी चलती हैं। अगली पीढ़ियों तक पहुंचते हुए उसमें लोक भाषा के कुछ अंश आ जाते हैं। कुछ अपनी तरफ से जुड़ जाता है। लेकिन गुरु नानक साहब के पास बाबा फरीद की वाणी का विशुद्ध रुप हमें मिलता है। इतना कि हरेक गुरु साहब ने बाबा फरीद के साथ बातचीत की है गुरु ग्रंथ साहब में। एक तो गुरु ग्रंथ साहब का ढाँचा बहुत कमाल है कि अगर कबीर साहब ने कुछ लिखा है तो उसे संपादित करते समय पांचवें गुरु को लगता है कि इसे रेखांकित करना चाहिए। जो कुछ वे सोचते हैं, उसे कबीर ही के मुहावरे में आगे रख देते हैं। दोनों रहें। बहुत सारे ऐसे शबद हैं जिसमें उन्होंने फरीद-फरीद कह कर लिखा हुआ है। फरीद साहब के अंदर कईं चीजें हैं। गजब है उनका कहना-

फरीदा भूम रंगावली, मंझ विसूला बाग।

मतलब यह धरती रंग-बिरंगी है और इसके बीच में विषैला बाग है - हमारे लोभ लालच का। अगर इसे देखें कि हिन्दोस्तान एक बहुत सुहावना बाग है, जो बहुत रंगारंग है, लेकिन इसी के अंदर इसको चलाने वाला एक निजाम या उसका एक हिस्सा विषैला भी है। तो यह जबरदस्त विरोदाभास रखते हैं वे अपने सारे कलाम में। एक साथ दो अतियों को हमारे सामने रखते हैं और उसमें पढ़ने वाले के लिए चयन के लिए रखते हैं कि इसमें से अब तुम चुनाव करो, क्या करते हो। एक नैतिक चुनाव है। यही नैतिक चुनाव ही बाद में जाकर एक सामाजिक और राजनैतिक चुनाव भी बनता है। किस तरफ खड़े हो तुम - निजाम या रियासत की तरफ हो या लोगों की तरफ हो।

चिश्तियों ने हिन्दुस्तान को इस चीज के साथ बांध कर रख दिया। इस बात को बाबा फरीद ने एक खास परिपक्वता दी। अपने सारे किरदार से अपने सारे रद्दोअमल से उन्होंने इस बात को साबित और स्थापित किया।

चिश्तियों में एक दो और बातें बहुत दिलचस्प हैं, जिनके बारे में हमें जानने की जरूरत है। एक बात तो यह कि लंगर में जो रसद होगी, उसको शाम तक आपको खत्म करना है। ऐसा नहीं कि कल तक उसे बचा कर रखेंगे। कल की कल देखी जाएगी। इसको आगे नहीं लेकर जाना है। यह बहुत जरूरी तत्व है। दूसरे, उन्होंने लोकभाषाओं में लिखा। भाषाओं में सूफियों की वजह से एक काम शुरू हुआ। तीसरा, जिसको हम समाअ्त बोलते हैं। बाकी इस्लाम के अंदर संगीत को लेकर बड़ी पाबंदी है। यह मानते हैं कि संगीत कुरान के मूल पाठ से ध्यान भंग करता है। इन्होंने संगीत को अपनी बात कहने का बड़ा माध्यम माना।

चिश्तियों के साथ इस बात को लेकर दूसरे सिलसिलों की खूब लड़ाई रही। यहां तक कि वारिस शाह, जिन्होंने हीर-रांझा लिखा। सोचिए आप कि रांझा के पास और कुछ हो या ना हो बांसुरी उनके पास हमेशा रहती है। वह बांसुरी समाअ्त का या चिश्ती सूफी सिलसिले का ही एक प्रतीक है कि वह इसके माध्यम से अपनी बात कहता

है। जब वह उदास हो जाता है, जब वह हार जाता है, खिन्न हो जाता है, उसकी बात नहीं मानी जाती तो फिर वो एक कोना पकड़ कर अपनी बांसुरी बजाता है। तो सुनने कौन आता है। यह फिर एक दिलचस्प बात है कि औरतें, बूढ़े, बच्चे, पशु-पक्षी और काम करने वाले लोग-मजदूर व छोटे किसान।

बाबा फरीद समात व बांसुरी बजाने के साथ समाज के इस बड़े हिस्से को जोड़ देते हैं। इन्हीं लोगों को जो समाज के पिछड़े-दमित तबकों से हैं, लिंग के लिहाज से, जाति व उम्र के लिहाज से, यही लोग हैं जो बाबा फरीद के भी चेले बनते हैं। चिश्तिया लोग उनके अंदर खासे लोकप्रिय रहे। ये सिलसिला इस लिहाज से बाबा फरीद के लगभग 450 साल बाद सैयद वारिस शाह होते हैं। वहां तक आपको दिखाई देता है कि किस तरह से चल रहा है कि समाअ्त की बात उसके अंदर कैसे आती है।

तीसरी बात जो मैंने कही थी कि इनके अंदर योग्यता है। ऐसे ही नहीं बन जाइएगा। यह पुश्तैनी नहीं है। इसके लिए आपको काबिल बनना होगा। अपनी मेधा को आपको साबित करना होगा। सिख गुरुओं के अंदर भी चिश्तिया सिलसिले का कि ये जो गद्दी पुश्तैनी नहीं होगी। ये भी योग्यता के लिहाज से उसे ही मिलेगी, जो सबसे ज्यादा काबिल होगा। जो वैचारिकी को अच्छे से समझता है। लंगर वहीं से आता है। कीर्तन की और भी परंपराएं हैं - लंगर, संगीत, सबका आपस में बैठकर भजन करना। तो ये कुछ चीजें हैं जो सिख, हिन्दू, इस्लामी परंपरा में चिश्तियों के हवाले से जहां से ये जुड़ती हैं।

बाबा फरीद के दो श्लोक मैं आपको सुनाता हूँ। इस पर आप गौर करें। इससे उनकी शख्सियत, विचारधारा व कहने का पता चलता है। बड़ी मशहूर हैं। आपने भी सुनी ही होंगी-

फरीदा गलिये चिक्कड़ दूर कर, नाल प्यारे नेह।
चलां तां पिज्जै कंबली, रहां तां तुट्टै नेह।।

गली में कीचड़ है। घर दूर है। मेरी अपने महबूब से मोहब्बत है। यदि जाती हूँ तो कंबली भीग जाएगी। हमें नहीं पता लेकिन जिनको चिकनी मिट्टी का अनुभव है। वे इस बात को समझ सकते हैं। ना तो पानी सूखे और उस पर चलना मुहाल है। हम लोग बठिंडा से हैं। हमने ऐसी मिट्टी देखी ही नहीं। जहां बरसात होती है तो कुछ देर में पानी सूख जाता है। गुरदासपुर की तरफ गए तो वहां पर चिकनी मिट्टी के कारण पानी सूखे ही ना और फिसलन। वहां जाकर फरीद जी की ये पंक्तियां याद आई - गलियां चिक्कड़ दूर कर। यदि फरीद को समझना है तो उनके लैंडस्केप (landscape) को समझना होगा। इनके आस-पास को समझना होगा। अपने यहां की मिट्टी में पानी का जमाव कैसा है, कैसा नहीं है, आपको उसके बारे में जानकारी भी देते जाते हैं। यह गजब का काम है।

जब ये अध्यात्म या रहस्यवाद की बात करते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि इन्होंने पदार्थिक हालात को आपके सामने नहीं रखा है। गहने, रसोई का काम, पशु-पक्षी किस किस्म के हैं, कितनी लंबी यात्रा है, ये आपके सामने सारे हवाले चलते रहते हैं।

गलिये चिक्कड़ दूर कर, नाल प्यारे नेह।
चलां तां पिज्जै कंबली, रहां तां तुट्टै नेह।

चलूंगी तो ये मुश्किलें हैं। लेकिन अगर रह गई, तो ना तो कीचड़ होगा, ना ही कंबली भीगेगी। अब आप भी तो बहाना कर ही सकते थे कि अब कौन जाए। कुरुक्षेत्र में बैठ कर भी तो इनको आप इन चारों शख्सियतों (हरियाणा सृजन यात्रा हाली, बालमुकुंद गुप्त, संत

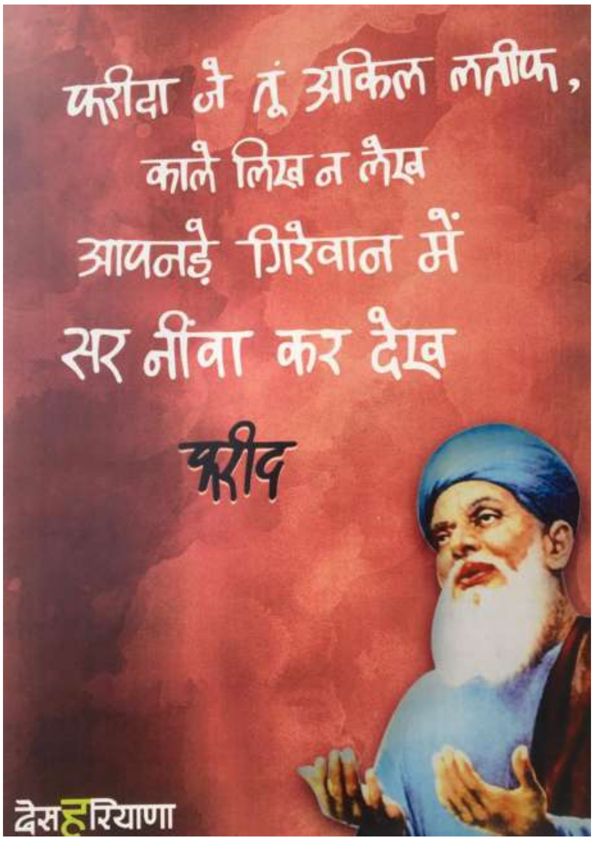

गरीबदास व फ़रीद के स्थलों पर गई थी) को याद कर ही सकते थे। आप आए हैं, तो चलने से ही चीजें बदलती हैं। एक रिश्ता बनता है। उससे बच तो जाएंगे लेकिन नेह टूट जाएगा। वे आपके सामने नैतिक चुनाव का मंजर खड़ा करते हैं कि अब चुनो। क्या चुनिएगा? अब इसी चयन पर आपकी अगली जिंदगी का नक्शा बनेगा। अब अगले श्लोक में वे समाधान देते हैं। वो समाधान बहुत दिलचस्प है-

पिज्जौ सिज्जौ कंबली, अल्लाह बरसौ मेह।
जाएं मिलां तिहं सज्जणा, मेरा तुट्टै नाहीं नेह।।

वे कहते हैं अल्लाह की रहमत बरस रही है। ये क्या भिगाएगी हमें। अपनी भीगी हुई कंबली को लेकर। सिज्जौ का मतलब है - छीजी हुई। अब कबीर साहब को याद करें - झीनी-झीनी बीनी चदरिया। इस चीज को कि जिस हाल में भी हैं, वैसे ही जाना होगा। अब फैसला कर लिया तो वही बरसात अल्लाह की रहमत हो गई। अल्लाह बरसौ मेह। जाएं मिलां तिन सज्जणां।

बाबा फरीद इतने बड़े चिंतक हैं कि उनकी बात में आप यह नहीं पाइयेगा कि यहां कोई गड़बड़ हो गई और दूसरी जगह निभी नहीं। उनके चिंतन की परंपरा उनके कलाम में आपको सादगी में सामने आती है। यहां पर आकर उनका मिलने का जज्बा मुंहजोर हो गया है- जाएं मिलां तिन सज्जणा। इतने में ही आप बह जाते हैं कि मेरा प्रेम नहीं टूटना चाहिए। मुझे उनसे मुझे मिलना ही है।

उनको बचपन से मैं सुनते आ रहा हूँ। पढ़ते आ रहा हूँ। बाद में कुछ साल पहले मेरे भीतर यह रोशन हुआ कि वे क्या कह रहे हैं। कितनी बड़ी बात है इसमें। फिर आपको पता चलता है। पाकिस्तान से नज़म हुसैन सैयद साहब, प्रोफ़ेसर किशनसिंह। उन्होंने इन चीजों को विधिवत तरीके से अध्ययन किया। उन्होंने जोड़ा इनको कि यही शाह हुसैन की काफी आपने भी शायद सुनी होगी-

मैं भी झोक रांझण दी जाणा, नाल मेरे कोई चल्ले।
नै भी डूंगी तुला पुराणा, शिहां दा पत्तण मल्ले।

उन्होंने ऐलान किया कि मुझे रांझण की झोक जाना है, क्या कोई मेरे साथ चलने वाला है। मुझे जाना ही है। मेरा तुट्टै नाहीं नेह। गलिये चिक्कड़ दूर घर। रांझण की झोक जाना है। घर दूर है और गली में चिक्कड़ है। गलिये चिक्कड़ अब दरिया बन गया है। नैक भी डूंगी मतलब उसका तट बहुत गहरा है। ऐसे ही नहीं जाया जा सकता। तुला पुराणा मतलब पुल पुराना है, जोकि मेरा वजन सहन नहीं कर पाएगा। इसलिए डूबना तय है। कहती है कि शिहां दा पत्तण मल्ले। जहां पर पर वह उथला है, वहां पर शेर जगह पर काबिज हैं। तीनों लिहाज से मौत लाजिम है। लेकिन रांझे की झोक मुझे जरूर जाना है। मेरा उनसे इकरार हुआ है।

अब आप यह देखिए कि बाबा फरीद ही की जमीन के ऊपर शाह हुसैन अपने इसको रांझे-हीर के साथ जोड़ दे रहे हैं। मैं भी झोक रांझण दी जाणा नाल मेरे कोई चल्ले। यूं करते-करते वारिस शाह जब किस्सा हीर लिखते हैं तो वो चिनाब दरिया में छलांग लगाते हुए रांझे को और उसे विस्तार देते हुए बड़े नाटकीय ढ़ंग से उसे दिखाते हैं कि क्या हुआ? कैसे वह नहीं जा पाया और कैसे उसे ले जाया गया। यह कितना मुश्किल है।

वारिस शाह का जो दौर है 18वीं सदी का पंजाब में बंदाबहादुर के साथ। पंजाब के लोग तो उसे अलग कर रहे हैं। लेकिन सारी फौज तो हरियाणा से जुटी थी। बड़ खालसा से नारनौल से और यूं चलते-चलते कुरुक्षेत्र का ही क्षेत्र है वह समाना, लोहगढ़, मुख़लिसगढ़ व अंबाला आदि इस तरफ ही आता है। मुगलों का राज कमजोर हो रहा है। पंजाब के अंदर बगावतें उठ रही हैं। हरियाणा में भी किसान विद्रोह उठ रहा है। एक माहौल है कि एक साम्राज्य ढ़ह रहा है। नई ताकतें खड़ी हो रही हैं। वहां पर वारिस शाह, जो खुद चिश्ती सिलसिले के हैं। वो एक बंद लिखते हैं बाबा फरीद के ऊपर-

मौदूद दा लाडला पीर चिश्ती
शकरगंज मसूद भरपूर है जी।
22 ही कुतबां विच पीर कामिल
जिसदी आजज़ी जौहद मंजूर है जी।
खानदान विच चिश्त दे कामलियत
शहर फकर दा पटण मामूर है जी।

मौदूद साहब के बारे में माना जाता है कि चिश्तिया सिलसिले की शुरुआत उन्होंने की थी। अफगानिस्तान-पाकिस्तान की सीमा पर उनकी दरगाह बताई जाती है। वारिस शाह इसमें चिश्ती सिलसिले की पूरी जानकारी दे रहे हैं। मौदूद से चिश्ती सिलसिला शुरु हुआ। शकरगंज हैं यह उनका पूरा नाम है।। फिर उनका

कुतुबों में बड़ा मुकाम है। अपने जौहद के लिए वे जाने जाते थे। ये उनके कलाम के बारे में वे पूरी कुंजी पकड़ा दे रहे हैं। खानदाने चिश्त में पटण का शहर बसाया, जो अभी भी मामूर है। पूरी तरह से उसकी आबोताब कायम है। अंत में वे एक लाइन कहते हैं-

शकरगंज ने आण मुकाम कीता

दुख-दर्द पंजाब दा दूर है जी।

शकरगंज ने मुलतान या पाकपटण आकर जब मुकाम किया, तब कहीं जाकर पंजाब का दुख-दर्द दूर होना शुरू हुआ। इस पंक्ति में उनकी अकीदत दिखती है। उनका अपने खलीफा के प्रति, जिनके वे अपने आप को शागिर्द भी कहते हैं। अकीदत व उन्स दिखता है। एक सच्चाई भी दिखती है कि वारिस शाह जब कोई बात कहते हैं तो वे वैसे ही नहीं कह देते।

मैंने इसे ऐसे पाया कि जब भी हम लोग आपस में बैठ कर कोई शुभ वचन करते हैं, बढ़िया बात करते हैं। एक दूसरे से उलझते और बहसते हैं, लेकिन ज्ञान और विवेक की किसी चीज को खड़ा भी करते हैं तब हम शकरगंज की हाजिरी में ही होते हैं। भले ही हम कहीं भी हों। भले ही वो क्लासरूम हो। भले ही वो कोई सेमिनार रूम हो या भले ही दो किसानों की आपस में बातचीत हो। और कोई स्टूडियो में टेलीविजन पर अच्छी बातचीत हो रही हो तो हम समझ लें कि वहां पर शकरगंज हैं। आज तो हम उन्हीं की जगह पर आए हैं, जहां से ये सारा सिलसिला शुरू होता है। आज का दिन उनको याद करने के लिए बहुत बड़ा सौभाग्य है। आज हमारे साथ कोई बरकत है। उनका श्लोक आता है-

दिलह मोहब्बत जिन, सेई सचया

सच्चाई उन्हीं के पास आएगी, जिनके दिल मोहब्बत से भरे हुए हैं। यदि वास्तव में सच्चाई है तो वह वहीं पर आकर रहेगी। नहीं तो वह एक किस्म का डिस्सीप्लिन ही रहेगा। वह हमारे ऊपर कठोर मर्यादित किस्म का अंकुश के तौर पर रहेगा। सूफियों ने कमाल किया। इतनी बड़ी बात को पूरी सादगी और ऐलानिया ढंग में कहा है।

दिलह मोहब्बत जिन, सेई सचया

जिन मन हौर, मुख हौर कांडे कचया।

जिनके मन में और है और मुख में और है, वे तो कच्चे बर्तन के समान हैं, उनकी क्या बात करनी? मुद्दा यह कि दिलह मोहब्बत जिन सेई सचया।

कबीर साहब बाबा फरीद से सौ साल बाद हुए। गुरुग्रंथ साहब में कबीर साहब की भी कुछ ऐसी ही वाणी शामिल है, जो कि बाकी हिन्दी में दिखाई नहीं देती। लोगों को पता भी नहीं है कि ये कबीर के श्लोक या शबद हैं, जो गुरुग्रंथ साहब में है। वहां पर आता है। पढ़ा तो मैं चौंक गया -

कबीर जो तुध साध पिरमकी

तो सीस की बनाय लियो गोय (सिर की गेंद बना लेना)

खेलत-खेलत हाल कर

जो होय से होय।

कबीर साहब सीस की गेंद बना लेने की बात करते हैं। चाहे उससे हॉकी खेलो या फुटबाल। चिंदी-चिंदी हो जाए तो हो जाए। सब देखा जाएगा। पहले तुम इसे गेंद बनाओ। कबीर साहब इसे यहां तक ले जाए। वही चुनाव का मसला है। इश्क़ के इख़लाक से ये चीज शुरू होती है। गुरुनानक के अंदर आकर कबीर साहब की यह पंक्ति और फरीद साहब की वह पहली पंक्ति गजब की रोशनी में, उसमें वे बहुत उजास भर देते हैं और बुलंदी पर लेकर जाते हैं। जिसको कबीर साहब साध कह रहे हैं। गुरुनानक उसे कहते हैं।

जो तौ प्रेम खेलण का चाउ

सिर धर तली गली मेरी आउ।

कि सिर को उतारो और अपनी हथेली पर लेकर आओ, यदि प्रेम का खेल खेलना है। आगे वे कहते हैं-

इत मार्ग पैर धरीजै

सिर दीजै, काण (संकोच) ना कीजै

वारिस शाह किस तरह बात करते हैं। लोग समझते हैं कि लड़के-लड़की के इश्क की दास्तान है। है भी। उससे आगे इश्क के मुकाम क्या-क्या हैं। प्यार के लिए शहीद भी होते हैं। हीर को शहीद माना गया है। उसमें वो कहता है-

सिर दित्तयां बाझ ना इश्क पक्के

इश्क को पकना चाहिए। ऐसे ही नहीं है वो। पकने को यदि तसव्वुफ की सात मंजिलों के साथ इसको

जोड़ कर देखें तो। जिसमें आखिर के मुकाम में आपका रंग सुर्ख भी होता है और सब्ज भी होता है।

सिर दित्तयां बाझ ना इश्क पक्के

ऐन नहीं सुखालियां यारियां ने

ये दोस्तियां आसान नहीं हैं। सिर देने के बाद ही यह पकेंगी। 'दिलह मोहब्बत जिन, सेई सचया' मोहब्बत और सच्चाई की परीक्षा यह है कि क्या आप अपने अकीदे के लिए सिर देने के लिए तैयार हो या नहीं।

शहादत को समझने के लिए मैं पढ़ते आया। सिख गुरुओं का जो कलाम है। सूफियों का जो कलाम है। पंजाब का यह खित्ता, हरियाणा भी अब बोल लें। हिमाचल और पाकिस्तानी पंजाब भी बोल लें। क्योंकि ये बंटवारे हमने नहीं किए। यह हमारे ऊपर थोंपी गई। इसको हम पंजाब ही कहते थे। पंजाब की वैचारिकी की बुनियाद इन तीन लोगों ने रखी है।

बाबा फरीद गंजेशकर फरीदुद्दीन, जहां हम खड़े हैं। दूसरे हैं कबीर साहब, तीसरे हैं गुरुनानक। इन तीन लोगों ने इस इलाके को खास आब दी है। इन तीनों का यह सबसे खूबसूरत कलाम गुरु गंथ साहब में विद्यमान है। उसमें कबीर साहब की वह चीजें हैं, सारा निर्गुण का सबसे गंभीर कलाम यहां पर है। फरीद साहब का सबसे विशुद्ध कलाम हमें यहां पर मिलता है। बाकी गुरुनानक साहब और दूसरे गुरुओं का तो उसमें है ही।

इन तीन लोगों ने बुनियाद रखी इस खित्ते के अंदर कि हमें रहना कैसे है। हमें रहने की तमीज उन्होंने दी कि आपको इश्क में मुब्तिला होकर रहना है। प्रेम में रहना है। सच्चाई को इसी के माध्यम से हासिल कर सकिएगा। प्रेम जब भी दिखाया गया है, उससे नहीं है जो नजदीक है। वह उससे है जो आपसे जरा कमतर है या आपका दुश्मन हो सकता है। आपके लिए कोई भी बेगाना नहीं है। दूसरे के लिए कुर्बान हो जाना है। उसमें मुझे लगा कि शहीद होने पर इतना बल है कि शाह हुसैन, जो लाहौर में दातागंज की दरगाह है। जिन्होंने कश्फुल महजूब नामक फारसी में पहला ट्रीटेज है, जो उन्होंने सूफीवाद के ऊपर लिखा। अल हुजवरी साहब, वहां पर मेला चरागां होता है, तो शाह हुसैन साहब वहीं पर गाते थे और कलाम कहते थे। वो कहते हैं-

शाह हुसैन शाहदत पाएन,

जो मरण मित्रां दे अग्गे।

वे लाहौर में यह कह रहे हैं। गुरु अर्जुन साहब उन्हीं के समकालीन हैं, वे इधर अमृतसर में कह रहे हैं-

जिस प्यारे सौं नेह, तिस आगै मर चलियै

धृग जीवन संसार ताकै पाछै जीवन

बाबा फरीद को देखिए, शाह हुसैन और वारिस शाह को देखिए। बाद में गदरियों (गदर पार्टी) को देखिये। इन सब चीजों के अंदर कि पंजाब में इश्क कमाया जाएगा। इसको कमाना भी बोलते हैं। ऐसे ही नहीं है। इश्क कमाइये और इसके लिए सिर हथेली पर रखिए। पंजाबी होने के लिए या इस खित्ते में रहने के लिए पहले अपना शीश काट कर हथेली पर रखने की आजमाइश के लिए तैयार हो। इश्क कमाने के लिए एक तड़प जगे।

एक लगन के बिना समाज का कुछ नहीं किया जा सकेगा। हम लोगों से जुड़ें। लोगों के साथ स्नेह को दोबारा से हासिल करें। उसको कमाएं। उस रास्ते पर चलें। बाबा फरीद ने हमारे सामने और आप जिस हजरत के पास से होकर आए हैं, संत गरीबदास जी, हाली पानीपती, बालमुकुंद गुप्त जी, मेरा तो सबके सामने सिर झुकता है। ऐसी ही बैठकें, ऐसी ही यात्राएं हों। हम लोग अपने लोगों को दोबारा ढूंढ़ें। अपने साथ बातचीत दोबारा शुरु करें। बाबा फरीद ने यही हमें सिखाया कि जरा देहातों में दूर जाया जाए। अपने आप को जरा दांव पर लगाया जाए। उनको क्या पता था कि यहां पर सफलता होगी ही। लेकिन उनका जाना बड़ी बात है। आप लोग भी उसी सफर में हैं। हम लोग भी उसी सफर में रहें। इसी में उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है।

बालमुकुंद गुप्त की हवेली पहुँची हरियाणा सृजन यात्रा

✦ सत्यवीर नाहड़िया

हिंदी पत्रकारिता के मसीहा तथा हिंदी गद्य के जनक यशस्वी साहित्यकार एवम् मूर्धन्य पत्रकार स्व. बाबू बालमुकुंद गुप्त की जन्मस्थली गांव गुड़ियानी उनके निधन के एक सदी बीत जाने के बावजूद कलमकारों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। 29 फरवरी 2019 को इसी साहित्यिक ग्राम गुड़ियानी में गुप्त जी की अनमोल स्मृतियां सहेजे उनके हवेली के दर्शनार्थ हरियाणा भर से करीब दो दर्जन रचनाकार रात्रि प्रवास के लिए आए। हरियाणा सृजन यात्रा नामक यह साहित्यिक भ्रमण यादगार बन पड़ा तथा अपनी अनूठी छाप छोड़ गया।

कुरुक्षेत्र की टीम देस हरियाणा तथा सत्यशोधक फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में प्रदेशभर के करीब दो दर्जन रचनाकार करीब 6:00 बजे जब गुप्त जी की हवेली में प्रवेश कर रहे थे तो फागुन में सावन की सी झड़ी लगी हुई थी, वहां उपस्थित मेजबान साहित्यकारों एवं साहित्य सेवियो ने उनके सम्मान में अपनी कुर्सियां खाली कर दी तथा हवेली के छज्जों के नीचे बैठकर प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ, जिसमें साहित्यिक पत्रिका देस हरियाणा का बाबू बालमुकुंद विशेषांक, इन पंक्तियों के लेखक की सातवी पुस्तक 'कुंडलियां ग्यान बिग्यान की' लेखक सुरेंद्र कुमार की द्वारा संपादित कृति 'अनुभव बाणी' तथा श्री जी इंटरटेनमेंट के प्रणेता ऋषि सिंहल निर्देशित रचना 'अमर रहेंगे सदा गुप्तजी' लोकार्पित की गई। उभरते युवा गायक मुकेश जांगड़ा स्वरांजलि पर सभी उपस्थितजनों ने भरपूर दाद दी। राम बरसता रहा, करीब 50 मोबाइल फोन्स की फ्लैशलाइट्स जलती रही, गुप्त जी का भावपूर्ण स्मरण चलता रहा, फिर सर्व सहमति से प्रतिकूल मौसम के चलते शेष कार्यक्रम साथ लगते न्यू एरा वर्ल्ड स्कूल में स्थानांतरित किया गया। परिषद संयोजक कृष्ण भगवान गोयल ने सभी का प्रथम सत्र के लिए आभार ज्ञापित किया। कोसली से प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े अनेक पत्रकार एवं छायाकार इन दुर्लभ अनमोल लम्हों को अपने कैमरों तथा जहन में कैद करते रहे।

यह न्यू एरा स्कूल की संजीदगी व जिंदादिली कही जाएगी कि निदेशक संजय कुमार सैनी के मार्गदर्शन में मात्र दस मिनट के नोटिस पर सभागार में विचार गोष्ठी प्रारूप की सभी तैयारियां कर ली गई। जब तक मेजबान तथा मेहमान रचनाकार स्कूल के सभागार में पहुंचे, वहां हवेली के आयोजन से उतारे हुए पोस्टर बैनर आदि तक लगाए जा चुके थे।

जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार की अध्यक्षता, स्कूल निदेशक श्री सैनी के कुशल संयोजन तथा परिषद संरक्षक नरेश चौहान एडवोकेट की मेजबानी में गोष्ठी में भी खूब रंग जमा।

इस गोष्ठी में एक और जहां केंद्रीय विश्वविद्यालय पाली (जांट) के सहायक प्रोफेसर डॉक्टर सिद्धार्थ शंकर राय तथा डॉ अमित मनोज ने गुप्त जी के बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व पर अनूठे शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी वही अनेक वरिष्ठ रचनाकारों एवं शोधार्थियों ने उनकी रचनाओं का सस्वर पाठ करके गोष्ठी का माहौल गुप्तमय में बना दिया, जिनमें रेवाड़ी के प्रख्यात ग़ज़लकार विपिन सुनेजा ,युवा कवि मुकुट अग्रवाल के अलावा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के शोधार्थी योगेश शर्मा, कपिल भारद्वाज, बृजपाल तथा अंजू के नाम उल्लेखनीय हैं।

गोष्ठी में मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए इस सृजन यात्रा के प्रणेता साहित्यिक पत्रिका देस हरियाणा के संपादक तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफेसर सुभाष चंद्र ने बताया कि इस सृजन यात्रा का उद्देश्य प्रदेश में साहित्यिक संवाद स्थापित करना तथा साहित्य का प्रचार प्रसार करना है। उन्होंने गुप्त जी के हिंदी परिमार्जन,साहित्य व पत्रकारिता के अलावा भाषा व स्वतंत्रता संग्राम में अनूठी योगदान को याद करते हुए उन्हें महामानव बताया। अध्यक्षीय संबोधन में जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार ने कहा की गुप्त जी बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे। वे कुशल संपादक, निर्भीक पत्रकार, तटस्थ लेखक, सतर्क समीक्षक, ओजस्वी कवि तथा चिंतनशील निबंधकार भी थे।परिषद संरक्षक नरेश चौहान एडवोकेट ने गुप्त जी को नवजागरण का पुरोधा तथा भारतेंदु युग का सेनापति बताते हुए उन्हें एक क्रांतिकारी कलमकार करार दिया। परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष ऋषि सिंहल ने परिषद् की गत ढाई दशकों की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए गुप्त जी के भूले बिसरे व्यक्तित्व एवं कृतित्व को चिरस्थाई प्रेरणापुंज बनाने के अभियान को जारी रखने की प्रतिबद्धता दोहराई। सचिव ईश्वर सिंह यादव ने सभी का आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर परिषद की ओर से प्रदेश भर से पधारे सभी दो दर्जन साहित्यकारों को शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं साहित्य भेंट करके अलंकृत किया गया।

इस सृजन यात्रा के रात्रि प्रवास के दौरान भी मेजबान तथा मेहमान रचनाकारों ने प्रदेश संदेश के समसामयिक हालातों साहित्य की दिशा एवं दशा तथा विभिन्न सामाजिक एवं राष्ट्रीय मुद्दों पर विमर्श किया। इस रात्रि प्रवास के दौरान न्यू एरा वर्ल्ड स्कूल के आत्मीय मेजबानी, ललित मोहन डीपीई का कुशल प्रबंधन, साहित्यकार डॉ महावीर निर्दोष, सतबीर इंदौरा, प्रेम प्रकाश प्रेम का मेहमान रचनाकारों के लिए गाइड की भूमिका निभाना तथा मेजबान विद्यालय के नन्हे विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न जिम्मेदारियों का निर्वहन यादगार बन पड़ा।

टीम देस हरियाणा के चौथे साहित्य उत्सव से पहले प्रदेश व्यापी इस सर्जन यात्रा का गुड़ियानी प्रवास

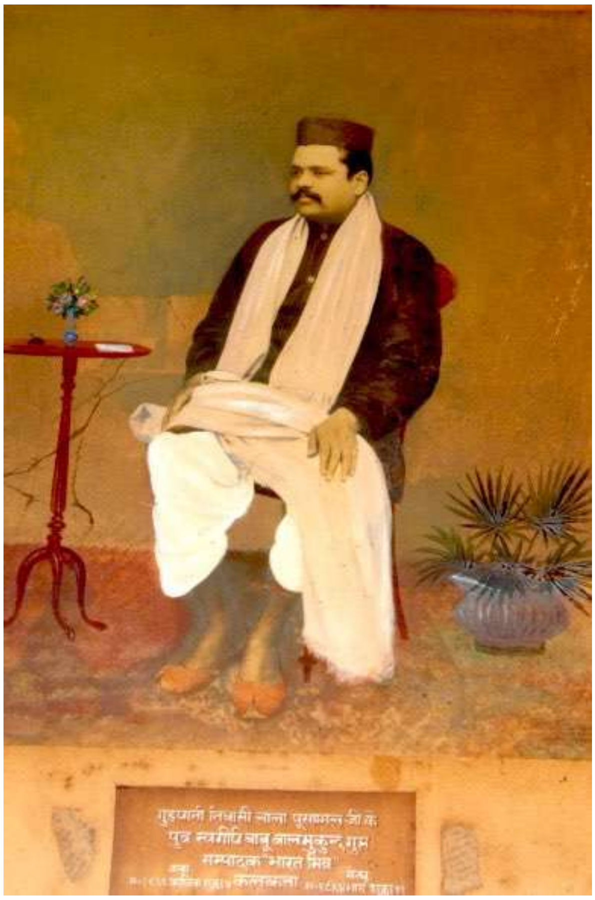

कई मायनों में विशेष रहा। एक ओर लंबे अरसे से बंद पड़ी गुप्त जी की अनमोल विरासत हवेली में साफ सफाई हो पाई, वहीं दूसरी ओर गत दो वर्षों से सुप्त अवस्था में चली गई बाबू बालमुकुंद गुप्त पत्रकारिता एवं साहित्य संरक्षण परिषद् जग उठी। तीन पीढ़ी के रचनाकारों को एक साथ बैठकर गुप्त जी की साहित्यिक विरासत के अलावा बहुआयामी मुद्दों पर विमर्श करने का सौभाग्य मिला।कुछ नए सच्चे एवं निष्काम साहित्यिक कार्यकर्ताओं की पहचान भी हो पाई, जिन्होंने प्रतिकूल मौसम के बावजूद सच्चे मेजबान की जीवंत भूमिका निभाकर मन जीत लिया। शेर सिंह यात्रा में शामिल फिल्म समीक्षक विकास साल्याण व रंगकर्मी अरुण कैहरबा का छायांकन व फिल्मांकन,अमित 'मनोज' द्वारा तैयार की गई गुप्त जी की पोस्टर कविताएं, न्यू इरा परिवार का बेहद स्वादिष्ट भोजन, मेजबान वरिष्ठ साहित्यकार व हरियाणा साहित्य अकादमी के मानद सदस्य रमेशचंद्र शर्मा, राव बिजेंद्र सिंह, अजीत यादव ,आचार्य राम तीरथ ,कवि परमानंद वसु, सत्यप्रकाश सैनी, डॉ प्रवीण खुराना देर रात तक गोष्ठी में शरीक होना यादगार रहेगा। मेहमान रचनाकारों में करनाल से प्रख्यात लघुकथा का डॉक्टर अशोक भाटिया, नरेश सैनी, पंचकूला से लोक संस्कृति लेखक सुरेंद्र पाल सिंह कुरुक्षेत्र से सत्यशोधक फाउंडेशन की प्रबंधक ट्रस्टी श्रीमती विपुला, ग़ज़लकार मनजीत भोला, हिसार से कथाकार राजकुमार जांगड़ा, सिरसा से नरेश दहिया व राजेश कुमार, टोहाना से सृजनकर्मी बलवान सत्यार्थी , घरौंडा से लोकगायक प्रवेश त्यागी, इंद्री से रंगकर्मी अरुण कैहरबा, युवा रचनाकार दयाल जास्त, सोनीपत से वीरेंद्र सिंह बहुमुखी प्रतिभागिता मानस पटल पर अंकित रहेगी।

1 मार्च को सुबह इन रचनाकारों की टोली गुड़ियानी के साथ लगते गांव भूरियावास की पहाड़ी पर उस स्थल को देखने गई ,जहां कभी अंग्रेजों ने सैकड़ों रणबांकुरों को फांसी पर लटका दिया था। इसके बाद उन्होंने गुड़ियानी स्थित प्राचीन हवेलियों का छायांकन किया तथा सांप्रदायिक सौहार्द की नायाब मिसाल बने मंदिर, मस्जिद का दौरा भी किया।अंत में सभी रचनाकारों ने एक बार दिन के उजाले में फिर से गुप्त जी की हवेली कि सभी मंजिलों का बहुआयामी छायांकन व निरीक्षण कर गुड़ियानी को अलविदा कहा।

हिन्दी जातीय चेतना के लेखक थे बालमुकुन्द गुप्त

✦ सिद्धार्थ शंकर राय

देस हरियाणा और सत्यशोधक फाउंडेशन द्वारा आयोजित हरियाणा सृजन यात्रा के दौरान गुड़ियानी (रेवाड़ी) बालमुकुन्द गुप्त की हवेली पर राष्ट्रीय संगोष्ठी की गई। प्रस्तुत है इस अवसर पर हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सहायक प्रोफेसर सिद्धार्थ शंकर राय द्वारा दिया गया व्याख्यान जिसे लिपिबद्ध किया है योगेश शर्मा ने -

मैं मूलतः बनारस मंडल का रहने वाला हूँ, पढ़ाई लिखाई मेरी बनारस से है। जब हरियाणा में आया तो मुझे अपने साथियों से शिकायत रहती थी कि आप बड़े नीरस लोग हैं। मैं जब बालमुकुन्द गुप्त की हवेली में बैठा था तब बारिश होने लगी तो अहमद फराज़ का एक शेर याद आया

"इस दफा बारिशें रुकती नहीं फराज़
हमनें आंसू क्या पिए कि सारे मौसम बरस पड़े।"

बालमुकुन्द गुप्त की हवेली में बैठकर मुझे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और जयशंकर प्रसाद की हवेली याद आ रही थी, जब बनारस में कोई भी मेहमान आता था तो हम वहां बार-बार जाते थे, और जो यहाँ की छतरी तनती है तो वहां जाकर मिल जाती है, उन हवेलियों में। मैं बनारस का आदमी यहाँ बैठा था तो मुझे लग रहा था कि मैं बनारस में भारतेंदु की हवेली पर बैठा हूँ और आप वहां जाकर बैठेंगे तो आपको लगेगा गुड़ियानी की हवेली में बैठे हैं।

बालमुकुन्द गुप्त के माध्यम से हिंदी की जो जातीय चेतना है वह किस प्रकार निर्मित हो रही थी। उसकी एक लम्बी श्रृंखला जिसे डॉ. रामविलास शर्मा ने कहा कि 1857 की क्रांति हिंदी नवजागरण की पहली मंजिल है। वह एक राजनीतिक कार्यवाही थी। हर एक पढ़ा-लिखा, समझदार व्यक्ति जो हिंदी पट्टी में निवास कर रहा था, वह हिंदी जाति का था। हम भोजपुरी, हरियाणवी आदि भाषी हो सकते हैं, परन्तु जातीय चेतना में हम सब हिंदी जाति के लोग हैं। हम किस जाति में पैदा हुए वह रक्त गोत्र की शुद्धता की बात नहीं है। हम किसी की भाषा को सुनकर उसकी जाति तय कर देते है कि यह बंगाली, बिहारी है, पंजाबी है। हम उसकी जाति, धर्म नहीं पूछते। आज भी बंगाल में जाएगें और हिंदी बोलेंगे तो जो पुराने ढंग के लोग हैं वो कहते हैं कि ये हिन्दुस्तानी है या कश्मीर में आप हिन्दी बोलेंगे और किसी ने आपको कहा कि यह हिन्दुस्तानी हैं तो हो सकता है कि किसी दूसरे तरह के विचार आपके मन में आएं लेकिन बंगाल में शायद नहीं आएगा। जो हमारी जातीय चेतना है, भारतेंदु मंडल से लेकर वर्तमान समय तक के जितने लेखक हैं, हमारी जातीय चेतना के लेखक हैं।

रचनाकार के भीतर छटपटाहट होती हैं वह हमेशा किसी न किसी चीज को खाली पाता है (SOMETHING IS MISSING) प्रोफेसर सुभाष जी में हरियाणा सृजन उत्सव को लेकर के छटपटाहट रही होगी। मैं बार-बार खुद को खाली पाता था और साथी अमित जी से कहता था कि "उधौ मोहे ब्रज बिसरत नाहीं"। मुझे बार-बार बनारस याद आता था। अब यहाँ मैं पूरा हो रहा हूँ, मुझे यहाँ बैठकर अच्छा लगा है और बनारस मेरे भीतर जिंदा हुआ है। यह सामान्य सी यात्रा नहीं है। अब सात साल से हरियाणा में हूँ तो मैं भी दावा कर सकता हूँ कि मैं भी हरियाणवी हूँ और आप मेरा दावा ख़ारिज नहीं कर सकते। उस नाते भी मैं इस बात को कह रहा हूँ कि उनको ये महसूस हो रहा है कि हम कुछ खो रहे हैं, कोई चीज है जोकि हमें एक साथ बांध नहीं रही है, जो हमारी आवाज नहीं बन रही है। इस कारण से वो लगातार कई वर्षों से जूझ रहे हैं इन प्रश्नों से और इसी जूझने के क्रम में कि कौन सी जगहें, लोग, बातें हैं और कितनी घटनाएं हैं जो मुकम्मल कर सकती हैं? जो हमारी जातीय चेतना को बना सकती हैं? ये जितने बिन्दु हैं इस यात्रा के, जानबूझकर के यह एक लड़ी बना रहे हैं और यह यात्रा बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी।

क्या बालमुकुन्द गुप्त इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने लिख दिया? कुछ भी लिख देने से आप महत्वपूर्ण हो जाते हैं? नहीं। उन्होंने "कुछ भी" नहीं लिखा।

एक तुलसीदास की अर्धाली लूँ और कहूँ कि "संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने"। अपने समय के बहुत बड़े खतरे को, उनका समाज जिस खतरे से जूझ रहा था, उसको पहचाना और उस समाज के खतरे को पहले अपने ऊपर लिया और उसमें भी जाति का बोध, कि हिंदी जाति को कैसे आगे बढ़ाना है?

जिस सांस्कृतिक अभाव से हम जूझ रहे हैं, बात-बात पर, हमारी संस्कृति कैसी होती है? मैं भोजपुरी भाषी हूँ, आप हरियाणवी समाज से हैं, आप देखिए कि कौन से गीत हमारे प्रतिनिधि बन गए हैं जो समारोहों में गाए जा रहे हैं। दूसरी बात जब नवजागरण का प्रश्न आता है तो कहते हैं कि किसलिए याद किए जाएं?

भारतेंदु मंडल के लेखकों ने इसी आवश्यकता पर, साहित्य को जब परिभाषित किया तो कहा कि हृदय का विस्तार, अंतःकरण के आयतन का विस्तार बहुत जरुरी है। इस पर काम किया गया। फिर उनके ठीक बाद जिससे वो लोहा ले रहे थे (महावीर प्रसाद द्विवेदी से) उन्होंने कहा कि अब हृदय बड़ा हो गया, भारतेन्दु मंडल के लेखकों ने हृदय को बड़ा किया, तो उन्होंने कहा कि "ज्ञानराशि के संचित कोष का नाम साहित्य है"। उस हृदय में बहुत सारी चीजें इकट्ठा हो रही थी। अगर हमारे पास एक मुकम्म्ल भाषा हो। भारतेन्दु युग के लेखक भी इसी से जूझ रहे थे कि हमारे पास एक मुकम्मल भाषा नहीं थी जिसको आधुनिक भाषा कहा जाए।हिन्दी बनने बिगड़ने की प्रक्रिया से गुजर रही थी। अधिकांश आलोचक और हिंदी के विद्वान अब भी इस धारणा में बंधे हुए हैं कि हिंदी गद्य का जो परिमार्जित रुप है, पूर्वी प्रदेश जिसे कहा जाता है यानी बनारस, कलकत्ता या दिल्ली के पूरब। जबकि आरम्भिक लेखकों ने मोर्चेबंदी की और वो पश्चिमोत्तर प्रान्त के थे। वो भी उतने ही बराबर के लेखक थे और इस पर काम करने की जरूरत है। मैं बार-बार कहता हूँ दिल्ली के पश्चिम में जो पंडिताऊपन की भाषा थी उसके विपरीत एक भाषा निर्मित हो रही थी जोकि सीधे, पूरा पंजाब प्रदेश जिसे मैं भाषाई गलियारा (LANGUAGE CORRIDOR) कहता हूँ। जिसे हिन्दुस्तानी कहते हैं, हिन्दुस्तानी निर्मित हो रही थी। बालमुकुन्द गुप्त में भी वो पुट देखेंगे। इन प्रान्तों में, मानक हिंदी सरदार पूर्ण सिंह, श्रद्धाराम फिल्लौरी, रामप्रसाद निरंजनी के साहित्य में कैसे निर्मित हो रही थी। हिंदी नवजागरण में 'पश्चिमोत्तर' में यह बहुत बड़ा वाद-विवाद का विषय है। यह भारत की सीमाओं में समाप्त नहीं होती इसका प्रभाव कराची तक था। बालमुकुन्द गुप्त ने पूरब को भी ठीक से देखा था और इन प्रान्तों को भी। हिंदी नवजागरण के बालमुकुन्द गुप्त इकलौते लेखक थे जिन्होंने लाहौर और कलकत्ते को अच्छे से समझा था। उनके भूगोल और इतिहास को देखकर समझ आता कि यह लेखक इतना तीखा क्यों है? क्योंकि वह पूरे भारत के जिसे राष्ट्रीय चेतना कहते हैं, इसलिए यह तीखापन, भाषाई-एकता, भाषा के मानकीकरण की बात आती है। उनके मानकीकरण में संस्कृतनिष्ठ हिंदी नहीं है। उसके साथ उर्दू भी है और इसलिए जब हम उर्दू की बात करते है तो वह न मुसलमानों की भाषा है न भारत के बाहर की भाषा है, इस जमीन की उपजी हुई भाषा है। मैं बराबर कहता हूँ कि हिंदी की 18 बोलियाँ नहीं हैं, 19 बोलियाँ हैं जिनमें उर्दू भी है। इसलिए, इस कारण से भी इनको याद किया जाना चाहिए कि जो एक मुकम्मल चेहरा बन रहा था हिंदी पट्टी का और भारतीयता का उसके ये प्रतिनिधि लेखक थे।

बच्चों पर जो छोटी छोटी पोथियाँ हैं (बाल-साहित्य) आपको बहुत आसान लग सकती हैं। सत्यवीर नाहड़िया जी ने बहुत ठीक कहा कि आसान लिखना बहुत कठिन काम है और इसके मानक प्रेमचंद हैं। 'ईदगाह' कहानी छठवीं के बच्चे को सुनाइये और उसको समझ में आती है और क्या आनंद लेता है वो। हम सब अध्यापक जो हिंदी पढ़ाते हैं, साहित्य पढ़ते पढ़ाते हैं, थोड़े अहंकारी हो जाते हैं, और जब उस कहानी को पढ़ते हैं, तो जो हामिद का चिमटा है, हमारी जुबान पकड़ लेता है। वो कहानी हमें समझ में नहीं आती। कोशिश करते हैं बार-बार उसके पाठ की, कि वो कहानी हमें समझ में आ जाए। "दो बैलों की कथा" सामान्य से बच्चे को खूब समझ में आती है, आनन्द लेता है, आलोचकों का जबड़ा तोड़ती है वो कहानी। क्योंकि पूरा मुक्ति संग्राम है उसमें। यानी जैसा मस्तिष्क है उन लेखकों ने उस पर वजन उतना ही डाला है। यह इनकी विशेषता है, दिखने में आसान, जैनेन्द्र ने लिखा है कि, अगर मैं गोदान लिखता तो इस तरह से बात को सुलझा करके कहने की कला मुझे नहीं आती। वह कला, इन लेखकों में थी। ये हिंदी जाति के भविष्य निर्माता हैं। इस कारण से भी इनको पढ़ा जाना चाहिए। एक संकल्प मैं करता हूँ कि हरियाणा के किसी एक लेखक पर मुकम्मल किताब लिखूंगा।

आलोचकों की उपेक्षा सहते बालमुकुन्द गुप्त

✦ डॉ. अमित मनोज

सबसे पहले मैं सत्यशोधक फाउंडेशन और देस हरियाणा के सम्पादक प्रो. सुभाष जी को धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने ऐसे समय में इस तरह की सृजन यात्रा का आगाज़ किया, जिस समय सरकारी संस्थाएं गूंगे होने का प्रमाण दे रही हैं या दूसरे शब्दों में कहूँ कि जब कोई कान ना हिला रहा हो, उस समय बोलना और चलना ही बहुत बड़ा साहस है। गुप्त जी जैसे शख्स को परिषद ने इस तरह खोजा कि अँधेरे में रह रहे हम जैसे लोगों को एक ऐसी ज्योति दिखाई दी कि जीवन भर हम सीध बांधकर हमेशा चलते रहेंगे। हरि राम जी, श्याम सुंदर सिंघल जी, नरेश चौहान और सत्यवीर नाहड़िया जी द्वारा स्थापित बालमुकुन्द गुप्त परिषद का सम्मान करता हूँ और अपनी नर्सरी के दिनों में 'दैनिक ट्रिब्यून', 'हरिभूमि' और 'रहट चाल' को याद करता हूँ। सहगल साहब चले गए, ऐसे वक्त में उन्होंने हमें राह दिखाई जिस वक्त हमें यह पता ही नहीं था कि हमें चलना कहाँ है।

यह एक चिन्तन का विषय है कि जब हमारे देश के युवा का मस्तिष्कों को गुमराह किया जा रहा है कि उसके हाथ में कलम और किताब की जगह लाठी और बन्दूक दी जा रही है और उसे यही अपनी मंजिल लगती है। वह सरेआम इन दोनों को लहराता है और हम सब चुपचाप देखते हैं और भय से कांपते हैं। अभी कल ही फेसबुक पर एक टिप्पणी मैं पढ़ता हूँ, (मैं शहर का नाम आपको नहीं बताऊंगा, जानबूझकर) जिसमें एक युवा लिखता है 'में भी शांतिदूत काफी हो गए हैं, कहीं दिल्ली वाला हाल ना हो जाए, सोचा याद दिला दूँ।' यह फेसबुक पर टिप्पणी है। एक दूसरा युवा उसको लाइक करता है और लिखता है, 'हाँ इलाज जरूरी है'। तब हमारे लिए ऐसे वक्त में अल्ताफ हुसैन हाली, शेख फरीद, गरीबदास और बाबू बालमुकुन्द जैसे रचनाकार अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं।

थोड़ी-सी बात मैं कुछ अलग ढंग से करना चाहता हूँ कि एक बार हमारे विभाग में किसी मित्र के साथ कोई सज्जन आए थे, काफी देर बाद जब हमने पूछा उनसे कि आप कहाँ से हैं तो उस मित्र ने बताया कि मैं तरौनी से हूँ, और तरौनी आप जानते होंगे कि हिंदी के एक प्रतिष्ठित रचनाकार हैं बाबा नागार्जुन, उनका गाँव है। मैंने उनको यह कहा कि मैं आपको छू रहा हूँ इसलिए कि मुझे लगेगा कि मैं नागार्जुन को छू रहा हूँ। अचानक से उनके प्रति हमारा और सम्मान बढ़ गया। इसी में मैं एक दूसरी बात करता हूँ, मेरे गाँव के नजदीक एक दूसरा गाँव है उसका नाम है- दौंगड़ा अहीर । मैं इसको अंधविश्वास की दृष्टि से बिलकुल नहीं कह रहा हूँ, मेरा यहाँ दूसरा भाव है। वहां नजर का हाथ फेरा जाता है। मान लीजिए अगर किसी को नजर लग जाए तो उस पर एक परिवार विशेष हाथ फेरता है। लेकिन होता क्या है कि सब लोग वहां नहीं पहुंच पाते तो उस गाँव का कोई भी व्यक्ति वहां होता है तो सब यह मान लेते हैं कि यह व्यक्ति उसी गाँव का है, हाथ फिरवा लेते हैं, नजर कट जाएगी। बिलकुल इसी तरह से मैं बड़ी श्रद्धा से इस गाँव में खड़ा हूँ, बालमुकुन्द गुप्त के गाँव में...और आज गुप्त जी नहीं हैं लेकिन मैं देख रहा हूँ कि गुड़ियानी के लोग यहाँ मौजूद हैं, मैं उनमें गुप्त जी का अंश देखता हूँ, और उसी भाव से इस गाँव को और आप को नमन करता हूँ।

अब सवाल यह आता है कि गुप्त जी को हम क्यों याद करें? इसके पीछे हरियाणा की जो साहित्यिक छवि है वो आड़े आती है। मेरे साथी चले गए, मेरी इच्छा थी कि मैं अपनी बात उनके सामने कहूँ। बनारस से बहुत प्रिय साथी हैं मेरे; डॉ सिद्धार्थ शंकर राय। ऐसा लगता है जैसे हरियाणा और साहित्य, दो अलग-अलग चीजें हैं।। वो कई बार शिकायत के लहजे में कहते हैं कि हरियाणा में चीजों का मेल नहीं है और अगर मेल है भी तो वह बेमेल है जैसे; चाय के साथ लड्डू, इसमें चाय भी मीठी है और लड्डू भी मीठे हैं। ...तो हरियाणवी लोगों को इस तरह से देखा जाता है। साहित्य में हमारी यह दोयम छवि है। हरियाणा सन् 1966 में बना तो लम्बे समय तक पंजाब का हिस्सा होने के कारण भी हरियाणा को कई चीजों का लाभ नहीं मिला। आप देखेंगे कि ठीक ऐसे वक्त में जब हरियाणा जैसे प्रदेश को दोयम दृष्टि से देखा जाता है, हमें गुप्त जी जैसे रचनाकार

जब मिलते हैं तो उससे हमारा निश्चित रूप से सीना चौड़ा हो जाता है। मैं आपको ये बताना चाहता हूँ कि बड़े-बड़े आलोचकों के सामने वो अपनी बात बड़ी दबंगता से रखते रहे हैं। जैसे आप महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का प्रसंग देखिए, जिसमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तक द्विवेदी जी के पक्ष में खड़े हो जाते हैं। उसमें से एक छोटा सा अंश मैं आपको यह पढ़ कर सुनाता हूँ;

(भाषा देखिए, और यह तब है जब द्विवेदी जी बालमुकुंद गुप्त जी के सम्पादन में छपते हैं और कई बार छपते हैं। आचार्य शुक्ल किस तरह से एक व्यक्ति को कमतर करने की कोशिश करते हैं)

'वे अपने समय के सबसे अनुभवी और कुशल सम्पादक थे। ये बहुत ही चलते पुर्जे और विनोदशील लेखक थे अतः कभी-कभी छेड़छाड़ भी कर बैठते थे। पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जब 'सरस्वती' (भाग 6, संख्या 11) के अपने प्रसिद्ध 'भाषा और व्याकरण शीर्षक लेख में 'अनस्थिरता' शब्द का प्रयोग कर दिया तब इन्हें छेड़छाड़ का मौका मिल गया और इन्होंने 'आत्माराम' के नाम से द्विवेदी जी के कुछ प्रयोगों की आलोचना करते हुए लेखमाला निकाली जिसमें चुहलबाजी का पुट पूरा था। द्विवेदीजी ऐसे गंभीर प्रकृति के व्यक्ति को भी युक्तिपूर्ण उत्तर के अतिरिक्त इनकी विनोदपूर्ण विगर्हणा के लिए 'सरगौ नरक ठेकाना नाहिं' शीर्षक देकर बहुत फबता हुआ आल्हा 'कल्लू अल्हइत' के नाम से लिखना पड़ा।'

जब वो आत्माराम के नाम से लिखते हैं तो ये कहते हैं कि ये दूसरे नामों से लिखते हैं, वही चीज जब द्विवेदी जी करते हैं तो कहते हैं कि 'इनको लिखना पड़ा'। 'हिंदी साहित्य का इतिहास'... हिंदी साहित्य की बड़ी प्रसिद्ध पुस्तक है, उसमें यह लिखा है। आलोचकों की उपेक्षा के बावजूद मुझे लगता है कि आज के समय में गुप्त जी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। स्कूली शिक्षा आज कितनी बोझिल हो गई है, जिस तरह से निजीकरण हुआ है, लूट-खसौट, दिखावा... आदि के चलते शिक्षा एक व्यापार बन रही है। गुप्त जी हमेशा यह चाहते थे कि कैसे बच्चों को सरल भाषा में कुछ सिखाएं? इसमें उनकी एक बाल कविता का सन्दर्भ दिया जा सकता है :

(जब ऐकार और ओकार सिखाना हो तो या तो आप रटवा सकते हैं या जिला शिक्षा अधिकारी जी आप अध्यापकों को इन पंक्तियों का प्रयोग करने की सलाह दे सकते हैं, आप देखेंगे कि बच्चे इसे जल्दी याद करेंगे)

'एक हाथ में लाठी थामे एक में गिलास
बुढ़िया चली दही लेने को मिल गया कैलाश
ऐसी चलती ओ री बुढ़िया बोल उठा कैलाश
बिना दांत के दही खाएगी जा रे सत्यानाश
बुढ़िया बोली चिढ़कर लड़का कैसा है गंवार
दही खाने में है क्या दांतों की दरकार'

इसको पढ़कर मैं समझता हूँ कि बच्चों को तुरंत मात्राओं के भेद की जानकारी होगी। ऐसे समय में जब हमारी शिक्षा प्रणाली इस हालात में है तो गुप्त जी प्रासंगिक होते हैं।

ऐसे समय में जब किसान कतार की कतार में मर रहें हो तब भी गुप्त जी याद आते हैं। जब आप उनकी कुछ कविताएँ पढ़ते हैं कि

'जरत अन्न बिन पेट, देह बिन वस्त्र उघारी
भूख प्यास सो व्याकुल है रोवत नर नारी।'

यह आज का प्रसंग है कि देश की मीडिया दलाली के दलदल में धंसी हुई है। बालमुकुन्द गुप्त जी अपने समाचार-पत्र में कितनी दबंगता से लिखते हैं, देखिए किताब छपवाना और उसको अपने घर में रखना और यह भी सुनिश्चित नहीं करना कि वह कहीं पहुँच भी रही है या नहीं अलग बात है, लेकिन जो अखबार जनता के पास पहुँचता है, जो अख़बार सत्ता के पास पहुँचता है उसमें लगातार लिखना और बिलकुल उस सत्ता के खिलाफ लिखना, एक बहुत बड़े साहस का काम है जोकि गुप्त जी करते हैं। आप देखिए उनका एक कथन है जो 'देस हरियाणा' के बालमुकुन्द गुप्त विशेषांक के पिछले पृष्ठ पर है;

''वर्तमान युग को सिडिसन का युग कहना चाहिए अथवा उनके सिर पर इस समय सिडिसन की तलवार बनी हुई है, कब किस पर वार हो जाए सो भगवान ही जाने।'' आप आज के समय में इन पंक्तियों को अप्रासंगिक नहीं कर सकते।

जब सत्ता के सामने लोग अपनी दुम हिलाते हैं, ऐसे वक्त में गुप्त जी सत्ता के साथ दो-दो हाथ करते हैं और आप यह याद रखिए कि वह गुलाम भारत था और उस गुलाम भारत में किस तरह से वो अपनी बात रखते हैं। वो

'सत्ता वचनम्' की जगह 'सत्य वचनम्' कहना ज्यादा पसंद करते हैं। इसके कितने भी उदाहरण दिए जा सकते हैं। आप 'शिव शम्भू के चिट्ठे' पढ़ सकते हैं और महसूस कर सकते हैं कि वह आदमी किस तरह से अपनी बात कह रहा था और ऐसे वक्त में भी जब समाज सेवक, स्वयं सेवक बन रहे हैं, गुप्त जी याद आते हैं। समाज सेवकों को समाज की फ़िक्र नहीं रह गई है, वह सिर्फ अपनी बात कहते हैं। आप देखेंगे कि गुलाम भारत में गुप्त जी आम जनता की आवाज बनकर हमारे सामने आते हैं। वो अपनी बात कविता में, निबन्ध में, सम्पादकीय में किस तरह से उठाते हैं। वो एक ऐसे वकील की तरह हैं जो फीस भी नहीं लेते और काम फीस लेने वालों से काम भी ज्यादा करते हैं। एक ऐसी जनता का वकील होना, मैं यह समझता हूँ, उस वक्त में, एक बहुत बड़ी बात थी।

जिस वक्त आप अपने आस-पास को भूलना चाहते हैं, और आप क्षेत्रीय की बजाय राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तराष्ट्रीय होना चाहते हैं, उस समय हमें गुप्त जी की 'भैंस का स्वर्ग' जैसी कविता याद आती है। वह कैसे अपने आस-पास से जुड़े रहते हैं;

'भैंस के आगे बीन बजाई
भैंस खड़ी पगुराती है
कुछ-कुछ पूंछ उठाती है
और कुछ-कुछ कान हिलाती है।'

आप साहित्य में गुजर जाइए, लेकिन आपको इसके आलावा भैंस कहीं नहीं दिखेगी। इसलिए मैं यह मानता हूँ कि गुप्त जी का काम बड़ा है। अब जब हिंदी कई-कई रूपों में हमारे सामने है और हिंदी नहीं, एक तरह से वह हिंगलिश बन गई है तो ऐसे वक्त में भी गुप्त जी के भाषा चिन्तन में, उनकी भाषा की भूमिका में, अच्छी हिंदी पर आप उन्हें याद कर सकते हैं कि कैसे वो भाषा के रूप को लेकर किसी से भी भिड़ जाते हैं। मुझे यह लगता है कि गुप्त जी का मैं कौन-सा रूप याद करूँ, बी.एम. 'शाद' वाला जिसमें वो ग़ज़लें लिखते हैं, या रसिक लाल दत्त वाला जिसमें वो बाल कविताएं लिखते हैं, या शिव शम्भु वाला जिसमें वो चिट्ठे लिखते हैं (व्यंग्यात्मक निबन्ध हैं) या आत्माराम वाला जिसमें वो द्विवेदी जी से बात करते हैं। मुझे सबमें एक ही व्यक्ति दिखता है। वो है गुप्त जी जिन्होंने हमें गुप्त रहने से मना किया है।

पुस्तक-विमोचन

हरियाणा सृजन उत्सव के दूसरे दिन सुरेन्द्र पाल सिंह द्वारा लिखित दो पुस्तको 'बाइटिगोंग' और 'अंदेशा' का विमोचन किया गया। इस मौक़े पर जगदीश आर्य, सुरेन्द्रपाल सिंह, वीणा कुमारी, प्रसून लतांत, शशि सिंह, सुभाष चन्द्र, प्रो. कमलानंद झा, इन्द्रजीत, छात्र नेता सुमन गढ़वाल, गीता पाल, अंजू व विकास साल्याण मौजूद रहे। 'अंदेशा' पाकिस्तान के तरक़्क़ीपसन्द पंजाबी कवि साबिर अली साबिर की कविताओं का सुरेन्द्र पाल सिंह द्वारा हिन्दी में अनुवाद है। 'बाइटिगोंग' पुस्तक ऐतिहासिक, सामाजिक-सांस्कृतिक आलेखों का संग्रह है। जिसमें हरियाणा के लोक देवता गुग्गा-पीर, जहाज कोठी, पीर बुद्धु शाह, जाट-आरक्षण के दौरान हुई हिंसा पर आलेख व ऑस्ट्रेलिया व कनाडा के यात्रा वृतांत है।

गरीबदास के छुड़ानी धाम पहुँची हरियाणा सृजन यात्रा

बैरागी संन्यासी भडुवे, चूतड़ छार लगावें हैं ।
पांचों रांड पचीसों लरके, धुधुधार मचावें हैं ।।
कोथलियों में हाथ घसोरें , माला गुप्त फिरावें हैं ।
मन मणके का फेर न जानें, साहिब दर नहिं जावें हैं ।।
संन्यासी उदासी बाला, रूखड़िया कहलावें हैं ।
लाये घात मंजारी बैठी, बिल्ली मूसे खावे हैं ।
बग मीनी का ध्यान धरें, यम किंकर जान डरावे हैं ।
जैनी जन्म जूया ज्यों हारो । पांचों इंद्रिय कस कस मारो ।।
भस्म रमाये भुस भरें, भद्र मुण्ड कच कोल ।
गरीबदास ऐसे सजे, हाथों मुगदर गोल ।।
तिलक तिलंगी बैल ज्यों, सौ सौ शालिग्राम ।
गरीबदास चौकी बहुत, उस काशी के धाम ।।
ताल मजीरे बजत है, कूदे दागड़ दुम्म ।
गरीबदास खर पीठ है, नाक जिनों के सुम्म ।।

संत गरीबदास

जिला झज्जर के छुड़ानी गाँव स्थित कबीर परम्परा के संत व समाज सुधारक कवि गरीबदास जी के धाम में देस हरियाणा व सत्यशोधक फ़ाउंडेशन द्वारा आयोजित सृजन यात्रा 1 मार्च 2020 को पहुँची। देस हरियाणा के सम्पादक डॉ. सुभाष चन्द्र के नेतृत्व में प्रदेश भर के संस्कृतिकर्मियों एवं साहित्यकारों ने धाम में संत गरीबदास जी के वस्त्र, पगड़ी एवं बर्तन आदि प्राचीन धरोहर के दर्शन किए। धाम के महन्त श्री दयासागर जी के साथ भेंट की और गरीबदास जी के विचारों पर चर्चा की। महन्त दया सागर जी ने बताया कि संत गरीबदास जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक बुराइयों का विरोध किया, धार्मिक पाखंडों व अंधविश्वासों के खिलाफ कटाक्ष किए और साम्प्रदायिक सद्भाव व भाईचारे की पक्षधरता की। महंत दयासागर ने देस हरियाणा के संपादक डॉ. सुभाष चन्द्र व सृजन यात्रियों को पुस्तकें भेंट की।

चरणदास चोर और ईदगाह नाटकों ने जमाया रंग

✦ अरूण कुमार कैहरबा

देस हरियाणा व सत्यशोधक फाउंडेशन द्वारा आयोजित होने वाला वार्षिक हरियाणा सृजन उत्सव जहां अपने जनपक्षधर वैचारिक विमर्शों, कवि सम्मेलन, पुस्तक प्रदर्शनी व कला दीर्घा के लिए जाना जाता है, वहीं उत्सव में होन वाली सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ती हैं। चौथा हरियाणा सृजन उत्सव अपनी नाटक प्रस्तुतियों के लिए लंबे समय तक याद किया जाता रहेगा।

समारोह के पहले दिन सांस्कृतिक संध्या में प्रसिद्ध साहित्यकार विजयदान देथा की राजस्थानी लोक कथा पर आधारित जाने-माने रंगकर्मी हबीब तनवीर के छत्तीसगढ़ी बोली के नाटक- चरणदास चोर को रंगटोली के कलाकारों ने मंचित किया। हबीब तनवीर के नया थियेटर के मंचन, श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित फिल्म सहित नाटक का निर्देशन व मंचन अनेक टीमों ने किया है। लेकिन संगीत में पारंगत रंगकर्मी राजवीर राजू के निर्देशन में युवा कलाकारों ने सृजन उत्सव में इस नाटक का कमाल का मंचन किया। हास्य से भरपूर इस नाटक में शब्दों और अर्थों की अनेक परतें देखने को मिली। आमतौर पर नाटक व फिल्मों के मुख्य किरदार अच्छे काम करने वाले देखने को मिलते हैं। लेकिन इस दृष्टि से यह नाटक अलग तरह का है, जिसमें मुख्य अभिनेता चोर की भूमिका में है। अपनी फुर्ति व चोरी करने की कुशलताओं के साथ ही वह पुलिस से बचकर निकल भागने में पारंगत है। वह चोरी करके भाग रहा है, पुलिस उसके पीछे पड़ी है। चोर तो अपना काम चोरी कर रहा है, लेकिन जिस पुलिस की जिम्मेदारी अपराधियों पर अंकुश लगाने की होती है, उस पुलिस के सिपाही चोरी करते हैं। इसी अन्तर्विरोध से हास्य का सृजन होता है और इसी से दर्शक सोचने को मजबूर होते हैं। वह राजा के खजाने से पांच मोहरें चुराता है। लेकिन जिस खजाने की देखरेख व हिसाब-किताब का जिम्मा रानी के जिन कर्मियों पर है, वे भी मौके का फायदा उठाते हुए पांच मोहरें चुरा लेते हैं। ऐसे में चोर कौन है? साधु बाबा के साथ बातचीत में चरणदास चोर कहता है कि अधिकतर लोग छुप कर चोरी करते हैं और वह सरेआम चोरी करता है।

साधु बाबा से चरणदास सोने की थाली में खाना नहीं खाने, राजकुमारी से शादी नहीं करने, राजा नहीं बनने के साथ-साथ झूठ नहीं बोलने का संकल्प करता है, तो अपने संकल्पों व सिद्धांतों पर अटल रहता है, चाहे इसका परिणाम देकर ही क्यों ना भुगतना पड़े। लेकिन वह चोरी करने का अपना धंधा छोड़ने से साफ मना कर देता है। जो साधु उससे संकल्प ले रहा है, वह उसके चोरी के सामान में शामिल सोने की थाली पर ही ललचाया हुआ है। संयोग होता है कि चरणदास की सच्चाई, ईमानदारी व निडरता से प्रभावित होकर रानी उससे विवाह करना चाहती है। उसे राजा बनाना चाहती है। अपने गुरु को दिए वचनों पर अडिग होने के कारण वह ऐसा करने से मना कर देता है।

रानी उसे ऐसी किसी बात को नहीं बताने के लिए कहती है तो वह कहता है कि उसने सच बोलने भी वचन दिया है। इस पर गुस्साई रानी झूठ बोल कर सच्चे चरणदास को मारने का हुक्म देती है। चरणदास को सच्चाई की सजा मौत के रूप में मिलती है। इस तरह से नाटक मौजूदा हालात और सच के रास्ते की मुश्किलों पर सोचने को मजबूर करता है।

चरणदास चोर की भूमिका में चंद्रसेन, बाबा-लवप्रताप, रानी-सुलक्षणा, पुलिस वाला व मंत्री की भूमिका में यमन, साहुकार-प्रदीप, शराबी व सिपाही-विक्रांत, जुआरी व दूसरा सिपाही- होशियार सिंह, पुजारी-दीपक, मंगलु व मुनीम-आकाश और दासी की भूमिका में बानी ने शानदार मंचन किया। चन्द्रसेन, सुलक्षणा, यमन व लवप्रताप के अभिनय की जमकर तारीफ हुई।

संगीत नाटक की जान रहा। नाटक में परंपरागत धुनों, गीतों, वाद्यों का जमकर प्रयोग किया गया। मंच के नीचे निर्देशक राजवीर राजू ढ़ोलक, डफ़ सहित कई वाद्य यंत्रों की धुनों से जादू बिखेर रहे थे। राजू की जीवन साथी संजना संजू व नन्हीं बिटिया ओशीन के गायन व चमन चौहान का हारमोनियम वादन नाटक में जान फूंक रहे थे। नाटक के दौरान बीच-बीच में प्रबुद्ध दर्शकों की तालियां नाटक की कामयाबी में नए आयाम जोड़ रही थी। दर्शकों के चेहरे की प्रतिक्रियाएं नाटक की कामयाबी का प्रमाण थीं।

प्रेमचंद की कहानी ईदगाह का मंचन

सृजन उत्सव में दूसरा नाटक- ईदगाह खेला गया। हिन्दी-उर्दू साहित्य को कोरी कल्पना और चमत्कारों से निकाल कर जीवन के यथार्थ से जोड़ने वाले प्रेमचंद की कहानी पर आधारित नाटक का मंचन थियेटर आर्ट ग्रुप ने किया। ग्रुप के निर्देशक प्रवेश त्यागी ने नाटक का निर्देशन भी किया और नाटक के मुख्य किरदार हामिद की भूमिका में जबरदस्त अभिनय करके खूब वाहवाही लूटी। नाटक में सुमन नायडू, कविता, कमला, दीपक कश्यप, संदीप कटारिया, मनीष व राहुल ने भूमिकाएं निभाई। यह नाटक साहित्य और नाट्य के मिलन से उपजी ताकत को दर्शाने वाला था।

कहानी के रंगमंच की लंबी परंपरा है। प्रेमचंद की कहानियों का विभिन्न नाट्य मंचों ने रंगमंच तैयार किया और खेला है। कहानी के रंगमंच के जरिये कलाकार साहित्य को जन-जन तक ले जाने की कोशिश करते हैं। प्रेमचंद की कहानी ईदगाह एक बच्चे की संवेदनशीलता व सूझबूझ को उजागर करती है। यह बच्चों की दुनिया को हमारे सामने रखती है। बच्चों में मेला देखने, खिलौने खरीदने और चटपटी चीजें खाने की स्पर्धा होती है। लेकिन कहानी में बे मां-बाप का हामिद अपनी दादी से नाममात्र के पैसे लेकर घर से चलता है। हर तरह के मोह को तिलांजलि देता हुआ अपने पैसों का सदुपयोग करते हुए दादी के लिए चिमटा खरीदता है, क्योंकि वह हर रोज देखता है कि उसकी बुजुर्ग दादी का हाथ खाना बनाते हुए जल जाता है। अद्भुत प्रस्तुति से उसकी यह जरा सी लगने वाली चीज बाकी बच्चों द्वारा खरीदे गए खिलौनों पर भारी पड़ती है। रंगमंच की शुरुआत कलाकारों द्वारा साम्प्रदायिक सौहार्द्र पर गाए गए गीत की इन पंक्तियों से होती है-

चाहे बने कहीं मंदिर, मस्जिद, चाहे बने गुरुद्वारा
अपनी तो इतनी मांग है केवल बना रहे भाईचारा।

आज समाज में साम्प्रदायिकता का जहर घोल कर कुछ लोग अपनी राजनीति को ऊंचाईयों पर पहुंचाने में लगे हुए हैं। बदलते परिवेश में जब बच्चों में नए तरह की मारकाट की संस्कृति घर करती जा रही है, ऐसे में यह नाटक मिलकर त्योहार मनाने, एक-दूसरे का सहयोग और बच्चों की संवेदनशीलता के जरिये समाज बदलने का संदेश दे गया। नाटक को देखकर दर्शकों की आंखें नम थी।

देस हरियाणा पत्रिका का विमोचन

चौथे हरियाणा सृजन उत्सव के उद्घाटन के अवसर पर 14 मार्च 2020 को देस हरियाणा पत्रिका के अंक-27 का विमोचन किया गया। इस अंक में गाँधी, अंबेडकर और भगत सिंह के विचारों पर केंद्रित सामग्री संकलित की गई है। इस मौक़े पर सेवानिवृत आई.ए.एस. डॉ.आर.आर.फुलिया, प्रसिद्ध कानूनविद् व राजनीतिक चिंतक कनक तिवारी, प्रो.जगमोहन सिंह, देस हरियाणा के सम्पादक प्रो.सुभाष चन्द्र, पूर्व सांसद गुरदयाल सिंह सैनी, सुरेन्द्रपाल सिंह, गुरनाम सिंह सैनी, सामाजिक चिंतक डॉ.टी.आर. कुंडू, कृष्ण बैनीवाल, देस हरियाणा पत्रिका की प्रबंधक विपुला, डॉ.राजवीर पाराशर, जनसत्ता के पूर्व सम्पादक प्रसून लतांत, अरुण कैहरबा, गीता पाल और टीम देस हरियाणा के सभी सदस्य मौजूद थे। देस हरियाणा अंक -27 संविधान के वास्ते गांधी, अम्बेडकर और भगत सिंह के रास्ते विषय पर केन्द्रित रहा।

देस हरियाणा प्राप्त करने के लिए संपर्क करें

कुरुक्षेत्र	-	विकास साल्याण	9991878352
	-	योगेश शर्मा	9896957994
यमुनानगर	-	बी मदन मोहन	9416226930
अंबाला शहर	-	जयपाल	9466610508
करनाल	-	अरुण कैहरबा	9466220145
इंद्री	-	दयालचंद जास्ट	9466220146
घरौंडा	-	राधेश्याम भारतीय	9315382236
	-	नरेश सैनी	9896207547
जीन्द	-	मंगतराम शास्त्री	9516513872
टोहाना	-	बलवान सिंह	9466480812
नरवाना	-	सुरेश कुमार	9416232339
सोनीपत	-	विरेंद्र वीरू	9467668743
पानीपत	-	दीपचंद निर्मोही	9813632105
पंचकुला	-	सुरेंद्र पाल सिंह	9872890401
	-	जगदीश चन्द्र	9316120057
रोहतक	-	अविनाश सैनी	9416233992
	-	अमन वासिष्ठ	9729482329
भिवानी	-	का. ओमप्रकाश	9992702563
दादरी	-	नवरत्न पांडेय	9896224471
सिरसा	-	परमानंद शास्त्री	9416921622
	-	राजेश कासनिया	9468183394
हिसार	-	राजकुमार जांगड़ा	9416509374
महेन्द्रगढ़	-	अमित मनोज	9416907290
मेवात	-	नफीस अहमद	7082290222
शिमला	-	एस आर हरनोट	01772625092
राजस्थान (परलीका)	-	विनोद स्वामी	8949012494
चंडीगढ़	-	ब्रजपाल	9996460447
	-	पंजाब बुक सेंटर, सैक्टर 22	
दिल्ली	-	संजना तिवारी , नजदीक श्रीराम सेंटर,	
	-	आर.के. मैगजीन , मौरिस नगर, थाने के सामने	
	-	एनएसडी बुक शॉप	
ई-प्राप्ति	-	www।notnul।com/desharyana	